Rajasthāna Purātana Granthamālā
Published by the Government of Rajasthan
A series devoted to the Publication of Sanskrit, Prakrit, Apabhramsha, Old Rajasthani-Gujarati and Old Hindi works pertaining to India in general and Rajasthan in particular



GENERAL EDITOR
Acharya JINA VIJAYA MUNI, Puratattvacharya
Honorary Director, Rajasthan Oriental Research Institute.
(Honorary Member of the German Oriental Society (Germany); Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona; Gujarat Sahitya Sabha, Ahmedabad; and Vishveshvaranand Vaidic Research Institute, Hosiyarpur, Punjab.)



No. 45

VASTURATNAKOŚA

(A short samskrit treatise containing one hundred and one topics of the general culture).



EDITED BY
Prof. Dr. PRIYA BALA SHAH
M. A., Ph. D. (Bombay), D. Litt. (Paris)
(Head of the Department of Ancient Indian Culture, Ramanand Arts College, Ahmedabad)



PUBLISHED BY
THE DIRECTOR
RAJASTHAN ORIENTAL RESEARCH INSTITUTE
JODHPUR (RAJASTHAN)

वस्तुरत्नकोश

(नानावस्तुप्रतिपादक - एकोत्तरशतसंख्यासमुच्चयात्मक)

बहुसंख्यक-प्राचीन-आदर्शोपलब्ध-विविधपाठभेदादिसमन्वित
शब्दानुक्रमादियुक्त प्रथमबार प्रकाशित ।

*

सम्पादिका
डॉ॰ प्रियबाला शाह
एम्. ए. पीएच्. डी. (बम्बई), डि. लिट्. (पेरिस)
(प्राध्यापिका, रामानन्द आर्ट्स कॉलेज, अहमदाबाद)

*

प्रकाशक
राजस्थान-राज्याज्ञानुसार
संचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान
(Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur)
जोधपुर (राजस्थान)

*

— प्रथमावृत्ति —

– प्रकाशक –
संचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर के आदेशानुसार, गोपाल नारायण बोहरा.

– मुद्रक –
लक्ष्मीबाई नारायण चौधरी, निर्णयसागर प्रेस, २६-२८, कोलभाट स्ट्रीट, बम्बई, नं. २.

CONTENTS.

प्रधान संपादकीय किंचित् प्रास्ताविक

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला के ४५ वें अंकके रूपमें प्रस्तुत, वस्तुरत्नकोश की एक प्राचीन प्रति, हमको जेसलमेरके जैन ग्रन्थ भंडारोंका अवलोकन करते समय, सन् १९४२ में, दृष्टिगोचर हुई। उस प्रतिका केवल अन्तिम पत्र नहीं मिला था, जिसमें शायद लेखकके समय आदिका निर्देश किया गया होगा। बाकी कृतिका ग्रन्थपाठ प्रायः पूर्ण था। ग्रन्थका विषय उपयोगी और नूतन माल्म दिया, इस लिये हमने उसकी प्रतिलिपि करवा ली। बादमें, जब राजस्थान पुरातत्त्व मन्दिर (अब नूतन नाम 'प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान') के लिये, राजस्थानमें प्राप्त प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थोंका संग्रह कार्य हमारे निर्देशनमें आरंभ हुआ, तो उसमें दो-तीन और हस्तलिखित पुरानी प्रतियां इसकी संग्रहीत हो गई।

यह रचना अभी तक कहीं प्रकाशित नहीं ज्ञात हुई और विषयकी दृष्टिसे विद्वानोंके लिये एक विशेष अभ्यसनीय रचना माल्म दी, अतः हमने, राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला द्वारा, इसका प्रकाशन करना निश्चित किया; और ऐसे ग्रन्थों के संपादन कार्यमें पूर्ण उत्साह और प्रावीण्य रखने वाली विदुषी कुमारी डॉ. प्रियबाला शाहाको इसका संपादान कार्य दिया गया।

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठानके संग्रहके अतिरिक्त, अहमदावादकी गुजरात विद्या सभाके संग्रहमें तथा डभोईके मुक्ताबाई जैन ग्रन्थ संग्रहमें भी, इसकी प्राचीन प्रतियां उपलब्ध हुईं। इस तरह ७ प्राचीन प्रतियोंके आधार पर, संपादिका विदुषीने बहुत परिश्रम करके इसका उत्तम संपादन किया है जो तज्ञ विद्वानोंको प्रस्तुत ग्रन्थ दृष्टिगोचर होते ही ज्ञात हो सकेगा।

ग्रन्थगत वस्तु नामसे ही ज्ञात होती है। साहित्यकारों, कथाकारों, प्रवचनकारों और उपदेशकोंको वारंवार उपयोगमें आने लायक ऐसे सौ विषयोंके भेदोपभेद और नामावलिका समुचित संग्रह इसमें किया गया है। इस तरह वस्तुविज्ञानका यह एक संक्षिप्त कोश ही है अतः रचनाकारने इसका नाम वस्तुरत्नकोश ऐसा उचित नाम दिया ज्ञात होता है। पर संक्षेपमें इसका नाम रत्नकोश भी बहुतसी प्रतियोंमें लिखा हुआ मिलता है।

इसका मुद्रणकार्य पूरा हो जाने पर, बादमें हमें पाटणके भंडारोंमें भी इसकी कुछ प्राचीन प्रतियां देखनेमें आईं जिनमें दो प्रतियां उल्लेखनीय हैं।

(१) तपागच्छवाले पाटणके भंडारमें एक ७ पत्रोंकी प्रति है जिसका अन्तिम पुष्पिकारूप लेख निम्न प्रकार है–

"संवत् १५१५ वर्षे कार्तिके श्रीचित्रकूटे व्यलेखि। शुभं भूयात्॥"

(२) दूसरी प्रति भी इसी भंडारमें सुरक्षित है जिसके १२ पत्रे हैं और निम्न प्रकार पुष्पिकालेख है–

"इति श्रीवस्तुविचाररत्नकोशसूत्रशतवस्तुविवरणं समाप्तं॥
संवत् १५९६ वर्षे मार्गशीर्षवदि ७ कुजे लेखि ब्रह्मदासकेन॥"

इन पुष्पिकालेखोंसे ज्ञात होता है कि यह रचना ५००–६०० वर्ष जितनी प्राचीन तो अवश्य है ही; और इसके जो अनेकानेक पाठभेद मिलते हैं उनसे ज्ञात होता है कि अभ्यासियोंमें इसके पठन-पाठनका प्रचार भी बहुत ही रहा है।

इसका रचयिता कौन है यह निश्चित रूपसे तो नहीं कहा जा सकता–पर केवल एक प्रतिमें, जैसा कि संपादिका विदुषीने अपने प्रास्ताविकमें सूचित किया है, कोई पृथ्वीधराचार्यका नाम लिखा मिलता है; सो अवश्य विचारणीय एवं विशेष अन्वेषणका विषय है। जबतक किसी कर्ताका निश्चय नहीं हो जाय तब तक हमने इसे **अज्ञात विद्वत्कृत** के विशेषणसे ही प्रसिद्ध करना उचित समझा है।

इसके साथ कुछ प्रतियोंके पत्रोंके ब्लाक बनवा कर उनके प्रतिचित्र भी दिये जा रहे हैं।

अन्तमें हम विदुषी संपादिका श्रीमती कुमारी डॉ. प्रियबाला शाहाके प्रति अपना आभार भाव प्रदर्शित करना चाहते हैं कि जिनने अत्यन्त परिश्रम पूर्वक इस रचनाका सुसंपादन कर, प्रस्तुत ग्रन्थमालाकी शोभावृद्धिके लिये सुन्दर पुष्प समर्पित किया।

प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर
माघ शुक्ला १४, संवत् २०१६
— ११. फरवरी. १९६० —

मुनि जिनविजय

'डी' संज्ञक प्रतिका प्रथम पत्र

'बी' संज्ञक प्रतिका प्रथम पत्र

VASTURATNAKOŚA

INTRODUCTION

I

Ratnakośa or Vasturatnakośa :-

Aufrecht in his Catalogus Catalogrum has several entries referring to Ratnakośa. In the entry on page 490 he describes a ms. thus-"Ratnakośa or Vastuvijñānaratnakośa-enumeration of things supposed to exist in a definite number, written by a Jain author." This description exactly applies to the contents of our work.

There are, however, at least three other kinds of Ratnakośas mentioned by Aufrecht from which this Ratnakośa is to be distinguished. One Ratnakośa is a work of Vaiśeṣika philosophy, another is a work on Advaita philosophy bearing the name Advaita-Ratnakośa and there is a third Ratnakośa which is a lexicon.

Ratnakośa literally means a treasure of jewels. In fact it is a short treatise on various subjects which a cultured man was supposed to know in the Indian society of old times. The larger variety of such works is represented by treatises like Yuktikalpataru of Bhoja, Caturvargacintāmaṇī of Hemādri and also Abhilaṣitārthacintāmaṇī of Someśvara. Bṛhatsaṃhitā of Varāhamihira though predominently an astronomical work also discusses many miscellaneous topics.

Our Ratnakośa consists of two parts. The first part consists of Sūtras containing the topics with their aggregate numbers, while the second, Vivaraṇa mentioning each item of the topics by name. The total number of Sūtras in different mss. varies from 100 to 104.

The subject-matter of these topics is mostly secular giving general knowledge about social and political matters. If we classify these according to the four Puruṣārthas, we would find that most of them fall under Artha and Kāma; while some are of a general literary nature. Thus, for example the following topics would come under Artha :-

त्रीणि भुवनानि, त्रिविधं लोकस्थानं, त्रिविधा भूमिः, सप्ताङ्गं राज्यं, षण्णवती राज्ञो गुणाः, षट्त्रिंशद् राजपात्राणि etc.

The following fall under Kāma :-

द्वाविंशतिः कामिनीनां विकारेङ्गितानि, अष्टौ नार्योऽगम्याः, दशभिः कारणैः स्त्रियो विरज्यन्ते, त्रिभिः कारणैः कामिन्यः संबध्यन्ते, सप्तविधाः कामुकानां सुरतारम्भाः, अष्टविधं विदग्धानां सुरतम्, नवविधं सुरतावसानम् etc.

Description of the manuscripts :-

The present text is based upon the following seven mss.; six of which are complete. All the seven are in a well preserved state. They are named A, B, C, D, E, F and G.

Ms. A

Source: Muni Jinavijayaji's collection, Rajasthan.
No. 57
Material: paper.
Folios: 4
Size: 10½ × 5½ inches
Number of lines: 19 lines per page.
Nnmber of letters: 50 to 53 per line.
Age: not mentioned; appears to be about three hundred years old.
Author: not mentioned.
Script: Devanāgarī.
Begins: ॐ नमो वीराय । अथातो वस्तुविज्ञानं रत्नकोशं व्याख्यास्यामः ।
सर्वशास्त्रमयं रम्यं सर्वज्ञानप्रकाशकम् । स्वल्पमेयं सुबोधार्थं रत्नकोशं समभ्यसेत् ॥ १ ॥
तत्र शतेन सूत्राणां संग्रहो यथा ॥ तत्रादौ त्रीणि भवनानि etc.
Ends: पंचविधं प्रभुत्वं कुलप्रभुत्वं ज्ञानप्रभुत्वं दानप्रभुत्वं स्थानप्रभुत्वं ॥ १०० ॥
Colophon: इति रत्नकोशसूत्रशतव्याख्यानं समाप्तम् ॥

Ms. B

Source: Śrī Muktābāi Jñānamandira, Dabhoi.
No: ?
Folios: 6
Material: paper.
Size: 10 × 4.25 inches.
Area of writing: 8 × 3 inches.
Number of lines: 15 to 16 lines.
Number of letters. 43 to 45 in each line.
Age: not mentioned; appears to be not later than 16th cent. A. D.
Author: not mentioned.
Script: Devanāgarī.
Begins: अथातो वस्तुविज्ञानं । रत्नकोशं । व्याख्यास्यामः ॥
सर्वशास्त्रमयं रम्यं सर्वज्ञानप्रकाशकम् ।
स्वल्पग्रंथं सुबोधार्थं रत्नकोशं समभ्यसेत् ॥
तत्र शतेन सूत्राणां संग्रहो यथा । तत्रादौ त्रीणि भुवनानि ॥ etc.

Ends: पञ्चविधं प्रभुत्वं । कुलप्रभुत्वं । दानप्रभुत्वं । स्थानप्रभुत्वं । उभयप्रभुत्वं ॥ १०० ॥

Colophon : इति रत्नकोशसूत्रशतव्याख्यानं समाप्तम् ॥ खोलाडाग्रामे । पं. धनसागर मुनिलिखितम् । वा. पुन्यमंडणगणिजोग्यं । श्रीः । श्रीरस्तुः । कल्याणमस्तु ।

Ms. C

Source: Gujarat Vidya Sabha, Ahmedabad.

No.: 2165

Material: paper.

Folios: 12

Size: 8 × 4.5 inches.

Area of writing: 6.5 × 3.75 inches.

Number of lines: 11 lines per page.

Number of letters: 31 to 33.

Age: Saṃvat 1755 (i. e. 1699 A. D.)

Author: Pṛthvidharācārya.

Script: Devanāgarī.

Begins: श्रीहरिः । सर्वज्ञानमयं रम्यं सर्वबुद्धिप्रकाशकम् ।
स्वल्पमंथं सुबोधाय रत्नकोशं समभ्यसेत् ॥
तत्रादौ त्रीणि भुवनानि । त्रिविधं लोकस्थानं ।···पंचविधं प्रभुत्वं ॥ १०० ॥
इत्यनुक्रमणिका ॥ गणराजं नमस्कृत्य गजतुण्डं सुरोत्तमम् ।
समस्तविघ्नहंतारं रत्नकोशं उदीर्यते ॥ १ ॥

Ends: अष्टौ लब्धयोग । अणिमा । महिमा । लघिमा । गरिमा । प्राप्ति । प्राकाम्यं । ईशत्वं । वशित्वं ।

Colophon: इति श्रीपृथवीधराचार्यकृत रत्नकोशः संपूर्णम् । शुभं भवतु । कल्याणमस्तु । संवत् १७५५ वर्षे फाल्गुनमासे शुक्लपक्षे लिखितं गिरिनारायणज्ञातीय भट्टबालकृष्णसुत भट्टरामकृष्णेन लिखितं । श्रीरस्तु । श्री । हरिर्जयति । श्री । श्री । श्री ।

Ms. D

Source: Muni Jinavijayaji's collection, Rajasthan.

No.: ?

Material: Kashmirian paper.

Folios: 3 (incomplete)

Size: 9.45 × 4.5 inches.

Number of lines: 21

Number of letters: 61

Age: not mentioned; appears to be not later than 15th cent. A. D.

Author: not mentioned.

Script: Devanāgarī.

Begins: अर्हं । त्रीणि भुवनानि । १ । त्रिविधं लोकस्थानं । २ । etc.

Ends: दशविधं बौद्धं । सगता । परिमिता । पारमिता । विहार । प्रमाण । सौत्रांतिकं । त्रिराशकं । योगोपचार । मोक्षपर्यंतं ॥ १० छ ॥ चतु

Ms. E

Source: Muni Jinavijayaji's Collection, Rajasthan.
No: १
Material: paper.
Folios: 9. 1 to 8a Ratnakośa; 8a to [illegible] Rāgotpatti.
Size: 10 × 4.5 inches.
Number of lines: 15 lines.
Number of letters: 38 to 40.
Age: not mentioned, appears to be about 150 years old.
Script: Devanāgarī.

Begins: श्री गुरुभ्यो नमः। रत्नकोशं व्याख्यास्यामः। य(व)स्तुविज्ञानं। सर्वशास्त्रमयं रम्यं सर्वज्ञानप्रकाशकं। स्वल्पग्रंथं सुबोधार्थं रत्नकोशं समभ्यसेत् ॥ १ ॥ तत्र शतेन सूत्राणां कर्तव्यः संग्रहो यथा ॥ २ ॥ अथ इति मंगलार्थे ॥ ग्रंथनु कर्ता श्रीवेदव्यास कहिछि etc.

Ends: लघिमा । इशत्व । वशित्व । प्राप्ति । प्रकाम्यमेव ।

Colophon: इति श्रीरत्नकोशः संपूर्णः ॥ श्रीरस्तुः । कल्याणमस्तुः ।

Ms. F

Source: Jesalmere Grantha Bhaṇḍāra, Jesalmere.
No.: 315
Material: paper.
Folios: [illegible]
Size: $9\frac{7}{8} \times 4\frac{1}{4}$ inches.
Number of lines. 14 lines.
Number of letters: 48 letters.
Age: Saṃvat 1709 (i. e. 1653 A. D.)
Author: not mentioned.
Script: Devanāgarī.

Begins: ॐ अर्हं नमः । अथ रत्नकोशो लिख्यते । सर्वशास्त्रमयं रम्यं सर्वज्ञानप्रकाशकम् । स्वल्पग्रन्थं सुबोधार्थं रत्नकोशं समभ्यसेत् । तत्र सर्वेन सूत्राणां कर्तव्यः संग्रहो यथा ॥ तत्रादौ त्रीणि भुवनानि । १ । त्रिविधं लोकस्थानम् । २ ।···etc.

Ends: ···वशित्वम् । प्राकाम्यम् । चेति ॥

Colophon: इति श्री रत्नकोश[ः] समाप्त[ः]
श्रीसंवत् १७०९ वर्षे वैशाषाऽसित षष्ठी दिने रेवतीभवे वारे श्री महेरानगरेऽलीलिखत् ।
श्रीस्तात् कल्याणं भूयात् ।
लेखकपाठकयोः वृद्धिरद्धिः सदैव श्रीस्तात् मांगल्यं महोच्छवं श्री शांतिजिनप्रसादात् ॥ श्री ॥

Ms. G

A copy prepared under the supervision of Muni Jinavijayaji from a ms. of Jesalmere Grantha Bhaṇḍāra, Jesalmere.

Begins: ॐ नमो वीतरागाय। अथातो वस्तुविज्ञानं रत्नकोशं व्याख्यास्यामः।
सर्वशास्त्रमयं रम्यं सर्वज्ञानप्रकाशकम्।
स्वल्पग्रन्थं सुबोधार्थं रत्नकोशं तमभ्यसेत्॥
शतं शतेन सूत्राणां सङ्ग्रहो यथा॥ तत्रादौ त्रीणि भुवनानि etc.

Ends: पञ्चविधं प्रभुत्वं। कुलप्रभुत्वम्। ज्ञानप्रभुत्वम्। दानप्रभुत्वम्। स्थानप्रभुत्वम्। उभयप्रभुत्वम्।

Colophon: इति रत्नकोशसूत्रशतव्याख्यानं समाप्तम्॥ छ॥

III

Method of editing:–

A comparative study of the seven mss. available to me showed that even though the main substance of the text is common it has considerable variations. So the possibility of discovering the original text became remote. Under the circumstances, I adopted the following procedure in presenting this text.

Of the seven mss. D seems to be the oldest, though incomplete, while A. B. G. seem to belong to one proto-type. I have taken D as the basis of the text upto sūtra 85 and for the remaining portion of the text I have taken ms. A, which is next in age. The readings of D and A, however, have not been adopted in the text where they were corrupt or unsatisfactory.

Variants of other mss. have been noted in the footnotes.

In presenting the Vivaraṇa, mss. A, B and G have been adopted as the basis, because they together yield, on the whole a satisfactory text. Where, however, the readings of other mss. seemed better, they have been given in the text.

As however, the different mss. give at several places different informations, I have thought it proper to give below the main text, the texts of other mss. in full. Thus the reader will have before him more or less complete texts of the Vivaraṇa of all the mss.

In appendix A, are given the additional Sūtras of ms. E as well as the old Gujarati 'Tabbo' contained in it. In appendix B similar matter gathered from some other works is given.

In the Index, I have included important variations from the texts of Vivaraṇa given in the footnote.

IV

Authorship and Age :—

Of the seven mss. only one, namely C mentions the name of the author as Pṛthvīdharācārya and one, namely E mentions Vedavyāsa as the author in its Gujarati 'Tabbo'. As we have seen above Aufrecht attributes the authorship of Ratnakośa to a Jain, though he does not mention the proper name. It appears that Aufrecht was led to regard this as a Jain work on account of the mention of अर्हं etc. at the beginning of his manuscript. We have seen that four, namely A, D, F, and G, of our seven mss. also begin in the Jain way. B starts directly with the text without any maṅgala, C starts with श्री हरि: and E with श्रीगुरुभ्यो नमः, while one ms. belonging to the Oriental Institute, Baroda, not used by me being very corrupt starts with श्री गणेशाय नमः. We cannot say definitely whether श्री गुरुभ्यो नमः can be taken as a Jain or Brahmanical way of beginning.

We, however, cannot draw any conclusion about the author being a Jain or non-Jain from the way in which the mss. begin, because it depends upon the religion of the scribe or the patron who got the ms. copied.

The absence of reference to the name of the author in five mss. and mention of Vedavyāsa in one make us hesitate in attributing our Ratnakośa to Pṛthvīdharācārya on the authority of the ms. C. The only thing that we can do for the present is to accept him provisionally as the author of our work.

The acceptance of Pṛthvīdharācārya as the author of Ratnakośa, however, does not help us in fixing the age of the work. Aufrecht has mentioned several Pṛthvīdharācāryas[1]. We do not know which one wrote the Ratnakośa given in the ms. C.

Hemādri in his Caturvargacintāmaṇi quotes Ratnakośa, at least twice, once in the Vratakhaṇḍa and second time in the Pariśeṣakhaṇḍa as follows:

ताम्बूलमुखवासयोर्लक्षणमुक्तं **रत्नकोशे**—

महापिप्पलपत्राणि क्रमुकस्य फलानि च ।
शुक्तिक्षारेण संयुक्तं ताम्बूलमिति संज्ञितम् ॥

---

1 Aufrecht in addition to Ratnakośa has the following entries about the works of Pṛthvīdharācārya.—
(1) भुवनेश्वरीस्तोत्र, (2) लघुसप्तशतीस्तोत्र (3) सरस्वतीस्तोत्र, (4) कातन्त्रविस्तरविवरण, (5) the commentary on Mṛcchakaṭika. (6) Vaiśeṣika Ratnakośa and (7) भुवनेश्वर्यर्चनपद्धति.

श्वेतपत्रश्च पूर्णश्च क्रमुकस्य फलानि च ।
नारिकेलफलोपेतं मातुलुङ्गसमायुतम् ॥ Ad. 1 (page 242) Vratakhaṇḍa.

पुंनक्षत्राणि च रत्नकोशे दर्शितानि ।
हस्तो मूलं श्रवणः पुनर्वसुर्मृगशिरास्तथा पुष्यः ।
पुंसंज्ञितेषु कार्येष्वेतानि शुभानि धिष्ण्यानि ॥ (page 732) Pariśeṣakhaṇḍa.

Here it may be pointed out that from the nature of the topics, one can expect these verses in our Ratnakośa, but in fact we do not find them in any one of our mss. This implies that there may be other versions of the Ratnakośa which might have contained these verses. But as the verses mentioned by Hemādri do not occur in our text, his reference to Ratnakośa cannot help us to settle the date of our Ratnakośa.

So the only thing that we can say is that it is older than our oldest Ms. D which appears to belong to the 15th cent. A. D. The names mentioned in the 'Rājavaṃśas' vary so much that they cannot help us in settling the earlier limit of the age.

The work may be supposed to belong to an age later than the 10th cent. A. D.

* * * * * *

Before concluding, I must not omit to tender my most sincere thanks to the revered Āchārya Śrī Muni Jinavijayaji, the Honorary Director of Rajasthan Puratattva Mandir, Jaipur (now Jodhpur), for not only accepting this work for publication in Rajasthan Purātana Granthamālā but also for being kind enough to spare time to go over the greater portion of the text with me and make several important suggestions which have been mostly acted upon.

I take this opportunity of expressing my sincere thanks to my painstaking teacher in Ancient Indian Culture and guide in the preparation of my thesis for the Ph. D. degree, Prof. R. C. Parikh, Director, B. J. Institute, Gujarat Vidya Sabha, Ahmedabad, for giving much of his valuable time for discussing with me several problems connected with my research work and especially the preparation of the present text.

Ahmedabad,
12-4-1959.

PRIYABALA SHAH

वस्तुरत्नकोशः ।

अथातो वस्तुविज्ञानं रत्नकोशं व्याख्यास्यामः[1] ।

सर्वशास्त्रमयं[2] रम्यं सर्वज्ञानं[3]प्रकाशकम् ।
स्वल्पग्रन्थं सुबोधार्थं[4] रत्नकोशं समभ्यसेत्[5] ॥ १ ॥
तत्र शतेन[6] सूत्राणां कर्तव्यः [7]सङ्ग्रहो यथा ।

तत्रादौ—

१ त्रीणि[8] भुवनानि ।
२ त्रिविधं [9]लोकसंस्थानम् ।
३ त्रिविधा भूमिः ।
४ त्रिविधाः पुरुषाः ।
५ त्रयः पदार्थाः ।
६ चत्वारः पुरुषार्थाः[10] ।
७ षट्त्रिंशद् राजवंशाः[11] ।
८ सप्ताङ्गं[12] राज्यम् ।
९ षण्णवती [13]राजगुणाः ।
१० षट्त्रिंशद् राजपात्राणि ।
११ षट्त्रिंशद् राजविनोदाः ।
१२ अष्टादशविध[14]मास्थानम् ।
१३ चतस्रो राजविद्याः ।
१४ चतस्रो राजनीतयः ।

---

1 E puts अथ(व)स्तुविज्ञानं after व्याख्यास्यामः ।; CF drop from अथातो to स्यामः ।; D drops from अथातो to तत्रादौ ।. 2 C °ज्ञानमयं ।. 3 C सर्वबुद्धि° ।. 4 C सुबोधाय । 5 AB तमभ्यसेत् ।. 6 F सर्वेन ।. 7 ABD drop कर्तव्यः ।. 8 E त्रिभुव° । 9 CF लोकस्था ।. 10 ABD पुरुषाणामर्थाः ।. 11 E राजविनोदाः ।. 12 E °सागरा° ।. 13 F षट्त्रिंशद् राज्ञां गुणाः । ९ । षण्णवती राज्ञा गुणा । ३० ।. 14 AG विधं स्था° ।; C °विधमा (म)हास्थानम् ।; E धं आ ।.

१५ षट्त्रिंशदायुधानि ।

१६ सप्तविंशतिः शास्त्राणि ।

१७ द्विपञ्चाशत् तत्त्वानि ।

१८ द्विसप्ततिः कलाः[17] ।

१९ चतुरशीतिर्विज्ञानानि ।

२० चतुरशीतिर्देशाः ।

२१ द्वात्रिंशल्लक्षणस्थानानि[20] ।

२२ चतुर्विंशतिविधं ग्रहम् ।

२३ अष्टोत्तरशतं मङ्गलानि ।

२४ त्रिविधं दानम् ।

२५ पञ्चविधं यशः[22] ।

२६ सप्तविधा कीर्तिः ।

२७ नव रसाः[23] ।

२८ एकोनपञ्चाशद् भावाः ।

२९ चत्वारोऽभिनयाः ।

३० चतस्रो वृत्तयः ।

३१ चत्वारो महानायकाः ।

३२ चत्वारो नायकाः[26] ।

३३ द्वात्रिंशद्गुणयुतो नायकः ।

३४ त्रिविधा महानायिकाः[27] ।

३५ अष्टौ नायिकाः[28] ।

---

15 ABCEFG दण्डायुधानि ।. 16 DE °विंशा° ।; AG °विंश ।; G °सप्त° ।. 17 ABCD °तिक° ।; E °द्विसप्तकला° ।. 18 ABCD तिरि ।; E निशा ।. 19 ABCDE °तिर्दे° ।. 20 CF लक्षणानि । 21 ABG तम ।, D तारं शतं मंगलानां ।; E मंगलानां स्थानं ।. 22 °धय° ।. 23 C नव ईनय: । अष्टौ रसा ।, B writes नव upon अष्टौ ।; ADCG अष्टौ रसाः ।. 24 D °रो नायका ।. 25 B महाना ।; A puts here अष्टौ नायिका ।; G drops this sūtra ।. 26 A puts here त्रिविधं शौर्यम् ।, BD शद्गुणनायका ।, G °शद्गुणनायकाः ।; B °शद्गुणो नायक ।; G drops this sutra. 27 ABCDE write नायका for नायिकाः ।; A omits the sūtra त्रिविधा महानायिका ।. 28 G drops this sutra.

*३६ द्वात्रिंशन्नायिकानां गुणाः ।

३७ त्रिविधं सौख्यम्[28] ।

३८ चत्वारि [29]सौख्यकारणानि ।

३९ नवविधो गन्धोपयोगः ।

४० दशविधं[30] शौचम् ।

४१ द्विविधः[31] कामः ।

४२ दश[32] कामावस्थाः ।

४३ विंशती[33] रक्तस्त्रीणां लक्षणानि ।

४४ एकविंशतिर्[34]विरक्तस्त्रीणां लक्षणानि ।

४५ द्वाविंशतिः[35] कामिनीनां विकारेङ्गितानि ।

४६ चतुर्विंशतिरसतीनां लक्षणानि ।

४७ षोडश दुष्टस्त्रीणां लक्षणानि ।

४८ अष्टौ स्त्रीणामविश्वासकारणानि ।

४९ अष्टौ नार्योऽगम्याः ।

५० अष्टविधो मूर्खः ।

५१ चतुर्विंशतिविधं नागरिकवर्णनम् ।

५२ त्रिविधं रूपम् ।

५३ त्रिविधं स्वरूपम् ।

५४ द्वादशविधः प्रमदोपचारः ।

---

* G alone gives this sūtra but all the mss. give its Vivaraṇa. 28 E द्वात्रिंशद् नायकानां गुणाः । त्रिविधं सौख्यम् ।; F त्रिंशद्गुणयुता नायिकाः । त्रिविधं सौख्यम् ।. 29 D सौख्यस्य का° ।; E °ख्यकरणानि ।. 30 A द्विविधं ।. 31 A omits this sūtra. 32 BE दशविधः कामावस्थाः ।, F दशविधाः कामावस्थाः ।. 33 ABCDE °शतिरक्त° ।. 34 ABDE °शतिविर° ।; F drops the sūtra, AB put first our sūtra 46 and then give this sūtra as 43 35 ABCD शतिका ।; E drops the sūtra; F drops द्वा ।. 36 ABCD शतिअस° ।, E drops the sūtra. 37 ABG अपलक्षणानि । 38 ABG °मभिचारकाणि ।. 39 E चतुर्विंशतिलक्षणविधं ।. 40 ABG कलक्षणम् ।; C °वर्तनेनम् ।. 41 F drops the sūtra. 42 ABEG प्रमोदोपचार. ।; D प्रमादोपाचारः ।; F दशविधः प्रमोदविचारः ।.

५५ पञ्चविधः परिचयः ।

५६ दश पुरुषाः[44] स्त्रीणामनिष्टा भवन्ति ।

५७ दशभिः कारणैः स्त्रियो विरज्यन्ते ।[45]

५८ त्रिभिः[46] कारणैः[47] कामिन्यः[48] संबध्यन्ते ।

५९ सप्तविधाः[49] कामुकानां[50] सुरतारम्भाः[51] ।

६० अष्टविधं विदग्धानां[52] सुरतम्[53] ।

६१ नवविधं सुरतावसानम् ।

६२ नव शयनगुणाः ।

६३ दशविधः पार्थिवानां[54] प्रमोदः[55] ।

६४ चतुर्विधः प्रबोधः ।

६५ चतुर्विधा बुद्धिः ।

६६ अष्टौ बुद्धिगुणाः ।

६७ चतुर्विधं गान्धर्वम् ।

६८ त्रिविधं गीतम् ।

६९ षट्त्रिंशद् गीतगुणाः ।

७० चतुर्विधं वाद्यम् ।

७१ द्विविधं नृत्यम्[56] ।

७२ षोडशविधं काव्यम्[57] ।

७३ दशविधं[58] वक्तृत्वम्[59] ।†

७४ षड्विधं[60] भाषालक्षणम् ।

७५ पञ्चविधं पाण्डित्यम् ।

---

43 D पंचविंशतिविधः ।, F पंचविंशतिर्वि° । 44 C °नराः ।; F drops the sūtra. 45 F द्वादशभिः कारणैः स्त्रियोऽभिरज्यन्ते । 46 ABG दशभि ।. 47 E प्रकारैः ।. 48 D कामिनीनां ; E स्त्रिय° ।. 49 ABCEF विध । 50 CE कामिना ।. 51 ABCEF °रम्भः ।. 52 D सुरतावस्थानं विदग्धनां ।; E °दग्धाना ।; F अष्टविधो विदग्धानां सुरतारम्भः ।. 53 ABG नवविधाः ।. 54 A drops पार्थिवानां ।. 55 ABG प्रबोध. ।. 56 A नृत्तम् ।. 57 AG वादलक्षणं ।. 58 D द्वादश° ।; ABG विंशतिविधं ।, E षोडशविधं । 59 D वक्तित्वं ।; F वक्तव्यत्वं ।. † E has विंशतिविधं वक्तृत्वं between 73 and 74. 60 E षोडशविधं ।.

७६ [61]चतुर्विंशतिविधं वादलक्षणम्।
७७ [62]षड्विधं [63]दर्शनम्।
७८ [64]अष्टविधं माहेश्वरम्।
७९ दशविधं [65]ब्राह्मयम्।
८० चतुर्विधं साङ्ख्यम्।
८१ [66]सप्तविधं जैनम्।
८२ दशविधं बौद्धम्।
८३ चतुर्विधं चार्वाकम्।
८४ चतुर्विंशतिविधं [67]विचारकत्वम्।
८५ दशविधं गुरुत्वम्।
८६ [68]पञ्चविधं [69]चरितम्।
८७ पञ्चविधं [70]पार्थिवानां पालनम्।
८८ सप्तविधा प्राप्तिः।
८९ [71]चतुर्विंशतिविधं शौर्यम्।
९० [72]दशविधं बलम्।
९१ दशविधः सङ्ग्रहः।
९२ दशविधो जयः।
९३ पञ्चविधः परिच्छेदः।
९४ पञ्चविधं प्रभुत्वम्।
९५ सप्तविधमुत्तमत्वम्।
९६ नवविधा शक्तिः।
९७ सप्तविधा भुक्तिः।
९८ अष्टविधमभिमानलक्षणम्।

---

61 AG चतुर्विधं।; E °तिवाद°। 62 E षड्द°। 63 G दर्शनलक्षणम्।; E दर्शनानि। 64 F अष्टविधा माहेश्वरी। 65 D ब्राह्मण्यम्।; E ब्राह्मणम्। 66 E सप्तविंशतिविधं जैन्यम्। 67 ABG °धं चारकत्वं; F °धं वा लक्षणम्। 68 E चतुर्विधं। 69 AB चारित्रं। 70 AG drop पार्थिवानां, E पार्थिवत्वा। 71 G चतुर्विधं। 72 G सप्तविधं।

९९ चतुर्विधं वात्सल्यम्।

१०० पंचविधो महोत्सवः[73]।

१०१ अष्टौ लब्धियोगाः।*

†इति सूत्राणां शतमेकोत्तरम् ॥ १०१ ॥

*

॥ इति वस्तुसंख्यासंग्रहः समाख्यातः ॥

---

73 AB १०० [illegible]।; C १०० इत्यनुक्रमणिका।; D चेति १०० छ।; [illegible] १०० इति सूत्राणि समूहे समाख्यातः।; F १०२।. *B gives चतुर्विधा गतिश्च। after sūtra १८०. † From इति to ख्यातः is given only by B.

वस्तुरत्नकोश-विवरणम् ।

†अथातो वस्तुविवरणं समाख्यायते ।

*गणराजं नमस्कृत्य गजतुण्डं सुरोत्तमम् ।
समस्तविघ्नहन्तारं रत्नकोशमुदीर्यते ॥ १ ॥

यथा—

१. तत्रादौ त्रीणि भुवनानि कथ्यन्ते । तद् यथा—

१ सुरभुवनम् । २ नरभुवनम् । ३ नागभुवनम् । इति ।

२. त्रिविधं लोकसंस्थानम् ।

१ देवलोकसंस्थानम् । २ दानवलोकसंस्थानम् ।

३ मानवलोकसंस्थानम् । इति ।

---

२) A १ देवसंस्थानम् । २ मानवसंस्थानम् । ३ दानवसंस्थानम् ।
B १ देवसंस्थानम् । २ दानवसंस्थानम् । ३ मानवसंस्थानम् ।
C १ देवलोकस्थानम् । २ मनुष्यलोकस्थानम् । ३ दानवलोकस्थानम् ।
D १ दानवसंस्थानम् । २ मानवसंस्थानम् । ३ गंधर्वसंस्थानम् ।
E देवदानवमानवानां संस्थानम् ।
F १ देवस्थानं । २ दानवस्थानं । ३ मानवस्थानं चेति ।

---

३. त्रिविधा भूमिः ।

१ उन्नतप्रदेशा । २ निम्नप्रदेशा । ३ समप्रदेशा । इति ।

---

३) AG १ उन्नतप्रदेशः । २ निम्नप्रदेशः । ३ समप्रदेशः ।
E १ उच्चा । २ नीचा । ३ समा ।
F १ उन्नतप्रदेशा । २ नीचप्रदेशा । ३ समप्रदेशा ।

---

† अथातो...यथा is given only by B. *G alone gives this śloka after इत्यनुक्रमणिका ।. 1 BCE तत्र त्रीँ° । [illegible] G भवनानि । 3 ABCEFG omit कथ्यन्ते । 4 ABCEFG omit तद्यथा ।. 5 ABG मानव ।. 6 ABEG omit श्लोक ।. 7 CEF स्थानम् ।. [illegible] H omits श्लोक ।.

४. त्रिविधाः पुरुषाः ।

१ उत्तमाः । २ मध्यमाः । ३ अधमाः । इति ।

४) ABG १ उत्तम । २ मध्यम । ३ अधम ।
C १ उत्तम २ मध्यम ३ अधमाश्चेति ।
E १ उत्तमा । २ अधमा । ३ मध्यमा ।

५. त्रयः पदार्थाः ।

१ धातुपदार्थः । २ जीवपदार्थः । ३ मूलपदार्थः । इति ।

५) C धातुमूलजीवाश्चेति
E १ धातु । २ मूल । ३ जीवा ।
F १ मूलगतपदार्थाः । २ धातुगतपदार्थाः । ३ जीवगतपदार्थाः ।

६. चत्वारः पुरुषार्थाः ।

१ धर्मः । २ अर्थः । ३ कामः । ४ मोक्षः । इति ।

६) ABG १ धर्म । २ अर्थ । ३ काम । ४ मोक्ष ।
CF धर्मार्थः । काम मोक्षः ।
D १ धर्म । २ अर्थ । ३ काम । ४ मोक्षरूपाः ।

७. षट्त्रिंशद् राजवंशाः ।

१ सूर्यवंशः । २ सोमवंशः । ३ यादववंशः । ४ कदम्बवंशः । ५ परमारवंशः । ६ इक्ष्वाकुवंशः । ७ चाहुआणवंशः । ८ चौलुक्यवंशः । ९ मौरिकवंशः । १० शिलारवंशः । ११ सैन्धववंशः । १२ छिन्दकवंशः । १३ चापोत्कटवंशः । १४ प्रतीहारवंशः । १५ मुडुकवंशः । १६ राष्ट्रकूटवंशः । १७ शकटवंशः । १८ करटवंशः । १९ करटपालवंशः । २० चन्दिल्लवंशः । २१ गुहिलवंशः । २२ गुहिलपुत्रवंशः । २३ पोतिकपुत्रवंशः । २४ मंकाणकवंशः । २५ धान्यपालवंशः । २६ राजपालवंशः । २७ अनङ्गवंशः । २८ निकुम्भवंशः । २९ दधिकरवंशः । ३० कलचुरवंशः । ३१ कालमुखवंशः । ३२ दायिकवंशः । ३३ हूणवंशः । ३४ हरिणवंशः । ३५ डोडिवंशः । ३६ मारववंशः । इति ।

७) A १ ब्रह्मवंश। २ सूर्यवंश। ३ सोमवंश। ४ यादववंश। ५ कुडुम्बवंश। ६ परमारवंश। ७ इक्ष्वाकु। ८ वाह्लीक। ९ चौलुक्य। १० छन्दिक। ११ सिलार। १२ सैन्धव। १३ डार्भी। १४ चापोत्कट। १५ पडीहार। १६ लडुक। १७ राष्ट्रकूट। १८ शक। १९ करटपाल। २० कोटपाल। २१ चंदिल्ल। २२ गुहिल। २३ गुहिलपुत्र। २४ पौतिक। २५ मोरी। २६ मंकुयाण। २७ धान्यपाल। २८ राजपाल। २९ अनङ्ग। ३० निकुम्भ। ३१ दाडिम। ३२ कलिछुर। ३३ दधिमुख। ३४ हूण। ३५ हरितड। ३६ डोड। ३७ परमार।

७) B १ ब्रह्मवंश। २ सूर्यवंश। ३ सोमवंश। ४ यादववंश। ५ कदम्बवंश। ६ इक्ष्वाकु। ७ वाह्लीक। ८ चौलुक्य। ९ छन्दिक। १० सिलार। ११ सैन्धव। १२ डार्भी। १३ चापोत्कट। १४ पडीहार। १५ लडुक। १६ राष्ट्रकूट। १७ शक। १८ करटपाल। १९ कोटपाल। २० चन्दिल्ल। २१ गुहिल। २२ गुहिलपुत्र। २३ मौदिक। २४ मोरी। २५ मंकुयाण। २६ धान्यपाल। २७ राजपाल २८ अनङ्ग। २९ निकुम्भ। ३० दाडिम। ३१ कलिछुर। ३२ दधिमुख। ३३ हूण। ३४ हरितट। ३५ डोड। ३६ परमार।

७) C १ रवि। २ सोम। ३ यादव। ४ कदम्ब। ५ परमार। ६ इक्ष्वाकु। ७ चहुआण। ८ रोरीच। ९ सिलर। १० करण्ड। ११ चण्डिल। १२ गोहिल। १३ मकुआण। १४ पौलक। १५ राजपाल। १६ धानपाल। १७ देय। १८ निकुम्भ। १९ दधिकर। २० कोकिल। २१ तरुष्क। २२ दधिपक। २३ हूण। २४ हरिअड। २५ कोवोलिक। २६ कलाछुर। २७ हरित। २८ सेमट। २९ राठोऊड। ३० शोलंक। ३१ जोधिम। ३२ फलश्च।

७) E १ सूर्यवंश। २ सोमवंश। ३ यादव। ४ ईक्ष्वाकु। ५ कदंब। ६ परमार। ७ चौहाण। ८ चौलुक्य। ९ छिंदक। १० मोरी। ११ शेलार। १२ सैन्धव १३ चापोत्कट। १४ प्रतीहार। १५ लकुट। १६ कराट। १७ फाल। १८ पाल। १९ टाक। २० चंडेल। २१ राष्ट्रकूट। २२ शंकु। २३ फरंड। २४ गोहिलपुत्र। २५ गहिलुन। २६ पोतिक। २७ मुष्कायण। २८ मकूआंणा। २९ पोलक। ३० राजपालक। ३१ धनपालक। ३२ धान्यपाल। ३३ अनङ्ग। ३४ निकुम्भ। ३५ घिधिम। ३६ दधिकर। ३७ कोट। ३८ कोलाछुर। ३९ दधिपक। ४० सिंहिलक-जातिभेद। ४१ सोलंकी। ४२ दापिक। ४३ हूंण। ४४ हरिअड। ४५ डोड। ४६ डोडीआ। ४७ राष्ट्रकूट।-जातिभेद ४८ मारू राठुडा। ४९ माखवा। ५० पातिकर। ५१ शेलार। ५२ लुड्क। ५३ फराट। ५४ कोल। ५५ चिन्दिलु। ५६ मुष्कायण। ५७ डोडींआंकाश्चेति जातिभेदाः अनेककोटिशः॥ ३६॥

७) F १ सूर्यवंश। २ सोमवंश। ३ यादववंश। ४ कदम्बवंश। ५ चहुआण। ६ चौलिक्य। ७ छन्दिक। ८ सिलार। ९ सैन्धव। १० चाउडा। ११ पडिहार। १२ लुडक। १३ राठउड। १४ करटवाल। १५ चन्दिल। १६ गुहिल। १७ गउलोत्त। १८ पौमिक। १९ मोरी। २० मकूआणा। २१ अनंग। २२ राजपाल। २३ वारड। २४ दहीया। २५ डार्भी। २६ हरीयटा। २७ टाक। २८ मींश। २९ माया। ३० हूणा। ३१ निकुन्दम। ३२ कोल। ३३ दधिपक। ३४ डेडिया। ३५ सुरिमा। ३६ परमारवंशाश्चेति।

७) G १ ब्रह्मवंश। २ सूर्यवंश। ३ सोमवंश। ४ यादववंश। ५ कुटुम्बवंश। ६ परमारवंश। ७ इक्ष्वाकु। ८ वाह्लीक। ९ चौलुक्य। १० छन्दिक। ११ सिलार। १२ सैन्धव। १३ डाभी। १४ चापोत्कट। १५ पडिहार। १६ लडुक। १७ राष्ट्रकूट। १८ शक। १९ करटपाल। २० कोटपाल। २१ चंदिल्ल। २२ गुहिल। २३ गुहिलपुत्र। २४ पौतिक। २५ मोरी। २६ मंकुयाण। २७ धान्यपाल। २८ राजपाल। २९ अनङ्ग। ३० निकुम्भ। ३१ दाडिम। ३२ कलिच्छुर। ३३ दधिमुख। ३४ हूण। ३५ हरितड। ३६ डोड। ३७ परमार।

---

८. सप्ताङ्गं राज्यम्।

१ स्वामि। २ अमात्य। ३ जनपद। ४ भाण्डागार। ५ दुर्ग। ६ बल। ७ मित्राङ्ग। इति[2]।

---

८) G स्वामी। जनपद। अमात्य। कोश। दुर्ग। बल। सुहृदिति।
F स्वामी। अमात्य। दुर्ग। राष्ट्र। भण्डार। सैन्य। मित्राङ्गं चेति।

---

९. षण्णवती राजगुणाः।

१ वंशगुण। २ विद्यागुण। ३ विनयगुण। ४ विजयगुण। ५ विवेकगुण। ६ विचारगुण। ७ विस्तारगुण। ८ सदाचारगुण। ९ सत्यगुण। १० शौचगुण। ११ सन्मानगुण। १२ समाधानगुण। १३ सौख्यगुण। १४ सौजन्यगुण। १५ सौभाग्यगुण। १६ रूपगुण। १७ स्वरूपगुण। १८ संयोगगुण। १९ वियोगगुण। २० विभागगुण। २१ साङ्गत्यगुण। २२ संपूर्णत्वगुण। २३ सौम्यत्वगुण। २४ सकलत्वगुण। २५ सलज्जत्वगुण। २६ डसनत्वगुण। २७ प्रभुत्वगुण। २८ प्राञ्जलत्वगुण। २९ पावकत्वगुण। ३० पाण्डित्यगुण। ३१ प्रणयिमानत्वगुण। ३२ प्रामाणिकत्वगुण। ३३ शरणप्रदत्वगुण। ३४ प्रमोदगुण। ३५ प्रतापगुण। ३६ प्रारंभगुण। ३७ परिच्छेदगुण। ३८ संग्रहगुण। ३९ विग्रहगुण। ४० सदाग्रहगुण। ४१ निग्रहगुण। ४२ अनुग्रहगुण। ४३ तुष्टिगुण। ४४ पुष्टिगुण। ४५ प्रीतिगुण। ४६ प्रशंसागुण। ४७ प्रतिष्ठागुण। ४८ स्थैर्यगुण। ४९ धैर्यगुण। ५० शौर्यगुण। ५१ चातुर्यगुण। ५२ बुद्धिगुण। ५३ बलगुण। ५४ सामर्थ्यगुण। ५५ आक्षेपगुण। ५६ विरोधगुण। ५७ आदरगुण। ५८ दोषगुण। ५९ विशेषगुण। ६० विनोदगुण। ६१ वृद्धिगुण।

---

2 E चेति राज्याङ्गानि।

६२ सिद्धिगुण। ६३ कान्तिगुण। ६४ कीर्तिगुण। ६५ विस्फूर्तिगुण। ६६ व्युत्पत्तिगुण। ६७ वात्सल्यगुण। ६८ माङ्गल्यगुण। ६९ महोत्सवगुण। ७० मन्त्रगुण। ७१ रसिकत्वगुण। ७२ भावकत्वगुण। ७३ गुरुत्वगुण। ७४ स्मृतिगुण। ७५ शक्तिगुण। ७६ अशक्तिगुण। ७७ युक्तिगुण। ७८ अयुक्तिगुण। ७९ अनुक्रमगुण। ८० अभिमानगुण। ८१ दानगुण। ८२ मानगुण। ८३ कारुण्यगुण। ८४ दाक्षिण्यगुण। ८५ दर्शनगुण। ८६ श्रवणगुण। ८७ घ्राणगुण। ८८ रसनगुण। ८९ मर्यादागुण। ९० मदनगुण। ९१ उदारगुण। ९२ उत्साहगुण। ९३ हर्षगुण। ९४ क्रोधगुण। ९५ लोभगुण। ९६ उत्तमगुणश्चेति।

---

९) A १ विद्या। २ विनय। ३ विवेक। ४ विस्तार। ५ सदाचार। ६ सत्य। ७ शौच। ८ सन्मान। ९ संस्थान। १० समाधान। ११ सौख्य। १२ सौजन्य। १३ सौभाग्य। १४ रूपगुण। १५ स्वरूपगुण। १६ संयोग। १७ वियोग। १८ विभाग। १९ सांगत्य। २० संपूर्णत्व। २१ सोमत्व। २२ सकलत्व। २३ सलज्जत्व। २४ प्रसन्नत्व। २५ प्रभुत्व। २६ प्राञ्जलत्व। २७ पालकत्व। २८ पाण्डित्य। २९ प्रणयित्व। ३० प्रमाण। ३१ दारण। ३२ प्रमोद। ३३ प्रसाद। ३४ प्रताप। ३५ प्रारंभ। ३६ प्रभाव। ३७ परिछद्। ३८ संग्रह। ३९ सदाग्रह। ४० निग्रह। ४१ विग्रह। ४२ अनुग्रह। ४३ तुष्टि। ४४ पुष्टि। ४५ प्रीति। ४६ प्राप्ति। ४७ प्रशंसा। ४८ प्रतिष्ठा। ४९ प्रतिज्ञा। ५० स्थैर्य। ५१ धैर्य। ५२ शौर्य। ५३ चातुर्य। ५४ गांभीर्य। ५५ बुद्धि। ५६ बल। ५७ अध्यक्ष। ५८ विरोध। ५९ विषय। ६० विदोष। ६१ विनोद। ६२ वृद्धि। ६३ सिद्धि। ६४ कान्ति। ६५ कीर्त्ति। ६६ विस्फूर्ति। ६७ व्युत्पत्ति। ६८ वात्सल्य। ६९ माङ्गल्य। ७० महोत्सव। ७१ मन्त्र। ७२ रसिकत्व। ७३ भावकत्व। ७४ गुरुत्व। ७५ स्मृति। ७६ शक्ति। ७७ भुक्ति। ७८ युक्ति। ७९ आसक्ति। ८० अनुक्रम। ८१ अभिमान। ८२ दान। ८३ कारुण्य। ८४ दर्शन। ८५ स्पर्शन। ८६ रसन। ८७ श्रवण। ८८ घ्राण। ८९ मर्यादा। ९० मंडन। ९१ उदात्त। ९२ उदय। ९३ उत्साह। ९४ उत्तमगुणाः।

९) B १ विद्या। २ विनय। ३ विवेक। ४ विजय। ५ विस्तार। ६ सदाचार। ७ सत्य। ८ शौच। ९ सन्मान। १० संस्थान। ११ समाधान। १२ सौख्य। १३ सौजन्य। १४ सौभाग्य। १५ रूप। १६ स्वरूप। १७ संयोग। १८ वियोग। १९ विभाग। २० सांगत्य। २१ संपूर्णत्व। २२ सोमत्व। २३ सकलत्व। २४ सलज्जत्व। २५ प्रसन्नत्व। २६ प्रभुत्व। २७ प्राञ्जलित्व। २८ पालकत्व। २९ पाण्डित्य। ३० प्रणयित्व। ३१ प्रमाण। ३२ शरण। ३३ प्रमोद। ३४ प्रसाद। ३५ प्रताप। ३६ प्रारंभ। ३७ प्रभाव। ३८ परिछद। ३९ संग्रह। ४० सदाग्रह। ४१ निग्रह। ४२ विग्रह। ४३ अनुग्रह। ४४ तुष्टि। ४५ पुष्टि। ४६ मीति। ४७ प्राप्ति। ४८ प्रशंसा। ४९ प्रतिष्ठा। ५० प्रतिज्ञा। ५१ स्थैर्य। ५२ धैर्य। ५३ शौर्य।

५४ चातुर्य । ५५ गांभीर्य । ५६ बुद्धि । ५७ बल । ५८ अधीश । ५९ विरोध । ६० विषय । ६१ विशेष । ६२ विनोद । ६३ वृद्धि । ६४ सिद्धि । ६५ कान्ति । ६६ कीर्त्ति । ६७ विस्फूर्ति । ६८ व्युत्पत्ति । ६९ वात्सल्य । ७० महोत्सव । ७१ मन्त्र । ७२ रसिकत्व । ७३ भावकत्व । ७४ गुरुत्व । ७५ स्मृति । ७६ मुक्ति । ७७ युक्ति । ७८ आसक्ति । ७९ अनुक्रम । ८० अनुराग । ८१ अभिमान । ८२ दान । ८३ कारुण्य । ८४ दर्शन । ८५ स्पर्शन । ८६ रसन । ८७ श्रवण । ८८ घ्राण । ८९ मर्यादा । ९० मण्डन । ९१ उदात्त । ९२ उदय । ९३ उत्साह । ९४ उत्तमगुणाः ।

९) D १ वंश । २ विद्या । ३ विनय । ४ विजय । ५ विवेक । ६ विचार । ७ सदाचार । ८ विस्तार । ९ सत्य । १० शौच । ११ सन्मान । १२ समाधान । १३ संस्थान । १४ सौख्य । १५ सौजन्य । १६ सौभाग्य । १७ रूप । १८ स्वरूप । १९ संयोग । २० वियोग । २१ सांगत्य । २२ संपूर्णत्व । २३ सोमत्व । २४ सफलत्व । २५ प्रसन्नत्व । २६ प्रभुत्व । २७ प्राञ्जलत्व । २८ पालकत्व । २९ पाण्डित्य । ३० प्रणयित्व । ३१ प्रसरण । ३२ प्रमोद । ३३ प्रताप । ३४ प्रारंभ । ३५ प्रभाव । ३६ परिच्छद । ३७ संग्रह । ३८ विग्रह । ३९ अनुग्रह । ४० सदाग्रह । ४१ निग्रह । ४२ तुष्टि । ४३ पुष्टि । ४४ प्रीति । ४५ प्राप्ति । ४६ प्रशंसा । ४७ प्रतिष्ठा । ४८ प्रतिज्ञा । ४९ स्थैर्य । ५० धैर्य । ५१ शौर्य । ५२ गांभीर्य । ५३ चातुर्य । ५४ यशोवंत । ५५ सदोदित । ५६ सर्वंसह । ५७ धर्मचर । ५८ बुद्धि । ५९ बल । ६० अध्यक्ष । ६१ निरोध । ६२ विनोद । ६३ वृद्धि । ६४ सिद्धि । ६५ कान्ति । ६६ कीर्त्ति । ६७ विस्फूर्त्ति । ६८ व्युत्पत्ति । ६९ वात्सल्य । ७० माङ्गल्य । ७१ महोत्सव । ७२ मन्त्र । ७३ रसिकत्व । ७४ भावकत्व । ७५ गुरुत्व । ७६ स्मृति । ७७ शक्ति । ७८ भक्ति । ७९ युक्ति । ८० अनुराग । ८१ अनुक्रम । ८२ अभिमान । ८३ दान । ८४ कारुण्य । ८५ दाक्षिण्य । ८६ दर्शन । ८७ स्पर्शन । ८८ श्रवण । ८९ रसन । ९० घ्राण । ९१ मर्यादा । ९२ मण्डन । ९३ उदय । ९४ उदारता । ९५ उत्साह । ९६ उत्तमत्व । गुणाश्चेति ।

९) E १ वंश । २ विद्या । ३ विनय । ४ विजय । ५ विवेक । ६ विचार । ७ विस्तार । ८ सदाचार । ९ सत्य । १० शौच । ११ सन्मान । १२ संस्थान । १३ समाधान । १४ सौजन्य । १५ सौख्य । १६ सौभाग्य । १७ सावधान । १८ रूप । १९ स्वरूप । २० संयोग । २१ सांगत्य । २२ विभाग । २३ संपूर्णत्व । २४ स्वजनत्व । २५ प्रसन्नत्व । २६ प्रभुत्व । २७ प्राञ्जलत्व । २८ पालकत्व । २९ पाण्डित्य । ३० प्रणयित्व । ३१ प्रमाणत्व । ३२ शरण । ३३ प्रमोद । ३४ प्रताप । ३५ प्रारंभ । ३६ प्रभाव । ३७ परिच्छेद । ३८ संग्रह । ३९ निग्रह । ४० अनुग्रह । ४१ विग्रह । ४२ आग्रह । ४३ पुष्टि । ४४ तुष्टि । ४५ प्रीति । ४६ प्राप्ति । ४७ प्रशंसा । ४८ प्रतिष्ठा । ४९ स्थैर्य । ५० धैर्य । ५१ शौर्य । ५२ चातुर्य । ५३ गांभीर्य । ५४ बुद्धि । ५५ बल । ५६ आक्षेप । ५७ निरोध । ५८ विषय । ५९ विशेष्य । ६० विनोद । ६१ ऋद्धि । ६२ वृद्धि । ६३ सिद्धि । ६४ कान्ति । ६५ कीर्त्ति । ६६ विस्फूर्ति । ६७ वात्सल्य । ६८ माङ्गल्य । ६९ महोत्सव । ७० मन्त्र । ७१ रसिकत्व । ७२ गुरुत्व । ७३ भावुकत्व । ७४ स्मृति । ७५ शक्ति । ७६ भुक्ति । ७७ युक्ति । ७८ मुक्ति । ७९ अनुराग । ८० अनुवास । ८१ उपकृति । ८२ अभिमान । ८३ दान । ८४ करुणा । ८५ दाक्षिण्य । ८६ दर्शन । ८७ स्पर्शन । ८८ रसन । ८९ श्रवण । ९० श्रावण । ९१ मर्यादा । ९२ मंडण । ९३ घ्राण । ९४ उदय । ९५ ग्रहण । ९६ उदात्त । ९७ उत्साह । ९८ उत्तमत्व । गुणाश्चेति ।

९) F १ वंश । २ विद्या । ३ विजय । ४ विनय । ५ विवेक । ६ विचार । ७ विस्तार । ८ सदाचार । ९ सत्य । १० शौच । ११ सन्मान । १२ संस्थान । १३ समाधान । १४ सौख्य । १५ सौजन्य । १६ सौभाग्य । १७ रूप । १८ स्वरूप । १९ संयोग । २० विभाग । २१ संगति । २२ संपूर्ण । २३ सौमत्य । २४ सलज्जत्व । २५ सकलत्व । २६ प्रसन्नत्व । २७ प्राञ्जलत्व । २८ प्रागल्भ्य । २९ पालकत्व । ३० पाण्डित्य । ३१ प्रणयत्व । ३२ प्रणाम । ३३ प्रसरण । ३४ प्रमोद । ३५ प्रताप । ३६ प्रारंभ । ३७ प्रभाव । ३८ परिच्छेद । ३९ संग्रह । ४० सदाग्रह । ४१ आग्रह । ४२ निग्रह । ४३ विग्रह । ४४ तुष्टि । ४५ पुष्टि । ४६ प्रीति । ४७ प्राप्ति । ४८ प्रशंसा । ४९ प्रतिष्ठा । ५० प्रतिज्ञा । ५१ स्थैर्य । ५२ धैर्य । ५३ शौर्य । ५४ चातुर्य । ५५ गांभीर्य । ५६ बुद्धि । ५७ बल । ५८ अधिकांक्षा । ५९ निरोध । ६० विबोध । ६१ वेप । ६२ विशेष । ६३ विनोद । ६४ सिद्धि । ६५ कान्ति । ६६ कीर्त्ति । ६७ विस्फूर्ति । ६८ व्युत्पत्ति । ६९ वात्सल्य । ७० माङ्गल्य । ७१ महोत्सव । ७२ मन्त्र । ७३ रसिकत्व । ७४ पावकत्व । ७५ गुरुत्व । ७६ स्मृति । ७७ शक्ति । ७८ मुक्ति । ७९ युक्ति । ८० अशक्ति । ८१ अनुक्रम । ८२ अनुवश । ८३ अनुराग । ८४ अभिमान । ८५ वदान्य । ८६ कारुण्य । ८७ दाक्षिण्य । ८८ दर्शन । ८९ स्पर्शन । ९० रसन । ९१ श्रवण । ९२ ग्रहण । ९३ मर्यादा । ९४ मण्डन । ९५ उदय । ९६ उदात्त । ९७ उत्साह । ९८ उत्तमत्व । गुणाश्चेति ।

९) G १ विद्या । २ विनय । ३ विवेक । ४ विस्तार । ५ सदाचार । ६ सत्य । ७ शौच । ८ सन्मान । ९ संस्थान । १० समाधान । ११ सौख्य । १२ सौजन्य । १३ सौभाग्य । १४ रूपगुण । १५ स्वरूपगुण । १६ संयोग । १७ वियोग । १८ विभाग । १९ सांगत्य । २० संपूर्णत्व । २१ सोमत्व । २२ सकलत्व । २३ सलज्जत्व । २४ प्रसन्नत्व । २५ प्रभुत्व । २६ प्रांजलत्व । २७ पालकत्व । २८ पाण्डित्य । २९ प्रणयित्व । ३० प्रमाण । ३१ शरण । ३२ प्रमोद । ३३ प्रसाद । ३४ प्रताप । ३५ प्रारम्भ । ३६ प्रभाव । ३७ परिच्छन्द । ३८ संग्रह । ३९ सदाग्रह । ४० निग्रह । ४१ विग्रह । ४२ अनुग्रह । ४३ तुष्टि । ४४ पुष्टि । ४५ प्रीति । ४६ प्राप्ति । ४७ प्रशंसा । ४८ प्रतिष्ठा । ४९ प्रतिज्ञा । ५० स्थैर्य । ५१ धैर्य । ५२ शौर्य । ५३ चातुर्य । ५४ गांभीर्य । ५५ बुद्धि । ५६ बल । ५७ अध्यक्ष । ५८ विरोध । ५९ विषय । ६० विशेष । ६१ विनोद । ६२ वृद्धि । ६३ सिद्धि । ६४ कान्ति । ६५ कीर्त्ति । ६६ विस्फूर्त्ति । ६७ व्युत्पत्ति । ६८ वात्सल्य । ६९ माङ्गल्य । ७० महोत्सव । ७१ मन्त्र । ७२ रसिकत्व । ७३ भावकत्व । ७४ गुरुत्व । ७५ स्मृति । ७६ शक्ति । ७७ मुक्ति । ७८ युक्ति । ७९ आसक्ति । ८० अनुक्रम । ८१ अभिमान । ८२ दान । ८३ कारुण्य । ८४ दर्शन । ८५ स्पर्शन । ८६ रसन । ८७ श्रवण । ८८ घ्राण । ८९ मर्याद । ९० मण्डन । ९१ उदात्त । ९२ उदय । ९३ उत्साह । ९४ उत्तमगुणाः ।

---

१० षट्त्रिंशद् राजपात्राणि ।

१ धर्मपात्रं । २ अर्थपात्रं । ३ कामपात्रं । ४ विनोदपात्रं । ५ विद्यापात्रं । ६ विलासपात्रं । ७ विज्ञानपात्रं । ८ विचारपात्रं । ९ क्रीडापात्रं । १० हास्यपात्रं । ११ शृङ्गारपात्रं । १२ वीरपात्रं । १३ दर्शनपात्रं । १४ सत्पात्रं ।

१५ देवपात्रं । १६ राजपात्रं । १७ मानपात्रं । १८ मन्त्रिपात्रं । १९ संधिपात्रं । २० महत्तमपात्रं । २१ अमात्यपात्रं । २२ प्रधानपात्रं । २३ अध्यक्षपात्रं । २४ सेनापात्रं । २५ नागरपात्रं । २६ पूज्यपात्रं । २७ मान्यपात्रं । २८ पदस्थपात्रं । २९ देशीपात्रं । ३० राज्ञीपात्रं । ३१ कुलपुत्रिकापात्रं । ३२ पुनर्भूपात्रं । ३३ वेश्यापात्रं । ३४ प्रतिचारिकापात्रं । ३५ गुणपात्रं । ३६ दासीपात्रं । इति ।

---

१०) A १ धर्मपात्र । २ अर्थपात्र । ३ विनोदपात्र । ४ कामपात्र । ५ विलासपात्र । ६ विज्ञानपात्र । ७ क्रीडापात्र । ८ हास्यपात्र । ९ शृङ्गारपात्र । १० वीरपात्र । ११ देवपात्र । १२ दानवपात्र । १३ कर्मपात्र । १४ मंत्रिपात्र । १५ महत्तमपात्र । १६ अमात्यपात्र । १७ अध्यक्षपात्र । १८ सेनापालपात्र । १९ नागरपात्र । २० प्रधानपूजापात्र । २१ मान्यपात्र । २२ राजमान्यपात्र । २३ पदस्थपात्र । २४ देवीपात्र । २५ राज्ञीपात्र । २६ कुलपुत्रिकापात्र । २७ पुनर्भूपात्र । २८ देशीपात्र । २९ प्रतिसारकपात्र । ३० दासीपात्र । ३१ देशपात्र । ३२ गुणपात्राणि ।

१०) B १ धर्मपात्र । २ अर्थपात्र । ३ विनोदपात्र । ४ कामपात्र । ५ विलासपात्र ६ विद्यापात्र । ७ विज्ञानपात्र । ८ क्रीडापात्र । ९ हास्यपात्र । १० शृङ्गारपात्र । ११ वीरपात्र । १२ देवपात्र । १३ दानवपात्र । १४ कर्मपात्र । १५ मंत्रिपात्र । १६ संधिपात्र । १७ महत्तमपात्र । १८ अमात्यपात्र । १९ अध्यक्षपात्र । २० सेनापात्र । २१ सेनापालपात्र । २२ प्रधानपूजापात्र । २३ मान्यपात्र । २४ राजमान्यपात्र । २५ पदस्थपात्र । २६ देवीपात्र । २७ राज्ञीपात्र । २८ कुलपुत्रिकापात्र । २९ पुनर्भूपात्र । ३० वेश्यापात्र । ३१ प्रतिसारकापात्र । ३२ दासीपात्र । ३३ देशपात्र । ३४ गुणपात्राणि ।

१०) C १ धर्मपात्र । २ अर्थपात्र । ३ कामपात्र । ४ विनोदपात्र । ५ विद्यापात्र । ६ विलासपात्र । ७ विज्ञानपात्र । ८ ज्ञानपात्र । ९ क्रीडापात्र । १० हास्यपात्र । ११ शृङ्गारपात्र । १२ वीरपात्र । १३ स्नेहपात्र । १४ राजमानपात्र । १५ मंत्रिपात्र । १६ संधिपात्र । १७ महापात्र । १८ गंधपात्र । १९ अध्यक्षपात्र । २० सेनापात्र । २१ नागरपात्र । २२ पुष्पपात्र । २३ मान्यपात्र । २४ पदस्थपात्र । २५ कुतूहलपात्र । २६ सारिकापात्र । २७ सेवकपात्र । २८ श्रेष्ठपात्र ।

१०) E १ धर्मपात्र । २ अर्थपात्र । ३ कामपात्र । ४ विनोदपात्र । ५ विलासपात्र । ६ विशालपात्र । ७ विद्यापात्र । ८ विज्ञानपात्र । ९ क्रीडा । १० हास्य । ११ शृङ्गार । १२ वीर । १३ अभिनय । १४ देव । १५ दानव । १६ मानव । १७ श्रवण । १८ रथ । १९ कर्म । २० स्नेह । २१ मैत्री । २२ सिद्धिस्थान । २३ संधि । २४ महामात्य । २५ अमात्य । २६ प्रधान । २७ अध्यक्ष । २८ सेना । २९ नगर । ३० पूज्य । ३१ आगरी । ३२ मान्य । ३३ द्वारपदृश्य । ३४ राज्यमान्य । ३५ देवी । ३६ राज्ञी । ३७ कुलपुत्रिका । ३८ पुनर्भू । ३९ वेश्या । ४० अभिचारिका । ४१ दासी । ४२ दास । ४३ परिचारिका । ४४ देश । ४५ गुणपात्राणि । इति ।

१०) F १ धर्मपात्र। २ अर्थपात्र। ३ कामपात्र। ४ विनोदपात्र। ५ विद्यापात्र। ६ विशालपात्र। ७ ज्ञानपात्र। ८ विज्ञानपात्र। ९ क्रीडापात्र। १० हास्यपात्र। ११ शृङ्गारपात्र। १२ वीरपात्र। १३ स्नेहपात्र। १४ राजपात्र। १५ मान्यपात्र। १६ देवपात्र। १७ दानपात्र। १८ मानपात्र। १९ कर्मपात्र। २० मंत्रपात्र। २१ संधिपात्र। २२ अमात्यपात्र। २३ प्रधानपात्र। २४ अक्षरपात्र। २५ सेनापात्र। २६ नागरपात्र। २७ पुष्पपात्र। २८ पदच्छेदिपात्र। २९ राज्ञीपात्र। ३० पुनर्भूपात्र। ३१ वेश्यापात्र। ३२ दासीपात्र। ३३ पूज्यपात्र। ३४ अभिचारिकापात्राणीति।

१०) G १ धर्मपात्र। २ अर्थपात्र। ३ विनोदपात्र। ४ कामपात्र। ५ विलासपात्र। ६ विज्ञानपात्र। ७ क्रीडापात्र। ८ हास्यपात्र। ९ शृङ्गारपात्र। १० वीरपात्र। ११ देवपात्र। १२ दानवपात्र। १३ कर्मपात्र। १४ मंत्रिपात्र। १५ महत्तमपात्र। १६ अमात्यपात्र। १७ अध्यक्षपात्र। १८ सेनापालपात्र। १९ नागरपात्र। २० प्रधानपूजापात्र। २१ मान्यपात्र। २२ राजमान्य। २३ पदस्थपात्र। २४ देवीपात्र। २५ राज्ञीपात्र। २६ कुलपुत्रिकापात्र। २७ पुनर्भूपात्र। २८ वेसापात्र। २९ प्रतिसारकापात्र। ३० दासीपात्र। ३१ देशपात्र। ३२ गुणपात्राणि।

११. षट्त्रिंशद् राजविनोदाः।

१ दर्शनविनोदः। २ श्रवणविनोदः। ३ कृत्रिमविनोदः। ४ गीतविनोदः। ५ वाद्यविनोदः। ६ नृत्यविनोदः। ७ शुद्धलिखितविनोदः। ८ सख्यविनोदः। ९ वक्तृत्वविनोदः। १० कवित्वविनोदः। ११ शास्त्रविनोदः। १२ करविनोदः। १३ विबुध्यविनोदः। १४ अक्षरविनोदः। १५ गणितविनोदः। १६ शस्त्रविनोदः। १७ राजविनोदः। १८ तुरगविनोदः। १९ पक्षिविनोदः। २० आखेटकविनोदः। २१ जलविनोदः। २२ यंत्रविनोदः। २३ मंत्रविनोदः। २४ महोत्सवविनोदः। २५ फलविनोदः। २६ गणितविनोदः। २७ पठितविनोदः। २८ पत्रविनोदः। २९ पुष्पविनोदः। ३० कलाविनोदः। ३१ कथाविनोदः। ३२ केशविनोदः। ३३ प्रहेलिकाविनोदः। ३४ चित्रविनोदः। ३५ चलचित्रविनोदः। ३६ स्तवविनोदः। इति।

११) A १ दर्शन। २ श्रवण। ३ गीत। ४ नृत्य। ५ वाद्य। ६ नृत्तपाठ। ७ लेख्य। ८ वक्तृत्व। ९ कवित्ववाद। १० शास्त्र। ११ युद्ध। १२ नियुद्ध। १३ गणित। १४ गज। १५ तुरग। १६ पक्षि। १७ आखेटक। १८ द्यूत। १९ जल। २० यंत्र। २१ मंत्र। २२ महोत्सव। २३ पत्र। २४ फल। २५ पुष्प। २६ कला। २७ कथा। २८ प्रहेलिका। २९ पदार्थकरण। ३० तत्त्व। ३१ बल। ३२ चित्र। ३३ सूत्र।

११) B १ दर्शन। २ गीत। ३ नृत्य। ४ वृत्त। ५ पाठ। ६ लेख्य। ७ कवित्व। ८ शास्त्र। ९ युद्ध। १० विनोद। ११ नियुद्ध। १२ वार्जित्रविनोद। १३ गज। १४ तुरग। १५ पक्षि। १६ आखेटक। १७ द्यूत। १८ जल। १९ यंत्र। २० महोत्सव। २१ पत्र। २२ फल। २३ पुष्प। २४ कला। २५ कथा। २६ प्रहेलिका। २७ पदार्थकरण। २८ तत्त्व। २९ वल। ३० चित्र। ३१ सूत्रविनोद।

११) C १ गीत। २ वाद्य। ३ लिखित। ४ लेख्य। ५ वक्तव्य। ६ कवित्व। ७ शास्त्र। ८ युद्ध। ९ नियुद्ध। १० गज। ११ तुरग। १२ पक्षि। १३ आखेटक। १४ द्यूत। १५ जल। १६ यंत्र। १७ मंत्र। १८ महोत्सव। १९ फल। २० पुष्प। २१ चित्रगुण। २२ कथा। २३ प्रहेलिका। २४ सूत्रविनोदाश्चेति।

११) E १ दर्शनविनोद। २ श्रवण। ३ नृत्य। ४ गीत। ५ वाद्य। ६ नृत्य। ७ पाठ्य। ८ आख्यान। ९ वक्तव्य। १० लेख्य। ११ कवित्व। १२ वाद। १३ शास्त्र। १४ शस्त्रशास्त्र। १५ युद्धकार। १६ नियुद्धकार। १७ गणित। १८ गज। १९ तुरग। २० पक्षी। २१ आखेटक। २२ द्यूत। २३ जल। २४ यंत्र। २५ मंत्र। २६ महोत्सव। २७ पत्र। २८ पुष्प। २९ फल। ३० कला। ३१ कथा। ३२ प्रहेलिका। ३३ पदार्थ। ३४ तत्त्व। ३५ वल। ३६ चित्रसूत्र। इति विनोदाः।

११) F १ गीतविनोद। २ वाद्यविनोद। ३ दर्शनविनोद। ४ श्रवणविनोद। ५ नृत्यविनोद। ६ लिखित। ७ लेख्य। ८ वक्तृत्व। ९ कवित्व। १० वादिशास्त्र। ११ युद्ध। १२ नियुद्ध। १३ गणित। १४ गज। १५ तुरग। १६ पक्षि। १७ आखेटक। १८ द्यूत। १९ जलक्रीडा। २० यंत्र। २१ मंत्र। २२ महोत्सव। २३ पुष्प। २४ फल। २५ कला। २६ कथा। २७ प्रहेलिका। २८ पदार्थ। २९ तत्त्व। ३० वल। ३१ वित्त। ३२ सूत्र। ३३ खेलन। ३४ चित्रविनोदश्चेति।

११) G १ दर्शनविनोद। २ श्रवणविनोद। ३ गीतविनोद। ४ नृत्य। ५ वाद्य। ६ वृत्त। ७ पाठ। ८ लेख्य। ९ वक्तृत्व। १० कवित्व। ११ वादशास्त्र। १२ युद्धविनोद। १३ नियुद्ध। १४ गणित १५ गज। १६ तुरग १७ पक्षि। १८ आखेटक १९ द्यूत। २० जल। २१ यंत्र। २२ मंत्र। २३ महोत्सव। २४ पत्र। २५ फल। २६ पुष्प। २७ कला। २८ कथा। २९ प्रहेलिका। ३० पदार्थकरण। ३१ तत्त्व। ३२ वल। ३३ चित्र। ३४ सूत्रविनोद।

१२. अष्टादशविधमास्थानम्।

१ मल्ल। २ आप्त। ३ हित। ४ स्निग्ध। ५ मंत्रि। ६ महत्तम। ७ अमात्य। ८ बुद्धि। ९ सुख। १० उभयसुख। ११ आम्नायिक। १२ देशीपुरुष। १३ धर्मपुरुष। १४ धनपुरुष। १५ धान्यपुरुष। १६ काम्यपुरुष। १७ विज्ञानपुरुष। १८ राजपुरुष। इति।

११) AB १ मल्लस्थानं। २ आप्तस्थानं। ३ हितस्थानं। ४ स्निग्धस्थान। ५ मंत्रि। ६ महत्तम। ७ अमात्य। ८ बुद्धि। ९ सुख। १० अभयसुख। ११ आरामिक। १२ संग्रामिक। १३ आम्नायिक। १४ देशीपुरुष। १५ धर्मपुरुष। १६ धनपुरुष। १७ कामपुरुष। १८ राजपुरुष। विज्ञानविनोदपात्राणि च।

1 A G विधं स्थानं।

१२) C १ मल्ल। २ आप्त। ३ हित। ४ स्निग्ध। ५ महत्तम। ६ अमात्य। ७ प्राधान्य। ८ बुद्धिसुख। ९ विवाद। १० उभयसुख। ११ आम्नाइक। १२ संग्रामिक। १३ देशीय। १४ कामिक। १५ विज्ञान। १६ विचारिक। १७ संतोष। १८ प्रशंसा चेति।

१२) E १ मल्ल। २ आप्त। ३ हित। ४ स्निग्ध। ५ मंत्रि। ६ अमात्य। ७ महत्तम। ८ बुद्धि। ९ सुख। १० उभयसुख। ११ आम्नायिक। १२ संग्रामिक। १३ देशीपुरुष। १४ धर्मपुरुष। १५ धनपुरुष। १६ काम। १७ विज्ञान। १८ राज्य। १९ राजमान्य। २० विनोद। इति पात्र आस्थानम्।

१२) F १ मल्ल। २ आप्तहित। ३ स्निग्ध। ४ मंत्रि। ५ महत्तम। ६ अमात्य। ७ प्रधान। ८ शुद्धिसुख। ९ उद्यसुख। १० आम्नायिक। ११ सांग्रामिक। १२ देशीयपुरुष। १३ धर्मपुरुष। १४ अर्थपुरुष। १५ कामपुरुष। १६ ज्ञानपुरुष। १७ विज्ञानपुरुष। १८ राजपुरुषश्चेति।

१२) G १ मल्लस्थानं। २ आप्तस्थानं। ३ हितस्थानं। ४ स्निग्धस्थान। ५ मंत्रि। ६ महत्तम। ७ अमात्य। ८ शुद्धिसख। ९ अभयसख। १० आरामिक। ११ संग्रामिक। १२ आम्नायिक। १३ देशीपुरुष। १४ धर्मपुरुष। १५ धनपुरुष। १६ कामपुरुष। १७ राजपुरुष। १८ विज्ञानविनोदपात्राणि च।

*

१३. चतस्रो राजविद्याः।

१ आन्वीक्षिकी। २ त्रयी। ३ वार्त्ता। ४ दण्डनीतिश्चेति विद्याः।

1 G अथ चतस्रो राजविद्याम्।
१३) ABD आन्वीषिकी। E अन्वेषिकी। F आन्वेषिकी।

*

१४. चतस्रो राजनीतयः।

१ साम। २ दान। ३ भेद। ४ दण्ड। इति।

1 E चतस्र राजनीतयः।
१४) C सामदानविधिभेदनिग्रहश्चेति।
१४) D सामनीति उपप्रदाननीति भेदनीति दंडनीति।
१४) F साम दानं भेदः दण्डश्चेति।

*

१५. षट्त्रिंशद् आयुधानि।

१ चक्र। २ धनुः। ३ वज्र। ४ खड्ग। ५ क्षुरिका। ६ तोमर। ७ कुंत। ८ शूल। ९ त्रिशूल। १० शक्ति। ११ पाश। १२ अङ्कुश। १३ मुद्गर। १४ मक्षिका। १५ भल्ल। १६ भिंडमाल। १७ मुसुंठि।

1 A B E F G षट्त्रिंशाईदायुधानि।

१८ लुंठि। १९ गदा। २० शंख। २१ परशु। २२ पट्टिस। २३ रिष्टि। २४ कणय। २५ संपन्न। २६ हल। २७ मुशल। २८ पुलिका। २९ कर्तरि। ३० करपत्र। ३१ तरवारि। ३२ कोदाल। ३३ दुस्फोट। ३४ गोफण। ३५ डाह। ३६ डवूस। इति।

---

१५) AB १ चक्र। २ धनुष। ३ खड्ग। ४ तोमर। ५ कुंत। ६ त्रिशूल। ७ शक्ति। ८ पाश। ९ अंकुश। १०, मुद्गर। ११ मक्षिका। १२ भल्ल। १३ भिंडिमाल। १४ मुषंढि। १५ गदा। १६ शक्ति। १७ परशु। १८ पट्टिसु। १९ ऋष्टि। २० फरणक। २१ कंपन। २२ हल। २३ मुशल। २४ कुलिका। २५ करपत्र। २६ कर्त्तरि। २७ कोपूल। २८ तरवारि। २९ दुस्फोट। ३० गोफणि। ३१ डाह। ३२ डवूस। ३३ लुंठि। ३४ दंडशास्त्राणि।

१५) C चक्र। २ पाश। ३ चाप। ४ वज्र। ५ खड्ग। ६ छुरिका। ७ तोमर। ८ कुंतल। ९ शूल। १० शक्ति। ११ अंकुश। १२ मुद्गर। १३ भिंडिमाल। १४ मुषंडी। १५ परिघ। १६ गदा। १७ परशु। १८ पट्टिश। १९ ऋष्टि। २० यष्टि। २१ कणय। २२ कंकण। २३ हल। २४ मुशल। २५ करपत्र। २६ कर्त्तरि। २७ कोदाल। २८ डवुस। २९ नाराच। ३० खेटक। ३१ कुठार। ३२ दंड। ३३ पाश। ३४ चर्म। ३५ कुलिश। ३६ दुस्फोट। ३७ डाह।

१५) E १ चक्र। २ धनुष। ३ वज्र। ४ खड्ग। ५ छुरिका। ६ तोमर। ७ नाराच। ८ कुंत। ९ शूल। १० शक्ति। ११ पास। १२ मुद्ग। १३ भल्ल। १४ मक्षिक। १५ भिंडपाल। १६ मुषंडी। १७ लुंठि। १८ दंड। १९ गदा। २० फांकु। २१ परशु। २२ पट्टिश। २३ रिष्ट। २४ कणय। २५ कणय। २६ कंपन। २७ हल। २८ मुशल। २९ आगलिका। ३० कर्त्तरि। ३१ करपत्र। ३२ तरवारि। ३३ कोदाल। ३४ अंकुश। ३५ करवाल। ३६ दुस्फोट। ३७ गोफिणि। ३८ दाहड। ३९ डमरु। इति।

१५) F १ चक्र। २ धनुः। ३ वज्र। ४ अंकुश। ५ खड्ग। ६ छुरिक। ७ तोमर। ८ कुन्त। ९ शूल। १० त्रिशूल। ११ शक्ति। १२ पाश। १३ मुद्गर। १४ कुद्दाल। १५ दुस्फोट। १६ गोफण। १७ यन्त्रगोलिका। १८ मसंढि। १९ लुण्ठि। २० गदा। २१ शङ्कु। २२ परशु। २३ पट्टिश। २४ रिष्ट। २५ कणाय। २६ कंपन। २७ कर्त्तरी। २८ हल। २९ मुशल। ३० गुहिलका। ३१ करपत्र। ३२ तरवारि। ३३ डाय। ३४ ढाल। ३५ डस्थूर। ३६ कुठार। ३७ दण्डश्चेति।

१५) G १ चक्र। २ धनुष। ३ खड्ग। ४ तोमर। ५ कुन्त। ६ त्रिशूल। ७ शक्ति। ८ पाश। ९ अंकुश। १० मुद्गर। ११ मक्षिका। १२ भल्ल। १३ भिण्डि-माला। १४ मुषण्डि। १५ गदा। १६ शक्ति। १७ परशु। १८ पट्टिसु। १९ ऋष्टि। २० फरणक। २१ कंपन। २२ हल। २३ मुशल। २४ कुलिका। २५ करपत्र। २६ कर्त्तरि। २७ कोपूल। २८ तरवारि। २९ दुस्फोट। ३० गोफणि। ३१ डोह। ३२ डवूस। ३३ लुण्ठि। ३४ दण्डशास्त्राणि।

*

१६. सप्तविंशतिः शास्त्राणि ।

१ शब्दशास्त्र । २ छंदःशास्त्र । ३ अलंकारशास्त्र । ४ काव्यशास्त्र । ५ कथाशास्त्र । ६ नाटकशास्त्र । ७ वाद्यशास्त्र । ८ निर्घंट । ९ धर्मशास्त्र । १० अर्थ । ११ काम । १२ मोक्षशास्त्र । १३ वाद । १४ विद्या । १५ वास्तुशास्त्र । १६ विज्ञान । १७ कलाशास्त्र । १८ कृत्यशास्त्र । १९ कल्पशास्त्र । २० शिक्षा । २१ लक्षणशास्त्र । २२ पुराण । २३ मंत्रशास्त्र । २४ तर्कशास्त्र । २५ गणित । २६ गांधर्व । २७ सिद्धांत-शास्त्र । इति ।

---

१६) AB १ शब्दशास्त्र । २ छंदशास्त्र । ३ अलंकारशास्त्र । ४ काव्यशास्त्र । ५ कथाशास्त्र । ६ नाट्यशास्त्र । ७ नाटकशास्त्र । ८ निर्घंट । ९ धर्म । १० अर्थ । ११ काम । १२ मोक्ष । १३ तर्क । १४ गणित १५ गांधर्व । १६ मंत्र । १७ वैद्यक । १८ वास्तु । १९ विज्ञान । २० विनोद । २१ कृत्य । २२ कला । २३ कल्प । २४ शिक्षा । २५ लक्षण । २६ पुराण । २७ सिद्धांतशास्त्राणि ।

१६) E १ शब्द । २ छंद । ३ अलंकार । ४ काव्य । ५ कथा । ६ नाट्य । ७ नाटक । ८ निर्घंट । ९ निर्णय । १० धर्म । ११ अर्थ । १२ काम । १३ मोक्ष । १४ तर्क । १५ गणित । १६ गांधर्व । १७ मंत्र । १८ विद्या । १९ वास्तु । २० विज्ञान । २१ विनोद । २२ नृत्य ।

१६) F १ शब्दशास्त्र । २ छंदःशास्त्र । ३ अलंकारशास्त्र । ४ काव्यशास्त्र । ५ कथा । ६ नाटकशास्त्र । ७ निघण्टु । ८ धर्मशास्त्र । ९ अर्थशास्त्र १० कामशास्त्र । ११ मोक्षशास्त्र । १२ तर्कशास्त्र । १३ वाद । १४ वैद्य क । १५ वास्तु । १६ व्याख्यान । १७ गणित । १८ गान्धर्व । १९ मंत्र । २० विनोद । २१ कला । २२ कल्प । २३ शिक्षा । २४ पुराण । २५ सिद्धान्त । २६ नीतिशास्त्र । २७ वेद । इति शास्त्राणि ।

१६) G १ शब्दशास्त्र । २ छन्दशास्त्र । ३ अलङ्कारशास्त्र । ४ काव्यशास्त्र । ५ कथाशास्त्र । ६ नाट्यशास्त्र । ७ नाटकशास्त्र । ८ निघण्ट । ९ धर्म । १० अर्थ । ११ काम । १२ मोक्ष । १३ तर्क । १४ गणित । १५ गान्धर्व । १६ मंत्र । १७ वैद्यक । १८ वास्तु । १९ विज्ञान । २० विनोद । २१ कृत्य । २२ कला । २३ कल्प । २४ शिक्षा । २५ लक्षण । २६ पुराण । २७ सिद्धान्तशास्त्राणि ।

---

1 C gives no Vivaraṇa.

१७. [1]द्विपञ्चाशत् तत्त्वानि।

१ पृथ्वी। २ अप। ३ तेज। ४ वायु। ५ आकाश। ६ शब्द। ७ रूप। ८ रस। ९ गंध। १० स्पर्श। ११ रसन। १२ स्पर्शन। १३ घ्राण। १४ चक्षुः। १५ श्रोत्र। १६ वाक्। १७ पाणि। १८ पाद। १९ गुद। २० उपस्थ। २१ मन। २२ बुद्धि। २३ अहंकार। २४ प्रकृति। २५ पुरुष। २६ रक्त। २७ मांस। २८ मेद। २९ मज्जा। ३० अस्थि। ३१ शुक्र। ३२ वात। ३३ पित्त। ३४ कफ। ३५ मल। ३६ काम। ३७ क्रोध। ३८ लोह। ३९ मात्सर्य। ४० राग। ४१ नियति। ४२ कालविद्या। ४३ शुद्धविद्या। ४४ माया। ४५ शक्ति। ४६ नाद। ४७ बिंदु। ४८ कला। ४९ ज्योतिः। ५० ईश्वर। ५१ श्लेष्म। ५२ सदाशिव। इति।

---

१७) AB १ पृथ्वीतत्त्व। २ अपतत्त्व। ३ तेजस्तत्त्व। ४ वायुतत्त्व। ५ आकाशतत्त्वं। ६ शब्द। ७ स्पर्श। ८ रस। ९ रूप। १० गंध। ११ रसन। १२ स्पर्शन। १३ घ्राण। १४ चक्षु। १५ श्रोत्र। १६ त्वक्। १७ पाणि। १८ पाद। १९ गुद। २० उपस्थ। २१ मन। २२ बुद्धि। २३ अहंकार। २४ प्रकृति। २५ पुरुष। २६ बिंदु। २७ रक्त। २८ मांस। २९ मेद। ३० अस्थि। ३१ मज्जा। ३२ शुक्र। ३३ वात। ३४ पित्त। ३५ कफ। ३६ मल। ३७ काम। ३८ क्रोध। ३९ लोभ। ४० मोह। ४१ भय। ४२ मात्सर्य। ४३ राग। ४४ नियति। ४५ कला। ४६ कालविद्या। ४७ शुद्धविद्या। ४८ माया। ४९ ज्योति। ५० नाद। ५१ शक्ति। ५२ ईश्वर।

१७) C १ पृथिवी। २ अप। ३ तेज। ४ वायु। ५ आकाश। ६ शब्द। ७ स्पर्श। ८ रूप। ९ रस। १० गंध। ११ श्रोत्र। १२ त्वक्। १३ चक्षु। १४ जिह्वा। १५ घ्राण। १६ वाक्। १७ हस्त। १८ उपस्थ। १९ वायु। २० पाद। २१ मनांसि। २२ बुद्धि। २३ अहंकार। २४ प्रकृति। २५ पुरुष। २६ रक्त। २७ मांस। २८ मेद। २९ मज्जा। ३० शुक्र। ३१ अस्थि। ३२ वात। ३३ पित्त। ३४ कफ। ३५ मल। ३६ काम। ३७ क्रोध। ३८ लोभ। ३९ मोह। ४० मान। ४१ भय। ४२ आश्चर्य। ४३ राग। ४४ नियति। ४५ कालविद्या। ४६ माया। ४७ शक्ति। ४८ नाद। ४९ बिंदु। ५० कला। ५१ ज्योतिरिति।

१७) E १ पृथिवी। २ अप। ३ तेज। ४ वायु। ५ आकाश। ६ शब्द। ७ स्पर्श। ८ रस। ९ रूप। १० गंध। ११ रसन। १२ स्पर्शन। १३ घ्राण। १४ चक्षु। १५ श्रोत्र। १६ त्वक्। १७ बुद्धि। १८ अहंकार। १९ पाणि। २० गुद। २१ पाद।

---

1 A B अथ द्विप°।

२२ प्रकृति। २३ पुरुष। २४ बिंदु। २५ रक्त। २६ मांस। २७ मेद। २८ अस्थि। २९ मज्जा। ३० शुक्र। ३१ वात। ३२ पित्त। ३३ कफ। ३४ मल। ३५ काम। ३६ क्रोध। ३७ लोभ। ३८ मोह। ३९ भय। ४० मात्सर्य। ४१ राग। ४२ कला। ४३ कालविद्या। ४४ बुद्धि। ४५ शक्ति। ४६ ऐश्वर्य। ४७ माया। ४८ ज्योति। ४९ नाद। ५० शक्ति। ५१ नियति।

७१) F १ पृथ्वी। २ अप्। ३ तेजस्। ४ वायु। ५ आकाश। ६ शब्द। ७ रूप। ८ रस। ९ स्पर्श। १० गन्ध। ११ दर्शन। १२ श्रोत्र। १३ वाक्। १४ पाणि। १५ पाद। १६ गुद। १७ उपस्थ। १८ मनस्। १९ बुद्धि। २० अहंकार। २१ प्रकृति। २२ पुरुष। २३ रक्त। २४ मांस। २५ मेद। २६ मज्जा। २७ शुक्र। २८ अस्थि। २९ वात। ३० पित्त। ३१ कफ। ३२ मल। ३३ काम। ३४ क्रोध। ३५ लोभ। ३६ मोह। ३७ भय। ३८ मात्सर्य। ३९ राग। ४० नियति। ४१ कालविद्या। ४२ बुद्ध। ४३ माया। ४४ शक्ति। ४५ नाद। ४६ विन्दु। ४७ ईश्वर। ४८ शिव। ४९ सदाशिवश्चेति।

१७) G १ पृथ्वीतत्त्व। २ अप्तत्त्व। ३ तेजस्तत्त्व। ४ वायुतत्त्व। ५ आकाशतत्त्व। ६ शब्द। ७ स्पर्श। ८ रस। ९ रूप। १० गंध। ११ रसन। १२ स्पर्शन। १३ घ्राण। १४ चक्षुः। १५ श्रोत्र। १६ त्वक्। १७ पाणि। १८ पाद। १९ गुद। २० उपस्थ। २१ मन। २२ बुद्धि। २३ अहङ्कार। २४ प्रकृति। २५ पुरुष। २६ विन्दु। २७ रक्त। २८ मांस। २९ मेद। ३० अस्थि। ३१ मज्जा। ३२ शुक्र। ३३ वात। ३४ पित्त। ३५ कफ। ३६ मल। ३७ काम। ३८ क्रोध। ३९ लोभ। ४० मोह। ४१ भय। ४२ मात्सर्य। ४३ राग। ४४ नय। ४५ कला। ४६ कालविद्या। ४७ शुद्धविद्या। ४८ माया। ४९ ज्योतिः। ५० नाद। ५१ शक्ति। ५२ ईश्वर।

*

१८. द्विसप्ततिः कलाः[1]।

१ गीतकला। २ वाद्यकला। ३ नृत्यकला। ४ गणितकला। ५ पठितकला। ६ लिखितकला। ७ वक्तृत्वकला। ८ कवित्वकला। ९ कथाकला। १० वचनकला। ११ नाटककला। १२ व्याकरणकला। १३ छंदःकला। १४ अलंकारकला। १५ दर्शनकला। १६ अभिधानकला। १७ धातुवादकला। १८ धर्मकला। १९ अर्थकला। २० कामकला। २१ वादकला। २२ बुद्धिकला। २३ शौचकला। २४ विचारकला। २५ नेपथ्यकला। २६ विलासकला। २७ नीतिकला। २८ शकुनकला। २९ क्रीतकला। ३० चित्रकला। ३१ संयोगकला। ३२ हस्तलाघवकला। ३३ सूत्रकला। ३४ कुसुम-

1 A B C अथ द्वि°।

कला। ३५ इंद्रजालकला। ३६ सूचीकर्मकला। ३७ स्नेहकला। ३८ पानककला। ३९ आहारककला। ४० सौभाग्यकला। ४१ प्रयोगकला। ४२ मंत्रकला। ४३ वास्तुकला। ४४ वाणिज्यकला। ४५ रत्नकला। ४६ पात्रकला। ४७ वैद्यकला। ४८ देशकला। ४९ देशभाषितकला। ५० विजयकला। ५१ आयुधकला। ५२ युद्धकला। ५३ समयकला। ५४ वर्त्तनकला। ५५ हस्तिकला। ५६ तुरगकला। ५७ नारीकला। ५८ पक्षिकला। ५९ भूमिकला। ६० लेपकला। ६१ काष्ठकला। ६२ पुरुषकला। ६३ सैन्यकला। ६४ वृक्षकला। ६५ छद्मकला। ६६ हस्तकला। ६७ उत्तरकला। ६८ प्रत्युत्तरकला। ६९ शरीरकला। ७० सत्त्वकला। ७१ शास्त्रकला। ७२ लक्षणकला। इति।

---

१८) A B १ गीतकला। २ नृत्यकला। ३ वाद्यकला। ४ बुद्धिकला। ५ शौच। ६ मंत्रकला। ७ विचार। ८ वाद। ९ वास्तु। १० नेपथ्य। ११ विनोद। १२ विलास। १३ नीति। १४ शकुन। १५ चित्र। १६ संयोग। १७ हस्तलाघव। १८ कुसुम। १९ इंद्रजाल। २० सूचीकर्म। २१ स्नेहपात्र। २२ आहार। २३ सौभाग्य। २४ प्रयोग। २५ गंध। २६ वस्तु। २७ पात्र। २८ रत्न। २९ वैद्य। ३० देशभाषित। ३१ विजय। ३२ वाणिज्य। ३३ आयुध। ३४ युद्ध। ३५ नियुद्ध। ३६ समय। ३७ वर्त्तन। ३८ हस्ति। ३९ तुरग। ४० पक्षि। ४१ पुरुष। ४२ नारी। ४३ भूमिलेप। ४४ काष्ठ। ४५ सैन्य। ४६ वृक्ष। ४७ छद्म। '४८ प्रस्थ। ४९ उत्तर। ५० शास्त्र। ५१ शास्त्र। ५२ गणित। ५३ पठित। ५४ लिखित। ५५ वक्तृत्व। ५६ कथा। ५७ व्यवन। ५८ व्याकरण। ५९ नाटक। ६० छंद। ६१ अलंकार। ६२ दर्शन। ६३ अध्यात्म। ६४ धातु। ६५ धर्म। ६६ अर्थ। ६७ काम। ६८ द्यूत। ६९ शरीरकलाश्चेति।

१८) C १ *वाद्यकला*। २ *नृत्यकला*। ३ *गणित*। ४ *पठित*। ५ *लिखित*। ६ *लेख्य*। ७ वक्तृत्व। ८ वचन। ९ कथा। १० नाटक। ११ व्याकरण। १२ छंद। १३ अलंकार। १४ दर्शन। १५ अभिधान। १६ धातुकर्म। १७ धर्म। १८ अर्थ। १९ काम। २० वाद। २१ वृद्धि। २२ पाचक। २३ मंत्र। २४ विनोद। २५ विचार। २६ नेपथ्य। २७ विलास। २८ नीति। २९ शकुन। ३० क्रीडन। ३१ तंत्र। ३२ संयोग। ३३ हस्तलाघव। ३४ सूत्र। ३५ कुसुम। ३६ चंद्र। ३७ जीव। ३८ स्नेह। ३९ पान। ४० आहार। ४१ विहार। ४२ सौभाग्य। ४३ प्रयोग। ४४ गंध। ४५ वाद। ४६ वस्तु। ४७ रत्न। ४८ पात्र। ४९ विद्या। ५० व्यासकला। ५१ दशा। ५२ विजय। ५३ वणिज। ५४ आयुध। ५५ युद्ध। ५६ समयनियुद्ध। ५७ वृद्धन। ५८ वर्त्तन। ५९ हस्ति। ६० तुरग। ६१ पक्षि। ६२ नारि।

६३ भूमि। ६४ लेपन। ६५ दंत। ६६ काष्ठ। ६७ इष्टिका। ६८ पाषाण। ६९ उत्तर। ७० प्रत्युत्तर। ७१ सूचीकर्म। ७२ शरीरशास्त्रकलाश्चेति।

१८) E १ गीत। २ नृत्य। ३ वाद्य। ४ गणित। ५ पठित। ६ लिखित। ७ वक्तृत्व। ८ कवित्व। ९ काव्य। १० वाचकत्व। ११ नाद। १२ व्याकरण। १३ छंद। १४ अलंकार। १५ दर्शन। १६ अभिधान। १७ धातुवाद। १८ बुद्धि। १९ शौच। २० विचार। २१ नेपथ्य। २२ विलास। २३ नीति। २४ शकुन। २५ क्रीतविक्रय। २६ संयोग। २७ हस्तलाघव। २८ सूत्र। २९ कुसुम। ३० इंद्रजाल। ३१ सूचिकर्म। ३२ स्नेहपान। ३३ आहार। ३४ सौभाग्य। ३५ प्रयोग। ३६ गंध। ३७ वस्तु। ३८ रत्न। ३९ पात्र। ४० वैद्य। ४१ देशभाषित। ४२ देशविजय। ४३ वाणिज्य। ४४ आयुध। ४५ युद्ध। ४६ समय। ४७ वर्त्तन। ४८ हस्ती। ४९ तुरग। ५० पुरुष। ५१ नारी। ५२ पक्षी। ५३ भूमि। ५४ लेप। ५५ काष्ठ। ५६ सैन्य। ५७ वृक्ष। ५८ छत्र। ५९ हस्त। ६० उत्तर। ६१ प्रत्युत्तर। ६२ शैल। ६३ शारीर। ६४ शास्त्रकला चेति।

१८) F १ लिखित। २ गणित। ३ गीत। ४ वाद्य। ५ नृत्य। ६ पठित। ७ वक्तृत्व। ८ कवित्व। ९ कथा। १० विनोद। ११ वचन। १२ नाटक। १३ व्याकरण। १४ छन्दस्। १५ अलंकार। १६ दर्शन। १७ अभिधान। १८ धातुवाद। १९ धर्मवाद। २० अर्थवाद। २१ कामवाद। २२ बुद्धि। २३ शौच। २४ मन्त्र। २५ विचार। २६ नेपथ्य। २७ विलास। २८ स्वस्यकर्म। २९ नीति। ३० शकुन। ३१ क्रीडन। ३२ चित्र। ३३ लोहकर्म। ३४ काष्ठकर्म। ३५ दन्तकर्म। ३६ चर्मकर्म। ३७ संयोग। ३८ हस्तलाघव। ३९ कुसुम। ४० इन्द्रजाल। ४१ स्नेहपान। ४२ आहार। ४३ विहार। ४४ सौभाग्य। ४५ प्रयोग। ४६ गंध। ४७ वाद। ४८ वास्तु। ४९ रत्न। ५० पात्र। ५१ वैद्य। ५२ देशभाषा। ५३ विजय। ५४ वाणिज्य। ५५ आयुध। ५६ युद्धसमय। ५७ हस्तिपरीक्षा। ५८ अश्वपरीक्षा। ५९ नरपरीक्षा। ६० नारीपरीक्षा। ६१ रत्नपरीक्षा। ६२ पक्षिपरीक्षा। ६३ भूमिपरीक्षा। ६४ इष्टकर्म। ६५ पाषाणकर्म। ६६ उत्तर। ६७ प्रत्युत्तर। ६८ वृक्ष। ६९ छत्र। ७० शास्त्र। ७१ चोरग्रहण। ७२ कागडाजय।

१८) G १ गीतकला। २ नृत्यकला। ३ वाद्यकला। ४ बुद्धिकला। ५ शौचकला। ६ मंत्रकला। ७ विचारकला। ८ वाद। ९ वास्तु। १० नेपथ्य। ११ विनोद। १२ विलास। १३ नीति। १४ शकुन। १५ चित्र। १६ संयोग। १७ हस्त। १८ लाघव। १९ कुसुम। २० इन्द्रजाल। २१ सूचीकर्म। २२ स्नेह। २३ पान। २४ आहार। २५ सौभाग्य। २६ प्रयोग। २७ गंध। २८ वस्तु। २९ पात्र। ३० रत्न। ३१ वैद्य। ३२ देश। ३३ विजय। ३४ वाणिज्य। ३५ आयुध। ३६ युद्ध। ३७ नियुद्ध। ३८ समय। ३९ वर्त्तन। ४० हस्ति। ४१ तुरग। ४२ पक्षि। ४३ पुरुष। ४४ नारी। ४५ भूमि। ४६ लेप। ४७ काष्ठ। ४८ सैन्य। ४९ वृक्ष। ५० छत्र। ५१ प्रश्न। ५२ उत्तर। ५३ शास्त्र। ५४ शास्त्र। ५५ गणित। ५६ पठित। ५७ लिखित। ५८ वक्तृत्व। ५९ कथा। ६० व्यचन। ६१ व्याकरण। ६२ नाटक। ६३ छन्द। ६४ अलंकार। ६५ दर्शन। ६६ अध्यात्म। ६७ धातु। ६८ धर्म। ६९ अर्थ। ७० काम। ७१ यून। ७२ शारीरकलाश्चेति।

*

१९. चतुरशीतिर्विज्ञानानि।

१ हेतुविज्ञानं। २ तत्त्वविज्ञानं। ३ मोहविज्ञानं। ४ कर्मविज्ञानं। ५ धर्मविज्ञानं। ६ लक्ष्मीविज्ञानं। ७ योगविज्ञानं। ८ देवविज्ञानं। ९ शंखविज्ञानं। १० दंतविज्ञानं। ११ काचविज्ञानं। १२ गुटिकाविज्ञानं। १३ रसायनविज्ञानं। १४ वचनविज्ञानं। १५ कवित्वविज्ञानं। १६ गुरुत्वविज्ञानं। १७ पारंपर्यविज्ञानं। १८ ज्योतिष्कविज्ञानं। १९ वैद्यकविज्ञानं। २० मेघविज्ञान। २१ यंत्रविज्ञानं। २२ मंत्रविज्ञानं। २३ मर्दनविज्ञानं। २४ नेपथ्यविज्ञानं। २५ मस्तकविज्ञानं। २६ इष्टिविज्ञानं। २७ लेपविज्ञानं। २८ सूत्रविज्ञानं। २९ चित्रकर्मविज्ञानं। ३० रंगविज्ञानं। ३१ शूचिकर्मविज्ञानं। ३२ शकुनविज्ञानं। ३३ छद्मविज्ञानं। ३४ गंधयुक्तिविज्ञानं। ३५ आरामविज्ञानं। ३६ शैलविज्ञानं। ३७ काव्यविज्ञानं। ३८ कांस्यविज्ञानं। ३९ काष्ठविज्ञानं। ४० कुंभविज्ञानं। ४१ लोहविज्ञानं। ४२ पत्रविज्ञानं। ४३ वंशविज्ञानं। ४४ नखविज्ञानं। ४५ तृणविज्ञानं। ४६ प्रासादविज्ञानं। ४७ धातुविज्ञानं। ४८ विभूषणविज्ञानं। ४९ स्वरोदयविज्ञानं। ५० द्यूतविज्ञानं। ५१ अध्यात्मविज्ञानं। ५२ अग्निविज्ञानं। ५३ विद्वेषणविज्ञानं। ५४ उच्चाटनविज्ञानं। ५५ स्तंभनविज्ञानं। ५६ वशीकरणविज्ञानं। ५७ वस्तुविज्ञानं। ५८ स्वयंभूविज्ञानं। ५९ हस्तिशिक्षाविज्ञानं। ६० अश्वविज्ञानं। ६१ पक्षिविज्ञानं। ६२ स्त्रीकामविज्ञानं। ६३ चक्रविज्ञानं। ६४ वस्त्राकारविज्ञानं। ६५ पशुपालविज्ञानं। ६६ कृषिविज्ञानं। ६७ वाणिज्यविज्ञानं। ६८ लक्षणविज्ञानं। ६९ कालविज्ञानं। ७० शस्त्रबंधविज्ञानं। ७१ शुद्धकरविज्ञानं। ७२ विशुद्धकरविज्ञानं। ७३ आखेटकविज्ञानं। ७४ कौतूहलविज्ञानं। ७५ कोशविज्ञानं। ७६ पुष्पविज्ञानं। ७७ इंद्रजालविज्ञानं।

1 A B F G अथ चतु°।

७८ पानविधिविज्ञानं। ७९ अशनविधिविज्ञानं। ८० विनोदविज्ञानं। ८१ सौभाग्य-विज्ञानं। ८२ शौचविज्ञानं। ८३ विनयविज्ञानं। ८४ नीतिविज्ञानं* । इति।

१९) A १ हेतुविज्ञान। २ तत्त्वविज्ञान। ३ मोहजविज्ञान। ४ कर्मविज्ञान। ५ धर्मविज्ञान। ६ मर्मविज्ञान। ७ शंखविज्ञान। ८ दंतविज्ञान। ९ काच। १० गुटिका। ११ योग। १२ रसायन। १३ वचन। १४ कवित्व। १५ नेपथ्य। १६ मंत्र। १७ तंत्र। १८ मर्दन। १९ पत्रक। २० वृष्टिक। २१ लेपकर्म। २२ सूत्र। २३ चित्र। २४ रंग। २५ सूचीकर्म। २६ शकुन। २७ छद्म। २८ निर्माल्य। २९ गंधयुक्ति। ३० आसन। ३१ शील। ३२ काष्ठकर्म। ३३ कुंभ। ३४ लोह। ३५ यंत्र। ३६ वंश। ३७ नख। ३८ तृण। ३९ प्रसाद। ४० धातु। ४१ विभूषण। ४२ स्वरोदय। ४३ द्यूत। ४४ अध्यात्म। ४५ अग्नि। ४६ जल। ४७ विद्वेषण। ४८ उच्चाटन। ४९ स्तंभन। ५० वशीकरण। ५१ हस्तिशिक्षा। ५२ अश्व। ५३ पक्षि। ५४ स्त्रीकाम। ५५ रत्न। ५६ वस्त्राकार। ५७ पाशुपाल्य। ५८ कृषि। ५९ वाणिज्य। ६० लक्षण। ६१ काल। ६२ शास्त्र। ६३ शास्त्रबंध। ६४ आयुधकार। ६५ नियुद्धकार। ६६ आखेटक। ६७ कुतूहल। ६८ कोश। ६९ पुष्प। ७० इंद्रजाल। ७१ पानविधि। ७२ अशन। ७३ विनोद। ७४ सौजन्य। ७५ सौभाग्य। ७६ शौच। ७७ विनय। ७८ नीति। ७९ आयु। ८० वाद। ८१ व्यापार। ८२ धारण। इति विज्ञानानि।

१९) B १ हेतुविज्ञान। २ तत्त्वविज्ञान। ३ मोहन। ४ कर्म। ५ धर्म। ६ मर्म। ७ शंख। ८ दंत। ९ काच। १० गुटिका। ११ योग। १२ रसायन। १३ वचन। १४ कवित्व। १५ नेपथ्य। १६ मंत्र। १७ मर्दन। १८ पत्रक। '१९ वृष्टिक। २० लेपकर्म। २१ सूत्र। २२ चित्र। २३ रंग। २४ सूचीकर्म। २५ शकुन। २६ छद्म। २७ नैर्मल्य। २८ गंधयुक्ति। २९ आसन। ३० शील। ३१ काष्ठकर्म। ३२ कुंभ। ३३ लोह। ३४ यंत्र। ३५ वंश। ३६ नख। ३७ तृण। ३८ प्रसाद। ३९ धातु। ४० विभूषण। ४१ स्वरोदय। ४२ द्यूत। ४३ अध्यात्म। ४४ अग्नि। ४५ जल। ४६ विद्वेषण। ४७ उच्चाटन। ४८ स्तंभन। ४९ वशीकरण। ५० हस्ति-शिक्षा। ५१ अश्व। ५२ पक्षि। ५३ स्त्रीकाम। ५४ रत्न। ५५ वस्त्राकार। ५६ पाशुपाल्य। ५७ कृषि। ५८ वाणिज्य। ५९ लक्षण। ६० काल। ६१ शास्त्र। ६२ शास्त्रबंध। ६३ आयुधकार। ६४ नियुद्धकार। ६५ आखेटक। ६६ कुतूहल। ६७ कोश। ६८ पुष्प। ६९ इंद्रजाल। ७० पानविधि। ७१ अशन। ७२ विनोद। ७३ सौजन्य। ७४ सौभाग्य। ७५ शौच। ७६ विनय। ७७ नीति। ७८ आयुर्वेद। ७९ व्यापार। ८० धारण। इति विज्ञानानि।

१९) C १ हेतुविज्ञान। २ तत्त्वविज्ञान। ३ मोहविज्ञान। ४ कर्मविज्ञान। ५ शंखविज्ञान। ६ काचविज्ञान। ७ गुटिकाविज्ञान। ८ योगविज्ञान। ९ रसायनविज्ञान। १० वचन-विज्ञान। ११ कवित्वविज्ञान। १२ नेपथ्यविज्ञान। १३ मंत्रविज्ञान। १४ तंत्र। १५ मर्दन। १६ क्षेनक। १७ दृष्टिक। १८ लेपन। १९ सूत्र। २० शांति। २१ सूचि।

* after नीतिविज्ञानं we find आयुर्विज्ञानं। वादविज्ञानं। व्यापारविज्ञानं। and धारणविज्ञानं चेति।

२२ शकुन। २३ छद्म। २४ नैर्मल्य। २५ गंधयुक्ति। २६ आराम। २७ शैल। २८ काव्य। २९ कांस्य। ३० रौप्य। ३१ कांचन। ३२ काष्ठ। ३३ लोह। ३४ पत्र। ३५ वंश। ३६ नख। ३७ दशन। ३८ तृण। ३९ प्रसाद। ४० धातु। ४१ भूषण। ४२ स्वरोदय। ४३ द्यूत। ४४ अध्यात्म। ४५ अग्नि। ४६ जल। ४७ विद्वेषण। ४८ उच्चाटन। ४९ स्तंभन। ५० मोहन। ५१ वशीकरण। ५२ संदीपन। ५३ स्वयंभू। ५४ हस्तिशिक्षा। ५५ अश्वशिक्षा। ५६ पक्षि। ५७ स्त्रीकाम। ५८ चरित्र। ५९ वस्त्रकर। ६० पशुपालन। ६१ कृषि। ६२ वाणिज्य। ६३ लक्षण। ६४ काल। ६५ पाल। ६६ शस्त्रबंध। ६७ नियुधकरण। ६८ आखेटक। ६९ कुतूहल। ७० कोश। ७१ पुष्प। ७२ इंद्रजाल। ७३ विनोद। ७४ सौभाग्य। ७५ वस्त्र। ७६ शौच। ७७ आयुरिति।

१९) E १ हेतुविज्ञानं। २ तत्त्व। ३ मोहन। ४ धर्मविज्ञानं। ५ कर्मविज्ञानं। ६ मर्म। ७ लक्ष्मी। ८ संयोग। ९ शंख। १० दंत। ११ काक। १२ गुटिका। १३ योग। १४ रसायन। १५ वचन। १६ कवित्व। १७ यंत्र। १८ मंत्र। १९ मर्दन। २० तंत्र। २१ नेपथ्य। २२ खचित। २३ इष्टिका। २४ लेख्य। २५ सूत्र। २६ चित्रकर्म। २७ शकुन। २८ रंगकर्म। २९ सूचीकर्म। ३० छद्म। ३१ कर्मकार। ३२ नैर्मल्य। ३३ गंधयुक्ति। ३४ आराम। ३५ शील। ३६ कांस्य। ३७ काष्ठ। ३८ कुंभ। ३९ लोहपात्र। ४० विश। ४१ नख। ४२ दशन। ४३ तृण। ४४ वशीकरण। ४५ भूतकर्षणं। ४६ वस्तु। ४७ स्वयंभू। ४८ हस्ती। ४९ शिक्षा। ५० पक्षी। ५१ हस्तीकाम। ५२ अश्वशिक्षा। ५३ रत्न। ५४ वस्त्रकार। ५५ चक्र। ५६ यन्त्राकार। ५७ पशुपाल। ५८ कृषि। ५९ वाणिज्य। ६० लक्षण। ६१ काल। ६२ पानविधि। ६३ अशनविधि। ६४ प्रसाद। ६५ धातु। ६६ विभूषण। ६७ स्वरोदय। ६८ धूत। ६९ अध्यात्म। ७० अग्निविशेषणं। ७१ उच्चाटनं। ७२ स्तंभनं। ७३ मोहनं। ७४ वंश। ७५ वंध। ७६ नियुद्धकार। ७७ आखेट। ७८ फाकु। ७९ कुतूहल। ८० कोश। ८१ पुष्प। ८२ इंद्रजाल। ८३ विनोद। ८४ सौभाग्य। ८५ प्रयोग। ८६ शौच। ८७ शालनय। ८८ प्रीति। ८९ आयुः। ९० वाद। ९१ व्यापार। ९२ धारणं। ९३ आयुर्वेदश्चेति।

१९) F १ हेतुविज्ञान। २ धर्मविज्ञान। ३ चर्मविज्ञान। ४ कर्मविज्ञान। ५ लक्ष्मीयोग। ६ शङ्खकर्म। ७ दन्तकर्म। ८ काष्ठकर्म। ९ गुटिका। १० रसायन। ११ वचन। १२ कवित्व। १३ यंत्र। १४ मंत्र। १५ तंत्र। १६ मर्दन। १७ नैपथ्य। १८ सूतिका। १९ इष्ट। २० लेख्य। २१ सूत्र। २२ चित्रकर्म। २३ रंगकर्म। २४ सूचीकर्म। २५ शाकुनि। २६ छद्मकर। २७ कर्मकर। २८ नैर्मल्य। २९ गंधयुक्ति। ३० आराम। ३१ शील। ३२ काव्य। ३३ कांस्य। ३४ काष्ठ। ३५ कुंभकर्म। ३६ लोहकर्म। ३७ उपदंश। ३८ पत्र। ३९ वंश। ४० नख। ४१ दशन। ४२ तृण। ४३ प्रासाद। ४४ धातु। ४५ विभूषण। ४६ स्वरोदय। ४७ द्यूत। ४८ अध्यात्म। ४९ अग्निस्तम्भ। ५० जलस्तम्भ। ५१ विद्वेषण। ५२ उच्चाटन। ५३ स्तम्भन। ५४ मोहन। ५५ वशीकरण। ५६ वस्तु। ५७ गजशिक्षा। ५८ अश्वशिक्षा। ५९ पक्षिशिक्षा। ६० रत्नकर्म। ६१ वस्त्रकर्म। ६२ यन्त्रकर्म। ६३ पशुपाल्य। ६४ कृषि। ६५ वाणिज्य। ६६ लक्षण। ६७ कला। ६८ पानविधि। ६९ अशनविधि। ७० अस्त्रबंध। ७१ नियुद्धकरण। ७२ आखेटक। ७३ कुतूहल। ७४ पुष्प। ७५ इन्द्रजाल। ७६ विनोद। ७७ सौभाग्य-

कारण । ७८ प्रयोग । ७९ शौच । ८० ज्ञान । ८१ विनय । ८२ नीति । ८३ आयु । ८४ प्रीति । ८५ व्यापार । ८६ धारणविज्ञान ।

१९) G १ हेतुविज्ञान । २ तत्त्वविज्ञान । ३ मोहन । ४ कर्म । ५ धर्म । ६ मर्म । ७ शह्व । ८ दंत । ९ काच । १० गुटिका । ११ योग । १२ रसायन । १३ वचन । १४ कवित्व । १५ नेपथ्य । १६ मंत्र । १७ तंत्र । १८ मर्दन । १९ पत्रक । २० वृष्टिक । २१ लेपकर्म । २२ सूत्र ।. २३ चित्र । २४ रङ्ग । २५ सूचीकर्म । २६ शकुन । २७ छद्म । २८ नैर्मल्य । २९ गंध । ३० युक्ति । ३१ आसन । ३२ शील । ३३ काष्ठ-कर्म । ३४ कुंभ । ३५ लोह । ३६ यंत्र । ३७ वंश । ३८ नख । ३९ तृण । ४० प्रसाद । ४१ धातु । ४२ विभूषण । ४३ स्वरोदय । ४४ द्यूत । ४५ अध्यात्म । ४६ अग्नि । ४७ जल । ४८ विद्वेषण । ४९ उच्चाटन । ५० वशीकरण । ५१ हस्तिशिक्षा । ५२ अश्व । ५३ पक्षि । ५४ स्त्री । ५५ काम । ५६ रत्न । ५७ वस्त्रकार । ५८ पाशु-पाल्य । ५९ कृषि । ६० वाणिज्य । ६१ लक्षण । ६२ काल । ६३ शास्त्र । ६४ शास्त्रबन्ध । ६५ आयुधकार । ६६ नियुद्धकार । ६७ आखेटक । ६८ कुतूहल । ६९ केश । ७० पुष्प । ७१ इन्द्रजाल । ७२ पानविधि । ७३ अशन । ७४ विनोद । ७५ सौजन्य । ७६ सौभाग्य । ७७ शौच । ७८ विनय । ७९ नीति । ८० आयु । ८१ वाद । ८२ व्यापार । ८३ धारणा । इति विज्ञानानि ।

*

२०. चतुरशीतिर्देशाः[1] ।

पूर्वदेशाः—१ अंजनदेशः । २ गौडदेशः । ३ कान्यकुब्जदेशः । ४ कलिंगदेशः । ५ अंगदेशः । ६ वंगदेशः । ७ कुरंगदेशः । ८ गोलादेशः । ९ राढ्यदेशः । १० वरेन्द्रदेशः । ११ यामुनदेशः । १२ गंगापारदेशः । १३ अंतर्वेदिदेशः । १४ मागधदेशः ।

मध्यदेशाः—१ कुरुदेशः । २ डाहलदेशः । ३ कामरूपदेशः । ४ कामाक्षदेशः । ५ उंड्रदेशः । ६ पुंड्रदेशः । ७ उड्डीसदेशः । ८ अग्निमुखदेशः । ९ पंचालदेशः । १० सूरसेनदेशः । ११ जालंधरदेशः । १२ लोहितपाददेशः ।

पश्चिमस्थलदेशाः—१ कच्छदेशः । २ वालंभदेशः । ३ सौराष्ट्रदेशः । ४ कोंकणदेशः । ५ लाटदेशः । ६ मालवदेशः । ७ अवंतीदेशः । ८ श्रीमालदेशः । ९ अर्बुददेशः । १० मेदपाटदेशः । ११ मरुदेशः । १२ कंबोजदेशः । १३ पारियात्रदेशः । १४ लोहपुरदेशः ।

1 B इति चतुराशीति, C अथ चतुराशीति देश, D चतुर्देशाः ।

१५ सेरटकदेशः। १६ तामलिप्तदेशः। १७ किरातदेशः। १८ सौवीरदेशः। १९ वोक्काणदेशः।

उत्तरापथदेशाः—१ गूर्जरदेशः। २ सिंधुदेशः। ३ केकाणदेशः। ४ नेपालदेशः। ५ टाकदेशः। ६ तुरुष्कदेशः। ७ ताईकारदेशः। ८ बर्बरदेशः। ९ कीरदेशः। १० खसदेशः। ११ काश्मीरदेशः। १२ हिमालयदेशः। १३ श्रीराष्ट्रदेशः। १४ वज्रलदेशः।

दक्षिणापथदेशाः—१ सिंहलदेशः। २ चउडदेशः। ३ कोरलदेशः। ४ पांडुदेशः। ५ आन्ध्रदेशः। ६ विंध्यदेशः। ७ कर्णाटदेशः। ८ द्रविडदेशः। ९ श्रीपर्वतदेशः। १० विदर्भदेशः। ११ धाराधरदेशः। १२ कांजीदेशः। १३ तापीतटदेशः। १४ महाराष्ट्रदेशः। १५ आभीरदेशः। १६ नर्मदातटदेशः। १७ मलयदेशः। १८ वराटदेशः। १९ उरलदेशः।

---

२०) A पूर्वदेशाः—१ अंगदेश। २ वंगदेश। ३ गौडदेश। ४ कन्यकुब्ज। ५ कलिङ्ग। ६ गोष्ठ। ७ अंग। ८ वंगाल। ९ कुरंग। १० राढ। ११ वारेंध्री। १२ यामुन। १३ सरयूपार। १४ अंतर्वेद। १५ मगध। मध्यदेशाः—१ कुरु। २ डाहल। ३ कामरू। ४ उड। ५ पंचाल। ६ सौरसेन। ७ जालंधर। ८ लोहपाद। पश्चिमस्थल—१ वालंभ। २ सौराष्ट्र। ३ कुंकुण। ४ लाट। ५ श्रीमाल। ६ अर्बुद। ७ मेदपाट। ८ कच्छ। ९ मालव। १० अवंती। ११ पारियात्र। १२ कंबोज। १३ तामलिप्त। १४ किरात। १५ सेरटक। १६ सौवीर। १७ बौक्काण। उत्तरापथ—१ गूर्जर। २ सिंधु। ३ केकाण। ४ नेपाल। ५ तुरुष्क। ६ ताजिक। ७ बर्बर। ८ खसकीर। ९ काश्मीर। १० वज्रल। ११ हिमालय। १२ लोहपुर। १३ श्रीराष्ट्र। दक्षिणापथ—१ मलय। २ सींघल। ३ पांड। ४ कोरल। ५ अंध्र। ६ विंध्य। ७ कर्णाट। ८ द्रविड। ९ श्रीपर्वत। १० वैदर्भ। ११ विराट। १२ उरल। १३ तापीतट। १४ महाराष्ट्र। १५ आभीर। १६ नार्मद। १७ कामाक्ष। १८ कंडु। १९ पापांतिका। २० चौड। २१ आपादर। २२ वरेंद्र। २३ गंगापार। २४ सौलप। २५ कांती। २६ नागणिक। २७ द्वीपदेशाश्चेति।

२०) B पूर्वदिशि देशाः—१ अंगदेशः। २ वंगदेशः। ३ गौडदेशः। ४ कन्यकुब्ज। ५ कलिङ्ग। ६ गोष्ट। ७ वङ्गाल। ८ कुरंग। ९ सरठ। १० वारेंद्री। ११ यामुन। १२ सरयूपार। १३ अंतर्वेद। १४ मगध। मध्यदेशाः—१ कुरु। २ डाहल। ३ कामरू। ४ उड। ५ पंचाल। ६ सौरसेन। ७ जालंधर। ८ लोहपाद। पश्चिमस्थल—१ वालंभ। २ सौराष्ट्र। ३ कुंकुण। ४ लाट। ५ श्रीमाल। ६ अर्बुद। ७ मेदपाट। ८ मरु। ९ कच्छ। १० मालव। ११ अवंती।

१२ पारियात्र। १३ कंबोज। १४ तामलिप्त। १५ किरात। १६ सेरटक। १७ सौवीर। १८ वोक्काण। उत्तरापथ— १ गूर्जर। २ सिंधु। ३ केकाण। ४ नेपाल। ५ तुरुष्क। ६ ताजिक। ७ वर्बर। ८ खसकीर। ९ कास्मीर। १० वव्रल। ११ हिमालय। १२ लोहपुर। १३ श्रीराक्ष। दक्षिणापथ— १ मलय। २ सीथल। ३ पांड। ४ कोरल। ५ अंध्र। ६ विंध्य। ७ कर्णाट। ८ द्रविड। ९ श्रीपर्वत। १० वैदर्भ। ११ विराट। १२ उरल। १३ कांजी। १४ तापीतट। १५ महाराष्ट्र। १६ आभीर। १७ नामर्द। १८ कामाक्ष। १९ कंडु। २० पापांतिका। २१ चौड। २२ आराध्य। २३ वरेंद्र। २४ गंगापार। २५ सौसप। २६ कांती। २७ नागणिक। २८ द्वीपदेशाश्चेति।

२०) C १ कुरंग। २ वंगाल। ३ आराध्य। ४ वरेंद्र। ५ यामन। ६ गंगापार। ७ अंतर्वेध। ८ मागध। मध्य— १ कुरु। २ डाहल। ३ कामरू। ४ पुंड्रक। ५ पंचाल। ६ अग्नि। ७ कास। ८ सूरसेन। ९ जालंधर। १० लोहितपाद। अथ पश्चिमायां दिशि— १ काछल। २ वालंभ। ३ सौराष्ट्र। ४ कुंकण। ५ लाड। ६ श्रीमाल। ७ अर्बुद। ८ मेदपाट। ९ मारू। १० मावल। ११ अवंति। १२ नागणित। १३ किरात। १४ शकट। १५ सौवीर। १६ वोकाण। उत्तरपंथे— १ गुर्जर। २ सिंधु। ३ केकाण। ४ नेपाल। ५ तुरुष्क। ६ तायक। ७ यब्बर। ८ वजूर। ९ कीर। १० कश्मीर। ११ हिमालय। १२ लोहपुर। १३ श्रीराज्य। दक्षिणदिशि— १ पांडु। २ कोरल। ३ पाडल। ४ अद्र। ५ वंध्य। ६ कर्कट। ७ द्राविड। ८ श्रीपर्वत। ९ संद्रभद्र। १० धरानंग। ११ उरल। १२ जीमूत। १३ मुलतान। १४ तापीतट। १५ महातट। १६ महाराष्ट्र। १७ आभीर। १८ नर्मदातट। १९ कामाक्षा। २० हूणदेश। २१ कलिंग। २२ मद्र। २३ सुमंत-देश। २४ द्वीपश्चेति।

२०) E पूर्वदिशि— १ गौड। २ कन्यकुब्ज। ३ कलिंग। ४ गोल। ५ वंग। ६ कुरंग। ७ वंगाल। ८ आराट। ९ वरेंद्र। १० यामन। ११ गंगापार। १२ अंतर्वेध। १३ मगध। मध्य देश— १ कुरुदेश। २ धाहल। ३ कामरूप। ४ वंबु। ५ पुंढ। ६ चोड। ७ मालव। ८ आग्नि। ९ पंचाल। १० सूरसेन। ११ जालंधर। १२ लोहितपाद। पश्चिम— १ काच्छल। २ वालंभ। ३ सौराष्ट्र। ४ कुंकण। ५ श्रीमाल। ६ अर्बुद। ७ मेदपाट। ८ मारु। ९ मच्छ। १० माल्वु। ११ पारियात्र। १२ कंबोज। १३ तामलिप्त। १४ अवंती। १५ नागाणित। १६ किरात। १७ दार्कुत। १८ सौवीर। १९ कुंकण। २० वोकाण। उत्तारे— १ गूजराति। २ सिंधु। ३ नेपाल। ४ गुर्जर। ५ भोट। ६ टाक। ७ तुरुष्क। ८ तायक। ९ ववर। १० वूसर। ११ कास्मीर। १२ वजुर। १३ हिमालय। १४ लोहपुर। १५ श्रीकाष्ठ। १६ स्त्रीराज्य। दक्षिण— १ मालय। २ शिघल। ३ कौरिल। ४ पाडल। ५ अंध्र। ६ विंध्य। ७ कर्णाट। ८ द्राविड। ९ श्रीपर्वत। १० वैदर्भ। ११ वैराट। १२ धारउर। १३ लाञ्ज। १४ तापीतट। १५ महाराष्ट्र। १६ आभीरदेश। १७ नर्मदातट। १८ कामाक्षा। १९ कच्च। २० पापांतिक। २१ चोढ। द्वीपांतर देश वहु छि।

२०) F १ गौड। २ चौड। ३ कान्यकुब्ज। ४ अङ्ग। ५ वङ्ग। ६ कलिङ्ग। ७ तिलङ्ग। ८ गोल। ९ वङ्गाल। १० आराध्य। ११ वरेन्द्र। १२ यामन। १३ गंगापार।

१४ अंतर्वेद। १५ मागध। मध्य— १ कुरुक्षेत्र। २ डाहल। ३ कामरूप। ४ उन्द्र। ५ पोन्द्र। ६ पञ्चाल। ७ शौरसेन। ८ अग्निमुख। ९ मालव। १० जालन्धर। ११ लोहितपाद। पश्चिमायां दिशि— १ काछेल। २ वालंभ। ३ सौराष्ट्र। ४ कुंकण। ५ लाटदेश। ६ स्थलदेश। ७ दमगान। ८ अर्बुद। ९ मेदपाट। १० अवंती। ११ किरात। १२ शकट। १३ सौवीर। १४ कुंकुम। उत्तरापथाः— १ गूर्जर। २ सिंधु। ३ केकाण। ४ नेपाल। ५ टाक। ६ तुरुष्क। ७ तायक। ८ बर्बर। ९ बर्जर। १० कीर। ११ कासीर। १२ हिमालय। १३ लोहपुर। १४ श्रीकाष्ठ। दक्षिणस्यां दिशि— १ मलय। २ सिंहल। ३ कौरल। ४ पाडल। ५ अंध्र। ६ बंध्य। ७ कर्कट। ८ द्रविड। ९ श्रीपथ। १० वैदर्भ। ११ धारउर। १२ लाजी। १३ तापीतट। १४ तोमल। १५ पण्ड। १६ स्त्रीराज्य। दक्षणपथ— १ कर्णाट। २ महाराष्ट्र। ३ आभीर। ४ नर्मदातट। ५ कामाक्षा। ६ कंचण। ७ कुंतल। ८ पापीतिक। ९ चौदही। एते देशा द्वात्रिंशत्सहस्राः।

२०) G पूर्वदेशाः— १ अंगदेशः। २ बंगदेश। ३ गौडदेश। ४ कन्यकुब्ज। ५ कलिंग। ६ गोष्ट। ७ अंग। ८ बंगाल। ९ कुरंग। १० सरठ। ११ वारंध्री। १२ यामुन। १३ सरयूपार। १४ अंतर्वेद। १५ मगध। मध्य— १ कुरु। २ डाहल। ३ कामरू। ४ ओड। ५ पंचाल। ६ सौरसेन। ७ जालंधर। ८ लोहपाद। पश्चिमस्थल— १ वालंभ। २ सौराष्ट्र। ३ कुंकुण। ४ लाट। ५ श्रीमाल। ६ अर्बुद। ७ मेदपाट। ८ कच्छ। ९ मालव। १० अवंती। ११ पारियात्र। १२ कंबोज। १३ तामलिप्त। १४ किरात। १५ सेरटक। १६ सौवीर। १७ बोक्काण। उत्तरापथ— १ गूर्जर। २ सिंधु। ३ केकाण। ४ नेपाल। ५ तुरुष्क। ६ ताजिक। ७ बर्बर। ८ खस। ९ कीर। १० काश्मीर। ११ वज्रला। १२ हिमालय। १३ लोहपुर। १४ श्रीराज। दक्षिणापथ— १ मलय। २ सीघल। ३ पांड। ४ कौरल। ५ अंध्र। ६ विंध्य। ७ कर्णाट। ८ द्रविड। ९ श्रीपर्वत। १० वैदर्भ। ११ विराट। १२ ओरल। १३ तापीतट। १४ महाराष्ट्र। १५ आभीर। १६ नार्मद। १७ कामाक्ष। १८ कंदु। १९ पापांतिका। २० चौड। २१ आराध्य। २२ वरेंद्र। २३ गङ्गापार। २४ सौसप। २५ कांती। २६ नागणिक। २७ द्वीपदेशाश्चेति।

*

२१. द्वात्रिंशल्लक्षणस्थानानि[1]।

१ स्वर्गलक्षणं। २ मर्त्यलक्षणं। ३ पाताललक्षणं। ४ तनुलक्षणं। ५ विद्यालक्षणं। ६ विज्ञानलक्षणं। ७ वास्तुलक्षणं। ८ विनोदलक्षणं। ९ वादलक्षणं। १० कलालक्षणं। ११ गीतलक्षणं। १२ वाद्यलक्षणं। १३ नृत्यलक्षणं। १४ रूपलक्षणं। १५ धर्मलक्षणं। १६ अर्थलक्षणं। १७ कामलक्षणं। १८ मोक्षलक्षणं। १९ देशलक्षणं। २० पात्रलक्षणं।

1 C E F लक्षणानि।

२१ समयलक्षणं । २२ पुरुषलक्षणं । २३ ज्योतिष्कलक्षणं । २४ चित्रलक्षणं । २५ स्त्रीलक्षणं । २६ गजलक्षणं । २७ तुरगलक्षणं । २८ पक्षिलक्षणं । २९ सत्त्वलक्षणं । ३० व्यापारलक्षणं । ३१ वस्तुलक्षणं । ३२ विवेकलक्षणं । इति ।

२१) A B १ स्वर्गलक्षणं । २ मृत्यु । ३ पाताल । ४ तत्त्व । ५ विद्या । ६ विज्ञान । ७ ज्ञान । ८ वास्तु । ९ विनोद । १० वाद । ११ कला । १२ कल्प । १३ गीत । १४ वाद्य । १५ नृत्य । १६ कृत्य । १७ धर्म । १८ अर्थ । १९ काम । २० मोक्ष । २१ देश २२ काल । २३ पात्र । २४ पुरुष । २५ स्त्री । २६ गज । २७ तुरग । २८ पक्षि । २९ रत्न । ३० सद्व्यापार । ३१ सत्त्व । ३२ वस्तु । इति लक्षणानि ।

२१) C १ स्वर्ग । २ पाताल । ३ मृत्यु । ४ तत्त्व । ५ रूप । ६ विद्या । ७ मनु । ८ विज्ञान । ९ वस्तु । १० विनोद । ११ वार्ता । १२ गीत । १३ वाद्य । १४ नृत्य । १५ रूपक । १६ धर्म । १७ अर्थ । १८ काम । १९ मोक्ष । २० काल । २१ देश । २२ पात्र । २३ द्रव्य । २४ समय । २५ पुरुष । २६ स्त्री । २७ गज । २८ पक्षी । २९ तुरग । ३० धर्म । ३१ रत्न । ३२ सितहार । ३३ सर्ववस्तु ज्ञानमिति ।

२१) E १ स्वर्ग । २ मृत्यु । ३ पाताल । ४ तनु । ५ विद्या । ६ विज्ञान । ७ वास्तु । ८ विनोद । ९ वाद्य । १० गीत । ११ नाट्य । १२ वार्ता । १३ नृत्य । १४ रूप । १५ धर्म । १६ अर्थ । १७ काम । १८ मोक्ष । १९ देशकाल । २० पात्र । २१ सम्यक । २२ समय । २३ पुरुष । २४ स्त्री । २५ गज । २६ तुरग । २७ पक्षी । २८ रत्न । २९ पान । ३० आहार । ३१ सद्व्यापार । ३२ वस्तुलक्षणं चेति ।

२१) F १ स्वर्गलक्षण । २ मृत्युलक्षण । ३ पाताललक्षण । ४ तत्त्वलक्षण । ५ विद्यालक्षण । ६ विज्ञानलक्षण । ७ वास्तु । ८ विनोद । ९ वाद । १० कला । ११ कल्प । १२ गीतलक्षण । १३ वाद्यलक्षण । १४ नृत्यलक्षण । १५ कृत्य । १६ धर्म । १७ अर्थ । १८ काम । १९ मोक्ष । २० काल । २१ पात्र । २२ पुरुष । २३ स्त्रीलक्षण । २४ गज । २५ तुरग । २६ पक्षि । २७ रत्न । २८ पान । २९ सत्त्व । ३० वस्तु । ३१ भद्र । ३२ आहार । एतानि शुभलक्षणानि ।

२१) G १ स्वर्गलक्षण । २ मृत्यु । ३ पाताल । ४ तत्त्व । ५ विद्या । ६ विज्ञान । ७ ज्ञान । ८ वास्तु । ९ विनोद । १० वाद । ११ कला । १२ कल्प । १३ गीत । १४ वाद्य । १५ नृत्य । १६ कृत्यु । १७ धर्म । १८ अर्थ । १९ काम । २० मोक्ष । २१ देश । २२ काल । २३ पात्र । २४ पुरुष । २५ स्त्री । २६ तुरग । २७ पक्षि । २८ रत्न । २९ सद्व्यापार । ३० सत्त्व । ३१ आहार । ३२ वस्तुलक्षणानि ।

*

२२. चतुर्विंशतिविधं गृहम् ।

१ प्रासाद । २ आयतनं । ३ हर्म्यं । ४ गृहं । ५ कोश ।

1 A B अथ चतु°

६ कोष्ठागारं । ७ पानीयगृहं । ८ शौचगृहं । ९ शालागृहं ।
१० मठस्थानं । ११ सत्रागारं । १२ शृङ्गारगृहं । १३ धर्मस्थानं ।
१४ विनोदस्थानं । १५ अश्वशाला । १६ गजशाला । १७ वास्तुभुवनं ।
१८ मंडपं । १९ भोजनशाला । २० तापसशाला । २१ अग्रासनं ।
२२ आवेशनं । २३ अर्घस्थानं । २४ राजांगणम् । इति ।

---

२२) A १ प्रासाद । २ हर्म्य । ३ आयतन । ४ गृह । ५ कोश । ६ कोष्ठागार । ७ पानीयस्थान । ८ शौचगृह । ९ माल्यगृह । १० मठस्थान । ११ सत्रागार । १२ शृङ्गारगृह । १३ धर्मस्थान । १४ विनोदस्थान । १५ मंदुरा । १६ हस्तिशाला । १७ घासभवन । १८ मंडप । १९ महानस । २० भोजनशाला । २१ अग्रासन । २२ आवेशन । २३ अर्घस्थान । २४ राजांगणं च ।

२२) B १ प्रासाद । २ हर्म्य । ३ आयतन । ४ गृह । ५ कोश । ६ कोष्ठागार । ७ पानीयस्थान । ८ शौचगृह । ९ माल्यगृह । १० मठस्थान । ११ सत्रागार । १२ शृङ्गारगृह । १३ धर्मस्थान । १४ विनोदस्थान । १५ मंदिर । १६ हस्तिशाला । १७ घासभवन । १८ मंडप । १९ महानस । २० भोजनशाला । २१ अग्रासन । २२ अर्घस्थान । २३ राजांगणं च ।

२२) C १ प्रासाद । २ हर्म्य । ३ आयतन । ४ गृह । ५ कोश । ६ कोष्ठागार । ७ पानीयगृह । ८ शौचगृह । ९ शालागृह । १० माल्यगृह । ११ मठगृह । १२ सत्रागार । १३ शृंगारगृह । १४ धर्मस्थान । १५ विनोदस्थान । १६ मंदिर । १७ हस्तिशाला । १८ मंडपशाला । १९ अन्नशाला । २० भोजनशाला । २१ शयनशाला । २२ गर्भागार । २३ सत्रास्थान । २४ राज्यांगणं चेति ।

२२) E १ प्रासाद । २ आयतन । ३ हर्म्य । ४ गृह । ५ कोश । ६ कोष्ठागार । ७ पानीगृह । ८ धौतगृह । ९ शालागृह । १० माल्यगृह । ११ मठस्थान । १२ सत्रागार । १३ शृंगारगृह । १४ धर्मस्थान । १५ विनोदस्थान । १६ मंदुर । १७ हस्तिशाला । १८ घासमंडप । १९ महानसं । २० भोजनशाला । २१ अग्रासनं । २२ आवेशनं । २३ अर्घस्थानं । २४ राजांगणं इति ।

२२) F १ प्रासाद । २ हर्म्य । ३ आयतन । ४ गृह । ५ कोश । ६ कोष्ठागार । ७ पानीयगृह । ८ शौचगृह । ९ शालागृह । १० मालागृह । ११ मठस्थान । १२ सत्रागार । १३ शृंगारस्थान । १४ धर्मस्थान । १५ विनोदस्थान । १६ वाजिशाला । १७ हस्तिशाला । १८ वासमंडप । १९ महानस । २० भोजनशाला । २१ अग्रासन । २२ आवेशन । २३ अर्थस्थान । २४ राजांगणं चेति ।

२२) G १ प्रासाद । २ हर्म्य । ३ आयतन । ४ गृह । ५ कोश । ६ कोष्ठागार । ७ पानीयस्थान । ८ शौचगृह । ९ माल्यगृह । १० मठस्थान । ११ सत्रागार । १२ शृंगारगृह । १३ धर्मस्थान । १४ विनोदस्थान । १५ मंदुरा । १६ हस्तिशाला । १७ घासभवन । १८ मंडप । १९ महानस । २० भोजनशाला । २१ अग्रासन । २२ आवेशन । २३ अर्चास्थान । २४ राजांगणं च ।

२३. अष्टोत्तरशतं मङ्गलम् ।

१ ब्रह्मा । २ विष्णु । ३ महेश्वर । ४ आदित्य । ५ लोकपाल । ६ अग्नि । ७ अमर । ८ सागर । ९ नदी । १० पर्वत । ११ गगन । १२ अहर्गण । १३ गंधर्व । १४ स्कन्द । १५ विनायक । १६ ज्योतिष्क । १७ तीर्थ । १८ द्विज । १९ वर । २० धर्मशास्त्र । २१ वेद । २२ पद्म । २३ पर्वांश । २४ कौस्तुभ । २५ काञ्चन । २६ रूप्य । २७ ताम्र । २८ घृत । २९ मधु । ३० मद्य । ३१ सिद्धान्त । ३२ चंदन । ३३ श्वेतवस्त्र । ३४ वेश्या । ३५ रोचना । ३६ मृत्तिका । ३७ गोमय । ३८ शस्त्र । ३९ अंजन । ४० ओषध । ४१ मणिमय । ४२ शिला । ४३ मोदक । ४४ शंख । ४५ प्रियङ्गु । ४६ वाच । ४७ पुष्प । ४८ श्रुत । ४९ सर्षप । ५० दधि । ५१ दूर्वा । ५२ अक्षत । ५३ उदंबर । ५४ आम्र । ५५ छत्र । ५६ वादित्र । ५७ हस्ति । ५८ मुक्ताफल । ५९ खंजरीट । ६० वृष । ६१ ध्वज । ६२ हंस । ६३ कन्या । ६४ दर्पण । ६५ पीठ । ६६ कुश । ६७ तुरंग । ६८ वेणु । ६९ वीणा । ७० ध्वनि । ७१ सिंघ । ७२ मेघ । ७३ स्वस्तिक । ७४ तोरण । ७५ कुंभ । ७६ चामर । ७७ गौ सवत्सा । ७८ आर्द्र-मांस । ७९ स्त्री सवत्सा । ८० वाहन । ८१ प्रदान । ८२ विद्या । ८३ पानीय । ८४ तुष्टि । ८५ पुष्टि । ८६ प्रसाद । ८७ उल्लोच । ८८ सत्य । ८९ पूर्णपात्र । ९० आर्द्रशाक । ९१ आमिष । ९२ पिप्पल-पत्र । ९३ श्रीवृक्ष । ९४ तालवृक्ष । ९५ पूजा । ९६ निधि । ९७ नर । ९८ सह्या । ९९ गौरी । १०० गङ्गा । १०१ सरस्वती । १०२ नर्मदा । १०३ यमुना । १०४ कमला । १०५ सिद्धि । १०६ प्रीति । १०७ कीर्ति । १०८ बीज । इति ।

---

1 A G drop अष्टो... लम् । B C अष्टोत्तरशतमंगलानि । E अष्टोत्तरशतमंगलानां स्थानानि । F अष्टोत्तरशतं मंगलानि ।

२३) A १ ब्रह्मा । २ विष्णु । ३ महेश्वर । ४ स्कन्द । ५ आदित्य । ६ लोकपाल । ७ अग्नि । ८ अमर । ९ सागर । १० नदी । ११ पर्वत । १२ गगन । १३ ग्रह । १४ गण । १५ गंधर्व । १६ चन्द्र । १७ विनायक । १८ ज्योतिष । १९ धर्मशास्त्र । २० द्विजवर । २१ वेद । २२ पद्म । २३ प्रदीप । २४ कौस्तुभ । २५ कांचन । २६ रूप्य । २७ ताम्र । २८ घृत । २९ मधु । ३० मद्य । ३१ सिद्धान्त । ३२ चंदन । ३३ सितवस्त्र । ३४ वेश्या । ३५ रोचना । ३६ मृत्तिका । ३७ गोमय । ३८ शास्त्र । ३९ अंजन । ४० ओषध । ४१ अक्षत । ४२ रत्नमणि । ४३ मोदक । ४४ शङ्ख । ४५ प्रियङ्गु । ४६ जव । ४७ श्वेतपुष्प । ४८ सर्षप । ४९ दधि । ५० आम्र । ५१ उदुंबर । ५२ छत्र । ५३ वादित्र । ५४ हस्ति । ५५ बीजपूरक । ५६ मुक्ताफल । ५७ दूर्वा । ५८ खंजरीट । ५९ वृषभ । ६० ध्वज । ६१ हंस । ६२ कन्या । ६३ दर्पण । ६४ मत्स्य । ६५ तुरंगम । ६६ गीत । ६७ वीणा । ६८ ध्वनि । ६९ सिंह । ७० मेघ । ७१ स्वस्ति । ७२ तोरण । ७३ कुंभ । ७४ चामर । ७५ गौ सवत्सा । ७६ आर्द्रमांस । ७७ स्त्री सपुत्रा । ७८ वाहन । ७९ प्रदान । ८० विद्या । ८१ पानीय । ८२ पुष्टि । ८३ तुष्टि । ८४ प्रसाद । ८५ उल्लोच । ८६ पूर्णपात्र । ८७ आर्द्रशाखा । ८८ प्रियवाक्य । ८९ श्रीवृक्ष । ९० तालवृंत । ९१ पूजा । ९२ निधि । ९३ नरसहस्र । ९४ गौरी । ९५ गंगा । ९६ सरस्वती । ९७ नर्मदा । ९८ यमुना । ९९ सिद्धपीठ । १०० कीर्त्ति । इति मंगलानि ।

२३) B १ ब्रह्मा । २ विष्णु । ३ महेश्वर । ४ स्कन्द । ५ आदित्य । ६ लोकपाल । ७ अग्नि । ८ अमर । ९ सागर । १० नदी । ११ पर्वत । १२ गगन । १३ ग्रह । १४ गण । १५ गंधर्व । १६ चन्द्र । १७ विनायक । १८ जोतिष । १९ धर्मशास्त्र । २० द्विजवर । २१ वेद । २२ पद्म । २३ प्रदीप । २४ कौस्तुभ । २५ कांचन । २६ रूप्य । २७ ताम्र । २८ घृत । २९ मधु । ३० मद्य । ३१ सिद्धान्त । ३२ चंदन । ३३ सितवस्त्र । ३४ वेश्या । ३५ रोचना । ३६ मृत्तिका । ३७ गोमय । ३८ शंख । ३९ अंजन । ४० ओषध । ४१ अक्षत । ४२ रत्नमणि । ४३ मोदक । ४४ शंख । ४५ प्रियंगु । ४६ जव । ४७ श्वेतपुष्प । ४८ सर्षप । ४९ दधि । ५० आम्र । ५१ उदंबर । ५२ छत्र । ५३ हस्ति । ५४ बीजपूरक । ५५ मुक्ताफल । ५६ दूर्वा । ५७ खंजरीट । ५८ वृषभ । ५९ ध्वज । ६० हंस । ६१ कन्या । ६२ दर्पण । ६३ मत्स्य । ६४ तुरंगम । ६५ गीत । ६६ वीणा । ६७ ध्वनि । ६८ सिंह । ६९ मेघ । ७० स्वस्ति । ७१ तोरण । ७२ कुंभ । ७३ चामर । ७४ गौ सवत्सा । ७५ आर्द्रमांस । ७६ स्त्री सपुत्रा । ७७ वाहन । ७८ प्रदान । ७९ विद्या । ८० पानीय । ८१ पुष्टि । ८२ तुष्टि । ८३ प्रसाद । ८४ उल्लोच । ८५ पूर्णपात्र । ८६ आर्द्रशाखा । ८७ प्रियवाक्य । ८८ श्रीवृक्ष । ८९ तालवृंत । ९० पूजा । ९१ निधि । ९२ नरसहस्र । ९३ गौरी । ९४ गंगा । ९५ सरस्वती । ९६ नर्मदा । ९७ यमुना । ९८ कमला । ९९ सिद्धपीठ । १०० कीर्ति । इति मंगलानि ।

२३) C १ ब्रह्मा । २ विष्णु । ३ महेश । ४ स्कन्द । ५ आदित्य । ६ लोकपाल । ७ अग्निपाल । ८ अमर । ९ सागर । १० नदी । ११ पर्वत । १२ गगन । १३ ग्रहण । १४ गांधर्व । १५ चंद्र । १६ विनायक । १७ ज्योति । १८ तीर्थाधि । १९ धर्मशास्त्र । २० वेद । २१ पद्म । २२ पर्वत । २३ कौस्तुभ । २४ कांचन । २५ भूमि । २६ रूप्य । २७ ताम्र । २८ घृत । २९ मद्य । ३० मधु । ३१ सिद्धान्त । ३२ चंदन । ३३ श्वेतवस्त्र । ३४ वेश्या । ३५ गोरोचन । ३६ मृत्तिका । ३७ गोमय । ३८ वस्त्र । ३९ अजन । ४० ओषध ।

४१ रत्न । ४२ अन्न । ४३ मोदक । ४४ शङ्ख । ४५ प्रियङ्गु । ४६ वाक । ४७ श्वेतपुष्प । ४८ सर्षप । ४९ दधि । ५० दूर्वा । ५१ अक्षत । ५२ उदुंवर । ५३ आम्र । ५४ छत्र । ५५ वाद्य । ५६ दर्भ । ५७ हस्ति । ५८ वाजि । ५९ मुक्ताफल । ६० खंजरीट । ६१ वृषभ । ६२ राजहंस । ६३ कन्या । ६४ दर्पण । ६५ दीप । ६६ अंकुश । ६७ गो सवत्सा । ६८ आर्द्रमांस । ६९ वेणु । ७० वीणा । ७१ ध्वनि । ७२ सिंह । ७३ मेघ । ७४ स्वस्तिक । ७५ तोरण । ७६ कुंभ । ७७ चामर । ७८ विद्युत् । ७९ गीत । ८० मत्स्य । ८१ स्त्रीपुरुष । ८२ सपुत्रा स्त्री । ८३ वाहन । ८४ विद्या । ८५ पानीय । ८६ पुष्टि । ८७ तुष्टि । ८८ पूर्णकलश । ८९ प्रसाद । ९० उल्लोच । ९१ मंदिर । ९२ शय्या । ९३ पूर्णपात्र । ९४ आर्द्रशाक । ९५ पिप्पलपत्र । ९६ गंगा । ९७ यमुना । ९८ श्रीवृक्ष । ९९ पूजाविधि । १०० निधि । १०१ सिद्धि । १०२ जीति । १०३ कीर्ति । १०४ गौरी । १०५ यशश्चेति ।

२३) E १ ब्रह्मा । २ विष्णु । ३ महेश्वर । ४ चंद्र । ५ सूर्य । ६ लोकपाल । ७ अग्निपाल । ८ अमर । ९ सागर । १० नदी । ११ पर्वत । १२ गगन । १३ ग्रहण । १४ गंधर्व । १५ नायक । १६ स्वज्योतिष । १७ तीर्थ । १८ द्विजवर । १९ धर्मशास्त्रविद् । २० सत्पथ । २१ कौस्तुभ । २२ कांचन । २३ रूप्य । २४ ताम्र । २५ मधु । २६ मद्य । २७ सिद्धान्त । २८ चंदन । २९ श्वेतवस्त्र । ३० वेश्या । ३१ गोरोचन । ३२ मृत्तिका । ३३ गोमय । ३४ शास्त्र । ३५ भाजन । ३६ ओषधी । ३७ कमल । ३८ मद्य । ३९ शय्या । ४० पोत । ४१ प्रियवाक्य । ४२ प्रीति । ४३ रत्न । ४४ मणिशाला । ४५ मोदक । ४६ शंख । ४७ प्रियंगु । ४८ वचा । ४९ श्वेतपुष्प । ५० सर्षप । ५१ दधि । ५२ दूर्वा । ५३ अक्षत । ५४ चंदन । ५५ वंदन । ५६ माला । ५७ उदुंबर । ५८ आम्ल । ५९ छत्र । ६० वादित्र । ६१ हस्ति । ६२ बीजपूर । ६३ मुक्ताफल । ६४ खंजरीट । ६५ वृषभ । ६६ हंस । ६७ कन्या । ६८ दर्पण । ६९ पीठ । ७० कुश । ७१ तुरंगम । ७२ गीत । ७३ वेणु । ७४ सिंह । ७५ मेष । ७६ मेघ । ७७ स्वस्तिक । ७८ तोरण । ७९ कुंभ । ८० चामर । ८१ सवत्सा गौ । ८२ आर्द्रमांस । ८३ स्त्रीपुत्र । ८४ वाहन । ८५ विप्रदान । ८६ विद्या । ८७ आर्द्रामलक । ८८ आसिप । ८९ पिप्पल । ९० श्रीवृक्ष । ९१ तालवृक्ष । ९२ पूजा । ९३ निधि । ९४ नगरनायक । ९५ गौरी । ९६ गंगा । ९७ सरस्वती । ९८ यमुना । ९९ नर्मदा । १०० प्रसिद्धा । १०१ कीर्तयश्चेति मंगलम् ।

२३) F १ ब्रह्मा । २ विष्णु । ३ माहेश्वर । ४ वीतराग । ५ स्कन्द । ६ आदित्य । ७ लोकपाल । ८ गान्धर्व । ९ चंच । १० विनायक । ११ ज्योतिष्क । १२ तीर्थ । १३ द्विज । १४ धर्मशास्त्र । १५ वेदशास्त्र । १६ पुराण । १७ पद्म । १८ पर्यंक । १९ कौस्तुभ । २० कांचन । २१ रूप्य । २२ ताम्र । २३ घृत । २४ मद्य । २५ मधु । २६ सिद्धांत । २७ श्वेतांबर । २८ गोरोचन । २९ मृत्तिका । ३० अग्नि । ३१ अमर । ३२ सागर । ३३ नदी । ३४ पर्वत । ३५ गगन । ३६ ग्रहण । ३७ गोमय । ३८ शस्त्र । ३९ अंजन । ४० ओषधीरत्न । ४१ मनशाला । ४२ मोदक । ४३ संरक । ४४ वाजित्र । ४५ प्रियंगु । ४६ श्वेतपुष्प । ४७ सर्षप । ४८ दधि । ४९ दूर्वा । ५० अक्षत । ५१ आम्र । ५२ उदुम्बर । ५३ छत्र । ५४ वाजित्र । ५५ दर्भ । ५६ हस्ति । ५७ बीजपूर । ५८ मुक्ताफल । ५९ खञ्जरीट । ६० वृषभ । ६१ राजहंस ।

६२ कन्या। ६३ दर्पण। ६४ प्रदीप। ६५ अंकुश। ६६ तुरंग। ६७ गीत। ६८ वेणु। ६९ वीणा। ७० ध्वनि। ७१ भूमि। ७२ सह। ७३ मेघ। ७४ स्वस्तिक। ७५ तोरण। ७६ कुंभ। ७७ चमर। ७८ सवैत्य। ७९ गौ। ८० आर्द्रमांस। ८१ स्त्रीपुरुषजुग्म। ८२ वाहन। ८३ प्रदान। ८४ विद्या। ८५ पानीय। ८६ तुष्टि। ८७ पुष्टि। ८८ प्रसाद। ८९ उल्लास। ९० मदिरा। ९१ सैन्य। ९२ घोर्णपात्र। ९३ आर्द्रशाक। ९४ पिप्पलपत्र। ९५ श्रीवृक्ष फल। ९६ तालवृक्ष। ९७ पूजा। ९८ निधि। ९९ गौरी। १०० गंगा। १०१ सरस्वती। १०२ नर्मदा। १०३ यमुना। १०४ तप्ती। १०५ गोदावरी। १०६ सिद्धि। १०७ प्रीति। १०८ कीर्त्तयश्चेति।

२३) G १ ब्रह्मा। २ विष्णु। ३ महेश्वर। ४ स्कन्द। ५ आदित्य। ६ लोकपाल। ७ अग्नि। ८ अमर। ९ सागर। १० नदी। ११ पर्वत। १२ गगन। १३ ग्रह। १४ गण। १५ गंधर्व। १६ चंद्र। १७ विनायक। १८ ज्योतिष। १९ धर्म। २० शास्त्र। २१ द्विजवर। २२ वेद। २३ पद्म। २४ प्रदीप। २५ कौस्तुभ। २६ कांचन। २७ रूप्य। २८ ताम्र। २९ घृत। ३० मधु। ३१ मद्य। ३२ सिद्धांत। ३३ चंदन। ३४ तिलपत्र। ३५ वेश्या। ३६ रोचना। ३७ मृत्तिका। ३८ गोमय। ३९ शस्त्र। ४० अंजन। ४१ औषध। ४२ अक्षत। ४३ रत्नमणि। ४४ मोदक। ४५ शंख। ४६ प्रियंगु। ४७ जव। ४८ श्वेतपुष्प। ४९ सर्षप। ५० दधि। ५१ आम्र। ५२ उदुम्बर। ५३ छत्र। ५४ वादित्र। ५५ हस्ति। ५६ बीजपूरक। ५७ मुक्ताफल। ५८ दूर्वा। ५९ खंजरीट। ६० वृषभ। ६१ ध्वज। ६२ हंस। ६३ कन्या। ६४ दर्पण। ६५ मत्स्य। ६६ तुरंगम। ६७ गीत। ६८ वीणा। ६९ ध्वनि। ७० सिंह। ७१ मेघ। ७२ स्वस्ति। ७३ तोरण। ७४ कुंभ। ७५ चामर। ७६ गौ। ७७ सवत्सा। ७८ आर्द्र। ७९ मांस। ८० स्त्री सपुत्रा। ८१ वाहन। ८२ प्रदान। ८३ विद्या। ८४ पानीय। ८५ पुष्टि। ८६ तुष्टि। ८७ प्रसाद। ८८ उद्योत। ८९ पूर्णपात्र। ९० आर्द्रशाखा। ९१ प्रियवाक्य। ९२ श्रीवृक्ष। ९३ तालवृंत। ९४ पूजानिधि। ९५ नरसहस्र। ९६ गौरी। ९७ गंगा। ९८ सरस्वती। ९९ नर्मदा। १०० यमुना। १०१ कमला। १०२ सिद्धपीठकीर्त्ति। इति मंगलानि।

२४. त्रिविधं दानम्।

१ अभयदान। २ उपकारदान। ३ द्रव्यदान। इति दानानि।

२४) C adds चेति after दानानि।
D उभयदान। पूर्णदान। उपायकरदान।
E द्रव्यविद्यादिदानं।
L अभय उपकारद्रव्य।

२५. पञ्चविधं यशः।

१ ज्ञानकृत। २ प्रतापकृत। ३ पराक्रमकृत। ४ सदाचारकृत। ५ रूपकृत। इति।

२५) A १ ज्ञानकृतयश। २ प्रतापयश। ३ पराक्रमयश। ४ सदाचारयश। ५ वर्णन।
B १ ज्ञानकृतयश। २ प्रतापयश। ३ सदाचारयश। ४ पराक्रमयश। ५ वर्णन।
C १ ज्ञानकृतं। २ प्रतापकृतं। ३ पराजयकृतं। ४ जन्मकृतं। ५ सदाचारवर्तितमिति।
D १ जनतन्वतां यशः। २ प्रतापः। ३ कीर्ति। ४ पराक्रमः। ५ रूपसदाचारवर्णकृतश्चेति।
E १ जन्मरूपं। २ बालकृतं। ३ प्रतापकृतं। ४ कीर्त्तिरूपं। ५ पराक्रमरूपं।
G १ ज्ञानकृतयश। २ प्रतापयश। ३ पराक्रमयश। ४ सदाचारयश। वर्णन।

*

२६. सप्तविधा कीर्त्तिः।

१ दानकीर्ति। २ पुण्यकीर्ति। ३ काव्यकीर्ति। ४ वक्तृत्वकीर्ति। ५ वर्तनकीर्ति। ६ शौर्यकीर्ति। ७ विद्वज्जनकीर्ति। इति।

२६) AB १ दानकीर्ति। २ पुण्य। ३ वर्तन। ४ विज्ञान। ५ काव्य। ६ वकृत्व।
D १ दानकीर्तिः। २ पुण्यकीर्ति। ३ विद्वज्जनकीर्ति। ४ वकृत्वकीर्ति। ५ काव्यकीर्ति। ६ वर्तनकीर्ति। ७ सूर्यकीर्ति।
E १ दानकीर्ति। २ पुण्यकीर्ति। ३ विद्वज्जनसंगतिकीर्ति। ४ वकृत्वकीर्ति। ५ काव्यवर्तन। ६ शौर्य। ७ गीतिकीर्त्तिश्चेति।
F १ दानकीर्ति। २ पुण्यकीर्ति। ३ द्विविधजनकीर्ति। ४ वक्रोक्तिकीर्ति। ५ काव्यकीर्ति। ६ आवर्तनकीर्ति। ७ शौर्यकीर्तिः।
G १ दानकीर्ति। २ पुण्य। ३ वर्तन। ४ विज्ञान। ५ काव्य। ६ वकृत्व।

*

२७. नव रसाः।

१ शृङ्गार। २ हास्य। ३ करुण। ४ रौद्र। ५ वीर। ६ भयानक। ७ बीभत्स। ८ अद्भुत। ९ शान्त.—इति रसाः।

1 A B D G अष्टौ रसाः।
E नव नाट्यरसाः।
C omits this Sūtra and Vivaraṇa.

2 AB शान्तरस।
D शान्ताश्च।
E शांत इति।
F शांत नवधा रसाः।

*

२८. एकोनपञ्चाशद् भावाः ।

१ रति। २ हास्य। ३ उत्साह। ४ विस्मय। ५ क्रोध। ६ शोक। ७ जुगुप्सा। ८ भय। ९ स्तंभ। १० स्वरभेद। ११ स्वेद। १२ रोमांच। १३ वेपथु। १४ विवर्ण। १५ अश्रु। १६ प्रलय। १७ निर्वेद। १८ ग्लानि। १९ शंका। २० असूया। २१ मूढ। २२ श्रम। २३ आलस्य। २४ दैन्य। २५ चिंता। २६ मोह। २७ स्मृति। २८ धृति। २९ क्रीडा। ३० चपलता। ३१ जडता। ३२ आवेश। ३३ हर्ष। ३४ विवाद। ३५ असुख। ३६ गर्व। ३७ अपस्मार। ३८ निद्रा। ३९ सुप्ता। ४० विबोध। ४१ अवभिपा(?हित्थ)। ४२ उग्रता। ४३ उन्माद। ४४ मति। ४५ व्याधि। ४६ विरक्त। ४७ वितर्क। ४८ त्रास। ४९ मरण। इति।

---

२८) AB १ रति। २ हास। ३ उत्साह। ४ विस्मय। ५ क्रोध। ६ शोक। ७ जुगुप्सा। ८ भय। ९ स्तंभ। १० स्वेद। ११ स्ववृत्ति। १२ व्रीडा। १३ चपलता। १४ हर्षता। १५ जडता। १६ मति। १७ गूढ। १८ आवेग। १९ विषाद। २० औत्सुक्य। २१ गर्व। २२ अपस्मार। २३ निद्रा। २४ सुप्त। २५ विबोध। २६ अमर्ष। २७ उन्माद। २८ उग्रता। २९ व्याधि। ३० वितर्क। ३१ त्रास। ३२ स्वरभेद। ३३ रोमांच। ३४ वेपथु। ३५ वैवर्ण्य। ३६ अश्रु। ३७ निर्वेद। ३८ ग्लानि। ३९ शंका। ४० श्रम। ४१ आलस्य। ४२ दैन्य। ४३ चिंता। ४४ मोह। ४५ स्मृति। ४६ अवहित्थ। ४७ विदाघ। ४८ प्रलाप। ४९ मरणांत। इति भावाः।

२८) C १ रति। २ हास। ३ उत्साह। ४ विस्मय। ५ शोक। ६ क्रोध। ७ ग्लानि। ८ शंका। ९ श्रम। १० आलस्य। ११ चिंता। १२ मोह। १३ स्मृति। १४ धृति। १५ क्रीडा। १६ चपलता। १७ जडता। १८ हर्ष। १९ आवेश। २० विषाद। २१ असुख। २२ गर्व। २३ अपस्मार। २४ निद्रा। २५ स्वपन। २६ बोध। २७ अमर्ष। २८ उग्रता। २९ उन्माद। ३० मति। ३१ व्याधि। ३२ विरक्ति। ३३ वितर्क। ३४ संतोष। ३५ विचार। ३६ विध्वंस। ३७ विक्षेप। ३८ विपत्ति। ३९ व्यावृत्ति। ४० प्रशंसा। ४१ कारुण्य। ४२ दंभ। ४३ मान। ४४ उद्योत। ४५ नीरसता। ४६ तितिक्षा। ४७ त्रास। ४८ मरण। चेति।

२८) E १ रति। २ हास। ३ शोक। ४ क्रोध। ५ उत्साह। ६ भय। ७ जुगुप्सा। ८ विस्मय। ९ शम। १० स्तंभ। ११ स्वेद। १२ स्वरभेद। १३ रोमांच। १४ वेपथु। १५ विवर्ण। १६ अश्रु। १७ प्रलाप। १८ निर्वेद। १९ ग्लानि। २० शंका। २१ असूया।

२२ मद। २३ प्रमोद। २४ आश्रम। २५ आलस। २६ दैन्य। २७ चिंता। २८ मोह। २९ स्मृति। ३० धृति। ३१ क्रीडा। ३२ चपलता। ३३ जडता। ३४ हर्ष। ३५ मति। ३६ मूढ। ३७ आवेश। ३८ विषाद। ३९ असुख। ४० औत्सुक्य। ४१ गर्व। ४२ अपस्मार। ४३ निद्रा। ४४ स्वप्न। ४५ विबोध। ४६ अमर्ष। ४७ उत्सर्गः।

२८) F १ रति। २ हास। ३ शोक। ४ क्रोध। ५ उत्साह। ६ भय। ७ जुगुप्सा। ८ विस्मय। ९ स्तम्भ। १० स्वेद। ११ स्वरभेदाः। १२ रोमाञ्चाः। १३ वेपथु। १४ विवर्णता। १५ अश्रु। १६ प्रलाप। १७ निर्वेद। १८ ग्लानि। १९ शंका। २० असूया। २१ आश्चर्य। २२ आलस्य। २३ देदय। २४ चिंता। २५ दैन्य। २६ अशौच। २७ मद। २८ श्रम। २९ मोह। ३० स्मृति। ३१ धृति। ३२ व्रीडा। ३३ च[प]लता। ३४ जडता। ३५ हर्ष। ३६ आवश्य। ३७ विषाद। ३८ असुख। ३९ गर्व। ४० उत्सुक्य। ४१ अपस्मार। ४२ निद्रा। ४३ स्वप्न। ४४ विबोध। ४५ अमर्ष। ४६ उग्रता। ४७ उन्मद। ४८ मति। ४९ व्याधि। ५० रक्त। ५१ वितर्क। ५२ त्रास। ५३ मरणं। चेति।

२८) G १ रति। २ हास। ३ उत्साह। ४ विस्मय। ५ क्रोध। ६ शोक। ७ जुगुप्सा। ८ भय। ९ स्तंभ। १० स्वेद। ११ स्वभृत्ति। १२ व्रीडा। १३ चपलता। १४ हर्षता। १५ जडता। १६ मतिमूढ। १७ आवेग। १८ विषाद। १९ औत्सुक्य। २० गर्व। २१ अपस्मार। २२ निद्रा। २३ सुप्त। २४ विबोध। २५ अमर्ष। २६ उन्माद। २७ उग्रता। २८ व्याधि। २९ रत्र। ३० तर्क। ३१ त्रास। ३२ स्वरभेद। ३३ रोमांच। ३४ वेपथु। ३५ वैवर्ण्य। ३६ अस्रु। ३७ प्रलाप। ३८ निर्वेद। ३९ ग्लानि। ४० शंका। ४१ श्रम। ४२ आलस्य। ४३ दैन्य। ४४ चिंता। ४५ मोह। ४६ स्मृति। ४७ अवहित्थ। ४८ विदाध। ४९ मरणांत। इति भावाः।

*

२९. *चत्वारोऽभिनयाः।

*

३०. चतस्रो वृत्तयः।

१ सात्त्वती। २ भारती। ३ कैशिकी। ४ आरभटी। इति।

---

३०) A १ सात्त्वती। २ भारती। ३ कैशकी। ४ आरभटी।
B १ सात्त्वती। २ भारती। ३ कौशकी। ४ आरभटी।
C १ भारती। २ शाश्वती। ३ कौशिकी। ४ आरभटी चेति।
D १ सात्यिकी। २ भारती। ३ कैशिकी। ४ आरभटी चेति।
E १ भारती। २ सारस्वती। ३ कौशिकी। ४ आर्भटी।
F १ भारती। २ सात्यिकी। ३ कौशिकी। ४ आरभटी।
G १ सावत्ती। २ भारती। ३ कैशकी। ४ आभरटी।

---

* There is no Vivarana of this sūtra given in the Mss. though the sūtra is mentioned in the contents.

1 E drops चतस्रो वृत्तयः।

३१. चत्वारो महानायकाः ।

१ धीरोद्धत । २ धीरोदात्त । ३ धीरललित । ४ धीरशान्त । इति ।

३१) A १ धीर । २ धीरोदात्त । ३ धीरललित । ४ उद्धत ।
B १ धीर । २ उद्धत । ३ धीरोदात्त । ४ धीरललित ।
C 1 gives no Vivaraṇa
DEF १ धीरोद्धत । २ धीरोदात्त । ३ धीरललित ।[1] ४ धीरोपशांत ।
G १ धीर । २ उद्धत । ३ धीरोदात्त । ४ धीरललित ।

*

३२. चत्वारो नायकाः ।

१ अनुकूल । २ दक्षिण । ३ शठ । ४ धृष्ट । इति ।

३२) C १ अनुकूल । २ दक्षिण । ३ धृष्ट । ४ पडक्ष ।
D १ दक्षिणः । २ अनुकूल । ३ शिव । ४ धृष्टश्चेति ।
E १ दक्ष । २ अनुकूल । ३ शठ । ४ धृष्टश्चेति ।
F १ अनुकूल । २ दक्ष । ३ शत । ४ धृष्टश्चेति ।

*

३३. द्वात्रिंशद् नायकगुणाः ।

१ कुलीन । २ शीलवान् । ३ वयस्थ । ४ शूरवान् । ५ संततव्यय । ६ प्रीतिवान् । ७ सुराग । ८ सावयववान् । ९ प्रियंवद । १० कीर्तिवान् । ११ त्यागी । १२ विवेकी । १३ शृङ्गारवान् । १४ अभिमानी । १५ श्लाघ्यवान् । १६ समुज्वलवेपः । १७ सकलकलाकुशल । १८ सत्त्ववंत । १९ प्रिय । २० अवदान । २१ सुजन । २२ सुगंध । २३ सुवृत्तमंत्र । २४ क्लेशसह । २५ प्रदक्षपथ्यः । २६ पंडित । २७ उत्तमसत्य । २८ धर्मिष्ठमहोत्साही । २९ गुणग्राही । ३० सुपात्रग्राही । ३१ क्षमी । ३२ परिभावक । इति ।

1 A G °नायक ।
B °नायिक ।
2 G नायिकाः
3 A द्वात्रिंशद्गुणनायक ।; E द्वात्रिंशद्गुणो नायकः ।; F द्वात्रिंशद्गुणो नायकः ।

३३) A १ कुलीन। २ शीलवान्। ३ वयस्थ। ४ शौचवान्। ५ स्वतंत्र। ६ सावयव। [redacted] प्रीतिमान्। ८ प्रियंवद। ९ सुभग। १० सत्यवान्। ११ कीर्तिवान्। १२ त्यागी। १३ विवेकी। १४ शृङ्गारी। १५ अभिमानी। १६ श्लाघावान्। १७ समुज्वलवेष। १८ शयाङ्गी। १९ सकलकलाकुशल। २० सत्यासवह। २१ श्रद्धान। २२ सुगंध। २३ सुवृत्त। २४ मंत्र। २५ क्लेशसह। २६ भाषापंडित। २७ उत्तमसत्व। २८ धर्मिष्ठ। २९ महोत्साह। ३० गुणग्राही। ३१ क्ष(?क्ष)मी। ३२ परिभावुक।

३३) B १ कुलीन। २ शीलवान्। ३ वयस्थ। ४ शौचवान्। ५ स्वतंत्र। ६ सावयव। ७ प्रीतिमान्। ८ प्रियंवद। ९ सुभग। १० सत्यवान्। ११ कीर्तिमान्। १२ त्यागी। १३ विवेकी। १४ शृङ्गारी। १५ अभिमानी। १६ श्लाघ्यवान्। १७ समुज्वलवेषः। १८ शयाङ्ग। १९ सकलकलाकुशल। २० सत्यावसह। २१ श्रद्धावान्। २२ सुगंध। २३ सुवृत्त। २४ मंत्र। २५ क्लेशसह। २६ भाषापंडित। २७ उत्तमसत्व। २८ धर्मिष्ठ। २९ महोत्साह। ३० गुणग्राही। ३१ क्षमी। ३२ परिभावुकः।

३३) E १ कुलीन। २ शीलवान्। ३ वयस्थ। ४ शौचवान्। ५ प्रियंवद। ६ संततव्यय। ७ प्रीतमना। ८ सुभग। ९ विनयवान्। १० त्यागी। ११ विवेकी। १२ शृङ्गारवान्। १३ अभिमान। १४ श्लाघ्य। १५ समुज्वलवेष। १६ सकलकलाकुशल। १७ सत्यवान्। १८ प्रियः। १९ सुवृत्तः। २० अवदात। २१ स्वजन। २२ सुहृद। २३ [श्रद्]धान। २४ सुगंधप्रिय। २५ मंत्रवान्। २६ क्लेशसह। २७ प्रवक्ता। २८ प्रकाशकः। २९ पंडित। ३० उत्तम। ३१ ससत्व। ३२ धार्मिक। ३३ महोत्साही। ३४ गुणग्राही। ३५ क्षमा[वान्]। ३६ परिभाषिकश्चेति।

३३) F १ कुलीन। २ शीलवान्। ३ वयस्थ। ४ शौचवान्। ५ संततव्ययी। ६ प्रतिभावान्। ७ शुभग। ८ विनयवान्। ९ कीर्तिमान्। १० त्यागी। ११ विवेकी। १२ शृङ्गारी। १३ अभिमानी। १४ श्लाघावान्। १५ समुज्वलवेष। १६ सकलकलाकुशल। १७ सत्यवान्। १८ प्रिय। १९ अवदात। २० स्वजनप्रियः। २१ सुगंधप्रियः। २२ सुवृत्त। २३ मंत्रवान्। २४ क्लेशापहारी। २५ प्रवक्ताप्रकाशकः। २६ पंडितसत्तम। २७ उत्तमसत्तम। २८ धार्मिक। २९ महोत्साही। ३० गुणग्राही। ३१ क्षमी। ३२ परिभावकश्चेति।

३३) G १ कुलीन। २ शीलवान् ३ वयस्थ। ४ शौचवान्। ५ स्वतंत्र। ६ सावयव। ७ प्रीतिमान्। ८ प्रियंवद। ९ सुभग। १० सत्यवान्। ११ त्यागी। १२ विवेकी। १३ शृंगारी। १४ अभिमानी। १५ श्लाघावान्। १६ समुज्वलवेष। १७ शयाङ्गी। १८ सकलकलाकुशल। १९ सत्यासवह। २० श्रद्धान। २१ सुगंध। २२ सुवृत्त। २३ मंत्र। २४ क्लेशसह। २५ भाषापंडित। २६ उत्तमसत्व। २७ धर्मिष्ठ। २८ महोत्साह। २९ गुणग्राही। ३० क्षमी। ३१ परिभावुक।

\#

३४. त्रिविधा महानायिकाः।

१ स्वकीया। २ परकीया। ३ पण्याङ्गना[1]। इति।

\#

---

1 CE चेति। F पण्याङ्गनाश्चेति।

३५ अष्टौ नायिकाः[1]।

१ वासकसज्जा। २ विरहोत्कण्ठिता। ३ खण्डिता। ४ विप्रलब्धा। ५ प्रोषितभर्तृका। ६ कलहांतरिता। ७ अभिसारिका। ८ स्वाधीनभर्तृका[2]। इति।

३५) A B १ विरहोत्कंठिता। २ खण्डिता। ३ कलहांतरिता। ४ विप्रलुब्ध(?ब्धा)। ५ प्रोषितभर्तृका। ६ अभिसारिका। ७ स्वाधीनपतिका।

३५) C १ वासकसज्जा। २ खंडिता। ३ उत्कंठिता। ४ कलहांतरिता। ५ विप्रलब्धा। ६ प्रोषितभर्तृका। ७ अभिसारिका। ८ स्वाधीनपतिका चेति।

३५) D १ वासकसज्जा। २ विरहोत्कण्ठिता। ३ खंडिता। ४ विप्रलंभा। ५ प्रोषितभर्तृका। ६ कलहांतरिता। ७ अभिसारका। ८ स्वाधीनभर्तृका चेति।

३६. द्वात्रिंशद् नायिकानां गुणाः[3]।

१ सुरूपा। २ सुभगा। ३ सुवेषा। ४ सुरतप्रवीणा। ५ सुनेत्रा। ६ सुखाश्रया। ७ विभोगिनी। ८ विचक्षणा। ९ प्रियभाषिणी। १० प्रसन्नमुखी। ११ पीनस्तनी। १२ चारुलोचना। १३ रसिका। १४ लज्जान्विता। १५ लक्षणयुता। १६ पठितज्ञा। १७ गीतज्ञा। १८ वाद्यज्ञा। १९ नृत्यज्ञा। २० सुप्रमाणशरीरा। २१ सुगंधप्रिया। २२ नातिमानिनी। २३ चतुरा। २४ मधुरा। २५ स्नेहमती। २६ विमर्षमती। २७ गूढमंत्रा। २८ सत्यवती। २९ कलावती। ३० शीलवती। ३१ प्रज्ञावती। ३२ गुणान्विता। इति।

३६) AB १ सुरूपा। २ सुवेषा। ३ सुभगा। ४ सुरतप्रवीणा। ५ सुसत्त्वा। ६ विष(?सुख)श्रिता। ७ विनीता। ८ भोगिनी। ९ विचक्षणा। १० प्रियभाषिणी। ११ प्रसन्नमुखी। १२ पीनस्तनी। १३ चारुलोचना। १४ रसिका। १५ लज्जान्विता। १६ लक्षणयुता। १७ वाक्यज्ञा। १८ गीतज्ञा। १९ नृत्यज्ञा। २० वाद्यज्ञा।

1 A B G नायिका।; C D E नायकाः।

2 F स्वाधीनपतिका।

3 A B द्वात्रिंशद्गुणनायिकाः।, CD द्वात्रिंशद्गुणनायकाः।; E द्वात्रिंशन्नायकानां गुणा।; G द्वात्रिंशद्गुणनायिका।.

२१ सुप्रमाणशरीरा। २२ सुगंधप्रिया। २३ नातिमानिनी। २४ चतुरा। २५ मधुरा। २६ स्नेहवती। २७ विमर्शवती। २८ सुवृतमंत्रा। २९ सत्यवती। ३० प्रज्ञावती। ३१ चैतन्या। ३२ शीलवती। ३३ गुणान्विता।

३६) C १ कुलिना। २ शीलवती। ३ वयस्विनी। ४ प्रियंवदा। ५ श(?सि)तव्यया। ६ प्रीतिमति। ७ सुभगा। ८ सुसत्त्वा। ९ सुवेषा। १० सुविनीता। ११ सुरतप्रवीणा। १२ चारुनेत्रा। १३ सुखप्रिया। १४ विभोगिनी। १५ विचक्षणा। १६ प्रियभाषिणी। १७ प्रसन्नमुखी। १८ पीनस्तनी। १९ रसिका। २० लज्जान्विता। २१ लक्षणयुक्ता। २२ पठितज्ञा। २३ गीतज्ञा। २४ नृत्यज्ञा। २५ वि(?वा)यज्ञा। २६ सुकुमारशरीरा। २७ सुगंधप्रिया। २८ नातिमानिनी। २९ स्नेहवती। ३० गुणान्विता। चेति।

३६) E १ कुष्टि(?लि)नी। २ सुरूपा। ३ सुभगा। ४ समर्था। ५ सुवेषा। ६ सुविनीता। ७ सुरतप्रवीणा। ८ चारुनेत्रा। ९ सुखप्रिया। १० विभोगिनी। ११ विचक्षणा। १२ प्रियभाषिणी। १३ प्रसन्नमुखी। १४ पीनस्तनी। १५ रसिका। १६ लज्जान्विता। १७ लक्षणयुक्ता। १८ पठितज्ञा। १९ गीतज्ञा। २० वाद्यज्ञा। २१ नृत्यज्ञा। २२ सुकुमारशरीरा। २३ सुगंधप्रिया। २४ नातिमानिनी। २५ मधुरवाक्या। २६ स्नेहवती। २७ आचारवती। २८ रूपवती। २९ संभोगवती। ३० गुणवती। ३१ सुशीला। ३२ धर्मज्ञा। चेति।

३६) F १ कुलीना। २ सुभगा। ३ स्वरूपा। ४ सुसत्वा। ५ सुवेषा। ६ सुविनीता। ७ सुरत्न(?त)प्रवीणा। ८ चारुनेत्रा। ९ सुखप्रिया। १० विभोगिनी। ११ विचक्षणा। १२ प्रियभाषिणी। १३ प्रसन्नमुखी। १४ पीनस्तनी। १५ रसिका। १६ लज्जान्विता। १७ लक्षणयुता। १८ गीतज्ञा। १९ वाद्यज्ञा। २० नृत्तज्ञा। २१ सुकुमारशरीरा। २२ सुगन्धप्रिया। २३ नातिमानिनी। २४ मधुरवाक्या। २५ स्नेहवती। २६ ईर्ष्यारहिता। २७ सत्यवती। २८ शीलवती। २९ प्रज्ञावती। ३० सुसंवृत्तशरीरा। ३१ गुणान्विता। चेति।

३६) G १ सुरूपा। २ सुवेषा। ३ सुभगा। ४ सुरतप्रवीणा। ५ सुसत्त्वा। ६ विप(?सुख)श्रुता। ७ विनीता। ८ भोगिनी। ९ विचक्षणा। १० प्रियभाषिणी। ११ प्रसन्नमुखी। १२ पीनस्तनी। १३ चारुलोचना। १४ रसिका। १५ लज्जान्विता लक्षणयुता। १६ वाक्यज्ञा। १७ गीतज्ञा। १८ नृत्यज्ञा। १९ वाद्यज्ञा। २० सुप्रमाणशरीरा। २१ सुगंधप्रिया। २२ नातिमानिनी। २३ चतुरा। २४ मधुरा। २५ स्नेहवती। २६ विमर्शवती। २७ संवृतमंत्रा। २८ सत्यवती। २९ प्रज्ञावती। ३० चैतन्या। ३१ शीलवती। ३२ गुणान्विता।

*

३७. [1]त्रिविधं सौख्यम्।

१ [2]आङ्गिक। २ वाचिक। ३ मानसिक। [3]इति।

३७) F शारीरं। मानसिकं चेति।

*

1 ABG add अथ त्रिविधं।; F द्विविधं।. 2 ABG शारीरिकं।; E कायिकं।. 3 AB drop इति।; CDE मानसिकं चेति।.

३८. चत्वारि सौख्यकारणानि।

१ योगाभ्यासकारणम्। २ अभिमानकारणम्। ३ सम्प्रत्ययकारणम्। ४ विषयकारणम्। इति।

*

३९. नवविधो गंधोपयोगः।

१ तैलाधिवासः। २ जलाधिवासः। ३ वस्त्राधिवासः। ४ मुखाधिवासः। ५ उद्वर्त्तनाधिवासः। ६ विलेपनाधिवासः। ७ स्नानाधिवासः। ८ धूपनाधिवासः। ९ भोजनाधिवासः। इति।

३९) C १ तैलाधिवास। २ पुष्पवास। ३ मुखवास। ४ जलवास। ५ स्नानवास। ६ उद्वर्त्तनवास। ७ धूपनवास। ८ तांबोलवास। ९ भोजनवास।

३९) D १ तैलाधिवासे। २ जलाधिवासे। ३ मुखाधिवासे। ४ स्नाने। ५ उद्वर्तने। ६ उदके। ७ विलेपने। ८ धूपने। ९ भोजने। चेति।

३९) E १ तैलाधिवासः। २ जलाधिवासः। ३ सुरभिजलं। ४ उद्वर्त्तना। ५ धूप। ६ तांबूल। ७ भोजनाधिवासः। ८ वस्त्राधिवासः। ९ मुखाधिवासः।

३९) F १ तैलाधिवासे। २ जलाधिवासे। ३ वस्त्राधिवासे। ४ मुखे। ५ उद्वर्त्तने। ६ स्नाने। ७ विलेपने। ८ धूपने। ९ भोजने। चेति।

*

४०. दशविधं शौचम्।

१ भावशौचं। २ स्नानशौचं। ३ जलशौचं। ४ मृत्तिकाशौचं। ५ श्मश्रुशौचं। ६ संस्कारशौचं। ७ पवित्रवाक्यं। ८ प्राणिदयाशौचं। ९ अर्थशौचं। १० आचारशौचं। इति।

४०) B १ जलशौचं। २ मृत्तिकाशौचं। ३ गंध। ४ श्मश्रु। ५ संस्कार। ६ पवित्रवाक्य। ७ प्राणिदयाशौचं। ८ अर्थशौचं। ९ आचारशौचं।

४०) C १ भावशौचं। २ मुखशौचं। ३ मृत्तिकाशौचं। ४ गंधशौचं। ५ फक्षाशौच। ६ श्मश्रुशौच। ७ स्नानशौच। ८ नखशौच। ९ आनल चेति।

1 A B C D E F omit the Sūtra and its Vivarana.

2 A B G अथ नव°।

3 A B G अथ दश।

४०) D १ मुखशौच । २ कक्षा । ३ कर । ४ श्मश्रु । ५ जल । ६ मृत्तिका । ७ नख । ८ मल । ९ वृत्ति । १० भावशौच ।

४०) E १ मुखशौच । २ स्नानशौच । ३ मृत्तिकाशौच । ४ गंधशौच । ५ कक्षा । ६ श्मश्रु । ७ जल । ८ नख । ९ अनिल । १० सर्वशौच । इति दशविधं शौचम् ।

४०) F १ मुखशौच । २ स्नानशौच । ३ मृत्तिका । ४ कक्षा । ५ गंध । ६ म(?श्म)श्रु । ७ जल । ८ पवित्रभाषण । ९ नख । १० आचारशौच चेति ।

४०) G १ भावशौचं । २ स्नानशौचं । ३ जलशौचं । ४ मृत्तिकाशौचं । ५ गंधश्मश्रु । ६ संस्कार । ७ पवित्रवाक्य । ८ प्राणिदयाशौचम् । ९ अर्थशौचम् । १० आचारशौचम् ।

*

४१. [1]द्विविधः कामः ।

१ स्वाभाविक । २ कृत्रिम । [2]इति ।

*

४२. [3]दश कामावस्थाः ।

१ अभिलाषा । २ चिंता । ३ स्मृति । ४ गुणकीर्तन । ५ उद्वेग । ६ प्रलाप । ७ उन्माद । ८ व्याधि । ९ जडता । १० मरण । इति ।

---

४२) C १ अभिलाषा । २ चिंता । ३ स्मृति । ४ गुणकीर्तन । ५ उद्वेग । ६ उन्माद । ७ व्याधि । ८ जडता । ९ मरणं चेति ।

४२) D १ अभिलाषा । २ चिंता । ३ रस । ४ गुणकीर्त्तन । ५ उद्वेग । ६ प्रलाप । ७ उन्माद । ८ व्याधि । ९ जडता । १० मरणं चेति ।

*

४३. विंशती रक्तस्त्रीणां [4]लक्षणानि ।

१ पूर्वं भाषते । २ दर्शनात्प्रसन्ना भवति । ३ समागमे तुष्यति । ४ संभाषिता हृष्यति । ५ गुणान् सखीजने कथयति । ६ दोषान् प्रच्छादयति । ७ सन्मुखी शेते । ८ पश्चात् स्वपिति । ९ पूर्वमुत्तिष्ठति । १० मित्राणि पूजयति । ११ अमित्राणि द्वेष्टि । १२ प्रोषिते दुर्मना

---

1 A B G अथ द्वि° ।
2 A G कृत्रिमश्च ।
3 F दशविधा कामावस्था ।
4 D लक्षणस्थानानि ।

भवति। १३ स्वधनं ददाति। १४ प्रथममालिङ्गनं करोति। १५ पूर्वमेव चुम्बनं करोति। १६ समदुःखसुखा। १७ स्नेहवती। १८ संभोगार्थिनी। १९ सन्मुखावलोकिनी। २० सदा विनीता।

४३) A B १ पूर्वं भाषते। २ दर्शनात्प्रसन्ना भवति। ३ समागमे तुष्यति। ४ संभाषिता हृष्यति। ५ गुणान् सखीजने कथयति। ६ दोषान् छादयति। ७ सन्मुखी शेते। ८ पश्चात् स्वपिति। ९ पूर्वमुत्तिष्ठति। १० मित्राणि पूजयति। ११ अमित्राणि द्वेष्टि। १२ प्रोषिते दुर्मना भवति। १३ स्वधनं ददाति। १४ प्रथममालिंगयति। १५ पूर्वंचुंबनं करोति। १६ समदुःखसुखावलोकिनी। १७ सदा विनीता। १८ स्नेहवती। १९ संभोगार्थिनी।

४३) C १ पूर्वं भाषितं। २ दर्शनात्प्रसन्ना भवति। ३ समागमे पुष्यति। ४ संभाषिता हृष्टा भवति। ५ सखिजने गुणान् कथयति। ६ दोषान् प्रच्छादयति। ७ सन्मुखी शेते। ८ पश्चाद् स्वपिति। ९ पूर्वमुत्तिष्ठते। १० मित्राणि पूजयति। ११ अमित्राणि द्वेषयति। १२ प्रोषिते दुर्मना। १३ स्वधनं ददाति। १४ प्रथममालिंगनं करोति। १५ चुंबनं ददाति। १६ समदुःखा। १७ स्नेहवती। १८ मिष्टान्नं दात्री। १९ सुवेषा। २० सुभोगार्थिनी चेति।

४३) D १ अर्थानुभाविनी। २ दर्शने प्रसन्ना भवति। ३ समं तुष्यति। ४ संभाविता हृष्यति। ५ गुणान् सखीजने कथयति। ६ दोषान् प्रच्छादयति। ७ सन्मुखी शेते। ८ पश्चात् सुपति। ९ पूर्वमुत्तिष्ठति। १० मित्राणि पूजयति। ११ अमित्राणि द्वेषयति। १२ प्रोषिते दुर्मना भवति। १३ स्वधनं ददाति। १४ प्रथममालिंगनं करोति। १५ पूर्वमेव चुंबनं करोति। १६ समदुःखसुखा। १७ सन्मुखावलोकिनी। १८ स्नेहवती। १९ संभोगार्थिनी चेति।

४३) E १ अर्थानुभाविनी। २ दर्शनात् प्रशांता भवति। ३ संतुष्टा इ(?तुष्य)ति। ४ संभाषणेन हृष्यति। ५ गुणान् प्रकाशयति। ६ स्तनयोः पीडनं। ७ भूषणोद्घाटनं। ८ हसनं। ९ नूपुरोत्कर्षणं। १० कर्णकंडूयनं। ११ केशाकीर्णे। १२ प्रचारणसंयमनं। १३ सखीजने दोषान् प्रच्छादयति। १४ सन्मुखी शेते। १५ पश्चात् स्वपति। १६ पूर्वमुत्तिष्ठति। १७ मित्राणि पूजयति। १८ अमित्राणि द्वेषयति। १९ प्रोषिते दुर्मना भवति। २० स्वधनं ददाति २१ प्रथमं आलिंगनं करोति। २२ पूर्वमेव स्ववचनात् भाषयति। २३ चुंबनं करोति। २४ समदुःखे सदा विनीता। २५ सन्मुखविलोकिनी। २६ स्नेहवती। २७ संभोगार्थिनी।

४३) F १ पूमायात(?र्वं भाषते)। २ दर्शनात् प्रसन्ना भवति। ३ संतुष्टा। ४ संभाषिताद् हृष्यति। ५ गुणान् सखीजनं वदति। ६ दोषान् प्रच्छादयति। ७ सन्मुखी शेते। ८ पश्चात्स्वपिति। ९ पूर्वमुत्तिष्ठति। १० मित्राणि पूजयति। ११ अमित्राणि द्वेष्टि। १२ प्रोषिते दुर्मना। १३ स्वधनं ददाति। १४ प्रथमालिङ्गनं करोति। १५ पूर्वमेव चुंबनं ददाति। १६ समानदुःखा। १७ विनीता। १८ सम्मुखावलोकनी। १९ स्नेहवती। २० संभोगार्थिनी चेति।

४३) G १ पूर्वं भाषते । २ दर्शनात्प्रसन्ना भवति । ३ समागमे तुष्यति । ४ सम्भाषिता हृष्यति । ५ गुणान् सखिजने कथयति । ६ दोषान् छादयति । ७ सन्मुखी शेते । ८ पश्चात् स्वपिति । ९ पूर्वमुत्तिष्ठति । १० मित्राणि पूजयति । ११ अमित्राणि द्वेष्टि । १२ प्रोषिते दुर्मना भवति । १३ स्वधनं ददाति । १४ प्रथममालिंगयति । १५ पूर्वंचुंबनं करोति । १६ समदुःखसुखावलोकिनी । १७ सदा विनीता । १८ स्नेहवती । १९ सम्भोगार्थिनी ।

*

४४. एकविंशतिर्विरक्तस्त्रीणां लक्षणानि ।[1]

१ चुंबिता विमुखं करोति । २ मुखं परिमार्जयति । ३ निष्ठीवति । ४ प्रथमं शेते । ५ पश्चादुत्तिष्ठति । ६ पराङ्मुखी शेते । ७ वाक्यं नावमन्यते । ८ मित्राणि द्वेष्टि । ९ अमित्राणि पूजयति । १० सदा गर्विता भवति । ११ उक्ता कुप्यति । १२ गमने तुष्यति । १३ दुष्कृतं स्मरति । १४ सुकृतं विस्मारयति । १५ दत्तं न मन्यते । १६ दोषान् प्रकटीकरोति । १७ गुणान् प्रच्छादयति । १८ सन्मुखं न पश्यति । १९ दुःखिते सुखिता भवति । २० विप्रियं वदति । २१ संभोगे सुखं न वाञ्छति ।

४४) C १ चुंबने मुखं परिमार्जयति । २ निष्ठीवति । ३ प्रथमं शेते । ४ पश्चादुत्तिष्ठति । ५ सन्मुखी न शेते । ६ मित्राणि द्वेषयति । ७ अमित्राणि पूजयति । ८ गर्विता उत्कथयति । ९ गमने हृष्टा । १० दुष्कृतं स्मरति । ११ सुकृतं विस्मारयति । १२ उक्तं न मन्यते । १३ दोषान् प्रगटीकरोति । १४ गुणानाच्छादयति । १५ सन्मुखं न पश्यति । १६ दुःखिते सानंदा । १७ अप्रियंवदा । १८ संभोगे सुखं नावगच्छति । १९ कोपमुत्पादयति ।

४४) D १ चुम्बिता विमुखं करोति । २ मुखं च परिमार्जयति । ३ निष्ठीवति । ४ प्रथमं शेते । ५ पश्चादुत्तिष्ठति । ६ परान्मुखी शेते । ७ वाचं न मन्यते । ८ मित्राणि द्वेषयति । ९ कुमित्राणि पूजयति । १० गर्विता भवति । ११ उक्ता कुप्यते । १२ गमने तुष्यति । १३ दुष्कृतं स्मरयति । १४ सुकृतं विस्मरयति । १५ दत्तं न मन्यते । १६ दोषान् प्रकटीकरोति । १७ गुणान् प्रच्छादयति । १८ सन्मुखं न पश्यति । १९ विप्रियं वदति । २० दुःखिते सुखिता भवति । २१ संभोगेषु सुखं न वाञ्छति ।

४४) E १ मुखं परिमार्जयति । २ निष्ठीवती । ३ प्रथमं शेते । ४ पश्चादुत्तिष्ठति । ५ पराङ्मुखी शेते । ६ मित्राणि द्वेष्टि । ७ अमित्राणि पूजयति । ८ गर्विता भवति । ९ उक्ता कुप्यति । १० गमने तुष्यति । ११ दुःखिते दुःखिता [न] भवति । १२ विप्रियं

1 A B C D °विंशति विरक्त° ।; °विंशति अरक्त° ।.

भवति। १३ स्वधनं ददाति। १४ प्रथममालिङ्गनं करोति। १५ पूर्वमेव चुम्बनं करोति। १६ समदुःखसुखा। १७ स्नेहवती। १८ संभोगार्थिनी। १९ सन्मुखावलोकिनी। २० सदा विनीता।

४३) A B १ पूर्वं भाषते। २ दर्शनात्प्रसन्ना भवति। ३ समागमे तुष्यति। ४ संभाषिता हृष्यति। ५ गुणान् सखीजने कथयति। ६ दोषान् छादयति। ७ सन्मुखी शेते। ८ पश्चात् स्वपिति। ९ पूर्वमुत्तिष्ठति। १० मित्राणि पूजयति। ११ अमित्राणि द्वेष्टि। १२ प्रोषिते दुर्मना भवति। १३ स्वधनं ददाति। १४ प्रथममालिंगयति। १५ पूर्वंचुंबनं करोति। १६ समदुःखसुखावलोकिनी। १७ सदा विनीता। १८ स्नेहवती। १९ संभोगार्थिनी।

४३) C १ पूर्वं भाषितं। २ दर्शनात्प्रसन्ना भवति। ३ समागमे पुष्यति। ४ संभाषिता हृष्टा भवति। ५ सखिजने गुणान् कथयति। ६ दोषान् प्रच्छादयति। ७ सन्मुखी शेते। ८ पश्चाद् स्वपिति। ९ पूर्वमुत्तिष्ठते। १० मित्राणि पूजयति। ११ अमित्राणि द्वेषयति। १२ प्रोषिते दुर्मना। १३ स्वधनं ददाति। १४ प्रथममालिंगनं करोति। १५ चुंबनं ददाति। १६ समदुःखा। १७ स्नेहवती। १८ मिष्टान्नं दात्री। १९ सुवेषा। २० सुभोगार्थिनी चेति।

४३) D १ अर्थानुभाविनी। २ दर्शने प्रसन्ना भवति। ३ समं तुष्यति। ४ संभाविता हृष्यति। ५ गुणान् सखीजने कथयति। ६ दोषान् प्रच्छादयति। ७ सन्मुखी शेते। ८ पश्चात् सुपति। ९ पूर्वमुत्तिष्ठति। १० मित्राणि पूजयति। ११ अमित्राणि द्वेषयति। १२ प्रोषिते दुर्मना भवति। १३ स्वधनं ददाति। १४ प्रथममालिंगनं करोति। १५ पूर्वमेव चुंबनं करोति। १६ समदुःखसुखा। १७ सन्मुखावलोकिनी। १८ स्नेहवती। १९ संभोगार्थिनी चेति।

४३) E १ अर्थानुभाविनी। २ दर्शनात् प्रशांता भवति। ३ संतुष्टा इ(?तुष्य)ति। ४ संभाषणेन हृष्यति। ५ गुणान् प्रकाशयति। ६ स्तनयोः पीडनं। ७ भूषणोद्घाटनं। ८ हसनं। ९ नूपुरोत्कर्षणं। १० कर्णकंडूयनं। ११ केशकीर्णं। १२ प्रचारणसंयमनं। १३ सखीजने दोषान् प्रच्छादयति। १४ सन्मुखी शेते। १५ पश्चात् स्वपति। १६ पूर्वमुत्तिष्ठति। १७ मित्राणि पूजयति। १८ अमित्राणि द्वेषयति। १९ प्रोषिते दुर्मना भवति। २० स्वधनं ददाति २१ प्रथमं आलिंगनं करोति। २२ पूर्वमेव स्ववचनात् भाषयति। २३ चुंबनं करोति। २४ समदुःखे सदा विनीता। २५ सन्मुखविलोकिनी। २६ स्नेहवती। २७ संभोगार्थिनी।

४३) F १ पूमायात(?पूर्वं भाषते)। २ दर्शनात् प्रसन्ना भवति। ३ संतुष्टा। ४ संभाषिताद् हृष्यति। ५ गुणान् सखीजनं वदति। ६ दोषान् प्रच्छादयति। ७ सन्मुखी शेते। ८ पश्चात्स्वपिति। ९ पूर्वमुत्तिष्ठति। १० मित्राणि पूजयति। ११ अमित्राणि द्वेष्टि। १२ प्रोषिते दुर्मना। १३ स्वधनं ददाति। १४ प्रथमालिङ्गनं करोति। १५ पूर्वमेव चुंबनं ददाति। १६ समानदुःखा। १७ विनीता। १८ सम्मुखावलोकनी। १९ स्नेहवती। २० संभोगार्थिनी चेति।

४३) G १ पूर्वं भाषते । २ दर्शनात्प्रसन्ना भवति । ३ समागमे तुष्यति । ४ सम्भाषिता हृष्यति । ५ गुणान् सखिजने कथयति । ६ दोषान् छादयति । ७ सन्मुखी शेते । ८ पश्चात् स्वपिति । ९ पूर्वमुत्तिष्ठति । १० मित्राणि पूजयति । ११ अमित्राणि द्वेष्टि । १२ प्रोषिते दुर्मना भवति । १३ स्वधनं ददाति । १४ प्रथममालिंगयति । १५ पूर्वंचुंबनं करोति । १६ समदुःखसुखावलोकिनी । १७ सदा विनीता । १८ स्नेहवती । १९ सम्भोगार्थिनी ।

*

४४. एकविंशतिविरक्तस्त्रीणां लक्षणानि ।[1]

१ चुंबिता विमुखं करोति । २ मुखं परिमार्जयति । ३ निष्ठीवति । ४ प्रथमं शेते । ५ पश्चादुत्तिष्ठति । ६ पराङ्मुखी शेते । ७ वाक्यं नावमन्यते । ८ मित्राणि द्वेष्टि । ९ अमित्राणि पूजयति । १० सदा गर्विता भवति । ११ उक्ता कुप्यति । १२ गमने तुष्यति । १३ दुष्कृतं स्मरति । १४ सुकृतं विस्मारयति । १५ दत्तं न मन्यते । १६ दोषान् प्रकटीकरोति । १७ गुणान् प्रच्छादयति । १८ सन्मुखं न पश्यति । १९ दुःखिते सुखिता भवति । २० विप्रियं वदति । २१ संभोगे सुखं न वाञ्छति ।

४४) C १ चुंबने मुखं परिमार्जयति । २ निष्ठीवति । ३ प्रथमं शेते । ४ पश्चादुत्तिष्ठति । ५ सन्मुखी न शेते । ६ मित्राणि द्वेषयति । ७ अमित्राणि पूजयति । ८ गर्विता उत्कथयति । ९ गमने हृष्टा । १० दुष्कृतं स्मरति । ११ सुकृतं विस्मारयति । १२ उक्तं न मन्यते । १३ दोषान् प्रगटीकरोति । १४ गुणानाच्छादयति । १५ सन्मुखं न पश्यति । १६ दुःखिते सानंदा । १७ अप्रियंवदा । १८ संभोगे सुखं नायगच्छति । १९ कोपमुत्पादयति ।

४४) D १ चुम्बिता विमुखं करोति । २ मुखं च परिमार्जयति । ३ निष्ठीवति । ४ प्रथमं शेते । ५ पश्चादुत्तिष्ठति । ६ पराङ्मुखी शेते । ७ वाक्यं न मन्यते । ८ मित्राणि द्वेषयति । ९ कुमित्राणि पूजयति । १० गर्विता भवति । ११ उक्ता कुप्यते । १२ गमने तुष्यति । १३ दुष्कृतं स्मरयति । १४ सुकृतं विस्मरयति । १५ दत्तं न मन्यते । १६ दोषान् प्रकटीकरोति । १७ गुणान् प्रच्छादयति । १८ सन्मुखं न पश्यति । १९ विप्रियं वदति । २० दुःखिते सुखिता भवति । २१ संभोगेषु सुखं न वाञ्छति ।

४४) E १ मुखं परिमार्जयति । २ निष्ठीवती । ३ प्रथमं शेते । ४ पश्चादुत्तिष्ठति । ५ पराङ्मुखी शेते । ६ मित्राणि द्वेष्टि । ७ अमित्राणि पूजयति । ८ गर्विता भवति । ९ उक्ता कुप्यति । १० गमने तुष्यति । ११ दुःखिते दुःखिता [न] भवति । १२ विप्रियं

1 A B C D °विंशति विरक्त° ।; °विंशति भरक्त° ।.

वदति। १३ संभोगसुखं न वांछति। १४ स्वेच्छया विचरति। १५ दुष्कृतं स्मरति। १६ सुकृतं विस्मारयति। १७ दत्तं न मन्यते। १८ दोषान् प्रकटीकरोति। १९ गुणान् प्रच्छादयति। २० सन्मुखं न पश्यति।

४४) F १ चुम्बिता परान्मुखी भवति। २ चुम्बितानन्तरं निष्ठीवति। ३ मुखं च परिमार्जयति। ४ प्रथमं शेते। ५ पश्चादुत्तिष्ठति। ६ पराङ्मुखी शेते। ७ वचनं नावमन्यते। ८ मित्राणि द्वेष्टि। ९ अमित्राणि पूजयति। १० सदैव गर्विता। ११ उक्ता कुप्यति। १२ प्रोषिते तुष्यति। १३ दुष्कृतं स्मारयति। १४ सुकृतं विस्मारयति। १५ दत्तमवमन्यते। १६ दोषान् प्रकटयते। १७ गुणानाच्छादयति। १८ सम्मुखं न पश्यति। १९ दुःखेन दुःखिता न भवति। २० विप्रियं वदति। २१ संभोगं न वद(?वाञ्छ)ति।

*

४५. द्वाविंशतिः कामिनीनां विकारेङ्गितानि।

१ सानुरागनिरीक्षणं। २ श्रवणसंयमनं। ३ अङ्गुलीमोटनं। ४ मुद्रिकाकर्पणं। ५ नूपुरोत्कर्पणं। ६ गुप्ताङ्गदर्शनं। ७ सख्या सह हसनं। ८ भूषणोद्घाटनं। ९ कर्णमोटनं। १० कर्णकंडूयनं। ११ केशप्रकीर्णनं। १२ पुष्पसंयमनं। १३ नखविलेखनम्। १४ परिधानसंयमनं। १५ निश्वासोच्छ्वसनं। १६ प्राग् विजृम्भणं। १७ बालालिङ्गनं। १८ बालमुखचुम्बनं। १९ प्रियभाषणं। २० परोक्षे नामकीर्तनम्। २१ अतिक्रान्तप्रेक्षणम्। २२ गुणव्यावर्णनं। इति।

---

४५) C १ उच्चैर्निष्ठीवती। २ सानुरागा संयमनं। ३ अङ्गुलीस्फोटनं। ४ मुद्रिकार्पणं। ५ गुप्तांगदर्शनं। ६ सख्या सह हसनं। ७ नूपुरोत्कर्पणं। ८ स्तनोपपीडनं। ९ भूषणोद्घाटनं। १० कर्णकंडूयनं। ११ केशप्रकीर्णनं। १२ परिधानसंयमनं। १३ निश्वासोच्छ्वासनं। १४ वागविजृंभणं। १५ बालालिंगनं। १६ बालमुखचुंबनं। १७ प्रियभाषणं। १८ अतिक्रांतप्रेक्षणं। १९ परोक्षनामस्मरणं। २० गुणवर्णनं। २१ विरहवेदना।

४५) D १ सानुरागनिरीक्षणं। २ श्रवणसंयमनं। ३ अंगुलीस्फोटनं। ४ सद्या प्रसन्नं। ५ मुद्रिकाकर्पणं। ६ गुप्तांगदर्शनं। ७ सख्या सह हसनं। ८ भूषणोद्घाटनं। ९ कर्णोत्कर्पणं। १० कर्णकंडूयनं। ११ केशप्रकीर्णनं। १२ पुष्पसंयमनं। १३ नखविलेखनं। १४ परिधानसंयमनं। १५ विश्वासोल्लसनं। १६ प्राग् विजृंभनं। १७ बालालिंगनं। १८ बालमुखचुंबनं। १९ प्रियभाषणं। २० परोक्षे नामकीर्त्तनं।

---

1 A G द्वाविंशत्कामिनीनां ।; B D E द्वाविंशतिकामिनीनां ।; C अथ द्वाविंशति कामिनीनां। 2 ABG मुद्रिका अर्पणं ।. 3 ABG केशप्रक्षरणम्। 4 ABG omit प्राग्। 5 ABG बालचुम्बनं ।; 6 AB परोक्षे नामग्रहणं ।; G omits परोक्षे नामकीर्तनम्।

(४५) E १ उच्चैर्निष्ठीवती । २ सानुरागनिरीक्षणं । ३ श्रवणसंयमनं । ४ अंगुलीस्फोटनं । ५ मुद्रिकाकर्षणं । ६ गुप्तांगदर्शनं । ७ परिधानसंयमनं । ८ निश्वासोश्वा(?च्छ्वा)सनं । ९ प्राक्(?ग्)विजृंभणं । १० वालमुखचुंबनं । ११ प्रियलक्षणं(?श्लेषणं) । १२ अतिकांतप्रेक्षणं । १३ पश्चान्नामसरणं ।

४५) F १ सानुरागनिरीक्षणं । २ श्रवणसंयमनं । ३ अङ्गुल्या मोटनं । ४ मुद्रिकाकर्षणं । ५ गुप्ताङ्गदर्शनं । ६ सख्या सह हसनं । ७ स्तनोपपीडनं । ८ भूषणोद्घाटनं । ९ नूपुरोत्कर्षणं । १० कर्णकण्डूयनं । ११ केशप्रकीर्णनं । १२ प्रावरणसंयमनं । १३ नखविलेखनं । १४ चि(?नि)श्वासोच्छ्वासनं । १५ प्राग् विजृम्भणं । १६ वालालिङ्गनं । १७ वालकमुखचुम्बनं । १८ प्रियश्लेषणं । १९ अतिक्रान्तप्रेक्षणं । २० परोक्षे नामसरणं । २१ गुणव्यावर्णने । २२ संभोगवान्छा चेति ।

*

४६. चतुर्विंशतिरसतीनां लक्षणानि ।

१ द्वारदेशे शायिनी । २ पश्चादवलोकिनी । ३ पुंश्चली सखी । ४ भोगार्थिनी । ५ गोष्ठिप्रिया । ६ राजमार्गाश्रिता । ७ पतिद्वेषिणी । ८ पतिरहिता । ९ हीनाङ्गभार्या । १० मृतापत्या । ११ बहुदेवरालापिनी । १२ बहुदेवतापूजिनी । १३ विनोदप्रिया । १४ भोगिनी [सखी] । १५ अतिमानिनी । १६ कृत्रिमलज्जान्विता । १७ परप्रीतिरता । १८ वृद्धभार्या । १९ सततहास्या । २० प्रोषितभर्तृका । २१ लोभान्विता । २२ बहुभाषिणी । २३ क्रीडनप्रिया । २४ वंध्या । इति ।

४६) A B १ द्वारदेशे शायिनी । २ पाश्चात्यावलोकिनी । ३ पुंश्चली सखी । ४ भोगिनी । ५ गोष्ठिप्रिया । ६ राजमार्गाश्रिता । ७ पतिद्वेषिणी । ८ पतिरहिता । ९ हीनांगभार्या । १० मृतापत्या । ११ बहुदेवरालापिनी । १२ बहुदेवतापूजनी । १३ विनोदकारिणी । १४ भोगार्थिनी । १५ अतिमानिनी । १६ कृत्रिमलज्जान्विता । १७ परप्रीतिरता । १८ वृद्धभार्या । १९ सततहास्या । २० प्रोषितभर्तृका । २१ लोभान्विता । २२ बहुभाषिणी । २३ क्रीडनप्रिया । २४ वंध्या ।

४६) C १ द्वारदेशदायिनी । २ पश्चादवलोकिनी । ३ पुंश्चली । ४ भोगिनी । ५ गोष्ठिप्रिया । ६ राजमार्गमाश्रिता । ७ पतिद्वेषिणी । ८ पतिरहिता । ९ दा(?ही)नयुवतीनां संगिनी । १० जलवाहनीनां संगिनी । ११ विनोदप्रिया । १२ अतिमानिनी । १३ दूरं जलानयने गच्छति । १४ कुंभकाररजकानां संगिनी । १५ कुट्टिनी । १६ कृतत्रिमलज्जान्विता(?कृत्रिमलज्जान्विता) । १७ अप्रणीता । १८ संत(?सतत)हास्या । १९ लोभान्विता । २० बहुभाषिणी । २१ क्रीडनप्रिया । २२ केशसंयाहनप्रियां । २३ आत्मगृहं परित्यज्य परगृहे वार्ता करोति । २४ स्वपतिं परित्यज्य अन्यमाकांक्षति ।

1 A B G अथ चतु० ।, E चतुर्विंशत्यसतीलक्षणानि ।; C D चतुर्विंशति असतीनां लक्षणानि । 2 B पश्चादवलोकनी ।.

४६) D १ द्वारदेशशायिनी । २ पश्चात् पश्चादवलोकिनी । ३ पुंश्चली । ४ भोगिनी । ५ गोष्ठिप्रिया । ६ राजमार्ग(?र्गा)श्रिता । ७ पतिद्वेषिणी । ८ पतिरहिता । ९ हीनांगभार्या । १० मृतवत्सा । ११ देवरजन(?रालापिनी) । १२ गोष्ठिप्रिया । १३ बहुदेवतापूजनं । १४ वि(?सं)भोगार्थिनी । १५ अतिमानिनी । १६ कृत्रिमलज्जान्विता । १७ परप्रीतिरता । १८ वृद्धभार्या । १९ सततहास्या । २० प्रोषितभर्तृका । २१ लोभान्विता । २२ बहुभाषिणी । २३ क्रीडापरा चेति ।

४६) E १ द्वारदेशशायिनी । २ पश्चादवलोकिनी । ३ पुंश्चली । ४ भोगिनी । ५ गोष्ठिप्रिया । ६ राजमार्ग(?र्गा)टिनी । ७ पतिमन्वेषणी(?पतिद्वेषिणी) । ८ पतिरहिता । ९ हीनयुवतीसंगिनी । १० जलवाहिकीनां संगिनी । ११ विनोदप्रिया । १२ प्र(?अ)तिमानिनी । १३ दूराज्जलानयनाय गच्छति । १४ कुंभकाररजकसंगतिं करोति । १५ कृत्रिमलज्जान्विता । १६ परप्रीतिरता । १७ सततं हास्या । १८ विनोदं बहिर्भ्रमति । १९ लोभान्विता । २० बहुभाषिणी । २१ क्रीडणप्रिया । २२ केशसंवाहनप्रिया । २३ आत्मगृहे वार्तां परित्यज्य परगृहे वार्ताकरणाय रसिका । २४ स्वपतिं परित्यज्य परपुरुषान्वेषणं करोतीति ।

४६) F १ द्वारदेशावस्थायनी । २ पश्चात्प्रविलोकनी । ३ पुंश्चलीसखी । ४ भा(?भो)गिनी । ५ गोष्ठिप्रिया । ६ राजमार्गाश्रिता । ७ पतिद्वेषिणी । ८ पतिवर्जिता । ९ हीनयुवतीनां सङ्गिनी । १० गजवाहकानां प्रिया । ११ विनोदप्रिया । १२ अभिमानिनी । १३ दूरे पानीयानयनाय व्रजति । १४ कुम्भकाररजकसंगतिं करोति । १५ कन्दुकासंगतिं करोति । १६ कृत्ति(?त्रि)मलज्जान्विता । १७ परप्रीतिरता । १८ संततहास्या । १९ निर्जने बहिर्गामिनी । २० लोभान्विता । २१ बहुभाषिणी । २२ क्रीडनप्रिया । २३ केशसंवाहनप्रिया । २४ स्वगृहं मुक्त्वान्यगृहे वार्ताकरणाय गच्छति । २५ रसिका । २६ स्वपतिं परित्यज्य परपुरुषान्वेषणं करोति ।

४६) G १ द्वारदेशे शायिनी । २ पाश्चात्यावलोकिनी । ३ पुंश्चलीसखी । ४ भोगिनी । ५ गोष्ठिप्रिया । ६ राजमार्गाश्रिता । ७ पतिद्वेषिणी । ८ पतिरहिता । ९ हीनाङ्गभार्या । १० वंध्या । ११ मृतापत्या । १२ बहुदेवरालापिनी । १३ बहुदेवतापूजनी । १४ विनोदकारिणी । १५ भोगार्थिनी । १६ अतिमानिनी । १७ कृत्रिमलज्जान्विता । १८ परप्रीतिरता । १९ वृद्धभार्या । २० सततहास्या । २१ प्रोषितभर्तृका । २२ लोभान्विता । २३ बहुभाषिणी । २४ क्रीडनप्रिया ।

*

४७. षोडश दुष्टस्त्रीणां लक्षणानि ।

१ पिङ्गाक्षी । २ कूपगल्ला । ३ लम्बोष्ठी । ४ खरालापा । ५ ऊर्ध्वकेशी । ६ लम्बोदरी । ७ दीर्घललाटी । ८ संहितभ्रूः । ९ पुष्पितनखी । १० प्रविरलदशना । ११ अतिदीर्घा । १२ अतिवामना । १३ अतिस्थूला । १४ अतिकृशा । १५ अतिगौरा । १६ अतिकृष्णा । इति ।

1 A G अथ षोडशस्त्रीणामपलक्षणानि ।, B अथ षोडशदुष्टस्त्रीणामपलक्षणानि । C षोडशस्त्रीणां अपलक्षणानि ।; E दुष्टस्त्रीणां षोडशापलक्षणानि ।

४७) A B G १ पिङ्गाक्षी । २ कूपगल्ला । ३ लंबोष्ठी । ४ खरालापा । ५ ऊर्द्ध्वकेशी । ६ दीर्घललाटी । ७ संहितभ्रूः । ८ पुष्पितनखी । ९ प्रविरलदशना । १० अतिदीर्घा । ११ अतीववामनी । १२ अतीवस्थूला । १३ अतीवगौरा । १४ अतीवकृष्णा । १५ अतीवकृशा । १६ प्रलंबोदरी ।

४७) C १ पिंगाक्षी । २ कूपगल्ला । ३ लंबोष्ठी । ४ ऊर्ध्वकेशा । ५ लंबोदरी । ६ दीर्घललाटा । ७ मिलितभ्रु(?भ्रूः) । ८ पुंपितनखी । ९ अतिवश्र(?विरल)दशना । १० अतिदीर्घा । ११ अतिवामना । १२ अतिस्थूला । १३ अतिकृशांगि । १४ अतिगौरा । १५ अतिकृष्णा । १६ अती[व]रोमवतीति ।

४७) D १ पिंगाक्षी । २ कूपगल्ला । ३ लंबोष्ठी । ४ खपलापी । ५ ऊर्द्ध्वकेशी । ६ लंबोदरी । ७ दीर्घललाटा । ८ संगतभ्रू[ः] । ९ पुष्फितमुखी(?पुष्पितनखी) । १० प्रविरलदशना । ११ अतिदीर्घा । १२ अतिवामना । १३ अतिस्थूला । १४ अतिकृशा । १५ अतिगौरा । १६ अतिकृष्णा । चेति ।

४७) E १ पिंगाक्षी । २ कूपगंडा । ३ लंबोष्ठी । ४ उर्द्ध्वकेशी । ५ प्रलंबोदरी । ६ दीर्घललाटा । ७ मिलितभ्रु(?भ्रूः) । ८ पुष्पितनखी । ९ अतिविरलकेशा । १० विरलदशना । ११ अतिदीर्घा । १२ अतिवामना । १३ अतिस्थूला । १४ अतिकृशा । १५ अतिगौरा । १६ अतिरोमवती । १७ भूमिपर्यंतांगुलका । १८ मुक्तकेशा । १९ दीर्घदंता । २० खरदेहा ।

४७) F १ पिंगाक्षी । २ कूपगल्ला । ३ लंबोदरी । ४ लिम्बोष्ठी(?लम्बोष्ठी) । ५ खरालापा । ६ ऊर्ध्वकेशी । ७ दीर्घललाटा । ८ संहितचूचुका । ९ पुष्पितनखी । १० प्रवी(?वि)रलदशना । ११ अतिदीर्घा । १२ दीर्घजङ्घा । १३ अतिस्थूला । १४ अतिकृशा । १५ अतिगौरा । १६ अतिकृष्णा । १७ अतिरोमवती । १८ दीर्घदंता । १९ खरदेहा । २० मुखे(?)किला । २१ भूमिलग्नितपादपूर्वाङ्गुलिकाश्चेति ।

*

४८. अष्टौ[1] स्त्रीणामविश्वासकारणानि ।

१ भर्तुः स्वैरिता । २ पुरुषार्थिनी । ३ प्रण(?णी)तगोष्ठी । ४ निरङ्कुशा । ५ विदेशवासा । ६ अन्यपुरुषं सन्मुखं विलोकयति । ७ यस्य तस्य सन्मुखं हसति । ८ उक्ता सती शपथं करोति । इति ।

४८) ABG १ भर्तुः स्वैरिता । २ पुरुषार्थिनी । ३ प्रण(?णी)तगोष्ठी । ४ निरंकुशा । ५ विदेशवासा । ६ पुंश्चली । ७ पति(?त्यु)रीर्ष्यादोषाः ।

४८) C १ भर्तुः स्वैरं विचरति । २ अन्यपुरुषसन्मुखं विलोकयति । ३ गोष्ठीं करोति । ४ निरंकुशा । ५ यं यं पश्यति तस्य तस्य सन्मुखं विलोकयति । ६ गोष्ठीं करोति(?) । ७ संसर्गं करोति । ८ ईर्षां करोति ।

४८) D १ भर्तृस्वैरिता । २ पुरुषार्थिनी । ३ प्रण(?णी)तगोष्ठी । ४ निरंकुशा । ५ विदेशवासा । ६ सध्यानी समृत्युपघातः(?) । ७ पुंश्चलीसंसर्गजा । ८ दूर्ष्यांकदोषा(?ईर्ष्यादोषा)श्चेति ।

---

1 ABG अष्टौ स्त्रीणां अभिसारिकाणि ।; C अष्टौ अबलानां अविश्वासकारणानि ।; E स्त्रीणां अष्टौ अविश्वासकरणानि ।.

४८) E १ भर्तुः स्वैरं विचरति । २ अन्यपुरुषं सन्मुखं विलोकयति । ३ गोष्ठीं करोति । ४ निरंकुशं करोति । ५ यस्य तस्य सन्मुखं हसति । ६ उक्ता सती यथार्हचरित्रमनुकरोति । ७ अन्यं जल्पति । ८ स्वैरिणीसंसर्गं करोति । ९ पतिं वञ्चयित्वा रात्रौ परपुरुषगृहे गच्छति ।

४८) F १ स्वैरगमा । २ परपुरुषसंमुखं विलोकयति । ३ उक्ता सती शपथान् करोति । ४ अलीकं जल्पति । ५ स्वैरिणीसंसर्गं विदधाति । ६ पत्यौ ईर्ष्यां करोति ।

*

४९. अष्टौ नार्योऽगम्याः ।

१ स्वगोत्रजा । २ गुरुपत्नी । ३ राजपत्नी । ४ मित्रपत्नी । ५ वर्णाधिका । ६ अस्पर्शा । ७ प्रव्रजिता । ८ कुमारी । इति ।

४९) A १ स्वगोत्रजा । २ राजपत्नी । ३ मित्रपत्नी । ४ वर्णाधिका । ५ पूजिता । ६ कुमारी । ७ राजपत्नी ।

४९) B १ स्वगोत्रजा । २ राजपत्नी । ३ मित्रपत्नी । ■ वर्णाधिका । ५ अस्पृशा । ६ पूजिता । ■ कुमारी । ८ गुरु[प]त्नी ।

४९) C १ स्वगोत्रजा । २ गुरुपत्नी । ३ मित्रपत्नी । ४ वयोधिका । ५ राजपत्नी । ६ अस्पर्शा । ७ दोषसंयुक्ता । ८ कुमारी चेति ।

४९) D १ स्वगोत्रजा । २ गुरुपत्नी । ३ राजपत्नी । ४ मित्रपत्नी । ५ वर्णाधिका । ६ अस्पृशा । ७ प्रव्रजिता । ८ कुमारी चेति ।

४९) F १ स्वगोत्रजा । २ गुरुपत्नी । ३ मित्रपत्नी । ४ राजपत्नी । ५ वर्णाधिकी-(?का) ।६ अस्पर्शा । ७ प्रव्रज्या । ८ कुमारी चेति ।

४९) E १ स्वगोत्रजा । २ [पर]पुरुषपत्नी । ३ राजपत्नी । ४ मित्रपत्नी । ५ वर्णाधिका । ६ अस्पर्शा । ७ दोषसंयुक्ता । ८ कुमारिका ।

४९) G १ स्वगोत्रजा । २ राजपत्नी । ३ मित्रपत्नी । ४ वर्णाधिका । ५ पूजिता । ६ कुमारी । ७ राजपत्नी ।

*

५०. अष्टविधो मूर्खः ।

१ निर्लज्जः । २ शठः । ३ क्लीबः । ४ निर्घृणः । ५ व्यसनी । ६ अतिलोभी । ७ गर्वितः । ८ निष्ठुरः इति ।

५०) C १ अप्रस्तावज्ञ । २ कुपंडित । ३ कुबुद्धि । ४ कुव्यसन । ५ स्वभ्रंशी । ६ स्वमर्मप्रकाशी । ७ गर्वित । ८ विष्टर(?निष्ठुर)श्चेति ।

५०) E १ निर्लज्जः । २ शठः । ३ क्लीवः । ४ निर्गुणः । ५ व्यसनी । ६ अतिभोगी । ७ गर्वितः । ८ निष्ठुरः । इति ।

५०) F १ अप्रस्तावी(?) । २ कुपठितः । ३ कुबुद्धिः । ■ कुव्यसनी । ५ निष्ठुरः । ६ स्वमर्मप्रकाशकः । ■ अभिमानी । ८ असंबद्धप्रलापी चेति ।

*

५१. चतुर्विंशतिविधं नागरिकवर्णनम्।

१ नगरे संस्थानं। २ आसन्नोदकभवनं। ३ प्रच्छन्नमहानसं। ४ गुप्तकार्यचिकित्सास्थानं। ५ निकटे नेपथ्यमंडपः। ६ विभक्तं वासभवनं। ७ नेपथ्योपकारप्राचुर्यं। ८ गृहोपकरणबाहुल्यं। ९ शयनासनरम्यत्वं। १० वाञ्छितपरिजनः। ११ पार्श्वे प्रविशा(? वेश)-नस्थानं। १२ मध्ये स्नानपीठं। १३ प्रभाते व्यायामविधानं। १४ मध्याह्ने भोजनविधानं। १५ नित्यमेव विद्याभ्यसनं। १६ कुलोचितविधिना वर्तनं। १७ प्रदोषे गीतादिविनोदविधानं। १८ निशायां स्वदारासुरतं। १९ कदाचिद्गोष्ठीरम्यत्वं। २० कदाचित् पात्रप्रेक्षणं। २१ कदाचिदुद्यानगमनं। २२ माल्यादिभोगकथनं। २३ सदैव ऋतुसमुचितोपभोगः। २४ विद्वज्जनसंसर्गः।

५१) A १ नगरे संस्थानं। २ आसन्नोदकभवनं। ३ प्रच्छन्नमहानसं। ४ गुप्तकार्यचिकित्सास्थानं। ५ निकटे नेपथ्यमंडपः। ६ विभक्तं वासभवनं। ७ नेपथ्योपकारप्राचुर्यं। ८ गृहोपकरणबाहुल्यं। ९ शयनासनरम्यत्वं। १० वाञ्छितपरिजनः पार्श्वे प्रविशा(?वेश)नस्थानं। ११ मध्ये स्नानपीठं। १२ प्रभाते व्यायामविधानं। १३ मध्याह्ने भोजनविधानं। १४ नित्यमेव विद्याभ्यसनं। १५ कुलोचितविधिना वर्तनं। १६ प्रदोषे गीतादिविनोदविधानं। १७ निशायां स्वदारासुरतं। १८ कदाचिद्गोष्ठीरम्यत्वं। १९ कदाचित्पात्रप्रेक्षणं। २० कदाचिद्वि(?दु)द्यानयाव(?यन)गमनं।

५१) B १ नगरे संस्थानं। २ आसन्नो[द्]कभवनं। ३ प्रच्छन्नमहानसं। ४ गुप्तकार्यचिकित्सास्थानं। ५ निकटे नेपथ्यमंडपः। ६ विभक्तं वासभवनं। ७ नेपथ्योपकारप्राचुर्यं। ८ गृहोपकरणबाहुल्यं। ९ शय्यासनरम्यत्वं। १० वाञ्छितपरिजनपार्श्वे प्रविशा(?वेश)नस्थानं। ११ मध्ये स्नानपीठं। १२ प्रभाते व्यायामविधानं। १३ मध्याह्ने भोजनविधानं। १४ नित्यमेव विद्याभ्यसनं। १५ कुलोचितविधिना वर्त्तनं। १६ प्रदोषे गीतादिविनोदविधानं। १७ निशायां स्वदारासुरतं। १८ कदाचित् गोष्ठीरम्यत्वं। १९ कदाचित् पात्रप्रेक्षणं। २० कदाचित् वि(?उ)द्यानवन(?ना)वगमनं। २१ सदैव ऋतुसमुचितोपभोगः।

५१) C १ नगरे संस्थानं। २ आसनो(?न्नो)दकभवनं। ३ गुप्तकार्यचिंता। ४ स्थापनीयपार्श्वपानीयं। ५ सुप्तानेदकं। ६ पृथक् रंधनकं। ७ नेपथ्याग्रहणं। ८ नेपथ्योपप्रकरणं। ९ प्राचुर्यगृहोपकरणं। १० बाहुल्यं रम्यत्वं। ११ माल्यादि भोगमव्यत्वं। १२ गुप्तस्थानं। १३ प्रभाते व्यायामविधानं। १४ मध्याह्ने भोजनविधानं। १५ डाछप्रप्रकारस्थानं(?)। १६ नित्यविद्याभ्यसनं। १७ कुलोचिते मार्गे वर्त्तनीयं। १८ प्रदोषे गीतविनोद।

1 ABC °वर्त्तनं।

१९ निशायां सुरतोपचारः। २० कदाचि[दु]द्यानगमनं। २१ कदाचित् क्षेत्रनिरीक्षणं। २२ सदैव कर्मसूचितो विभाग। २३ पुत्रपौत्रेषु हेतुकरणं।

५१) D १ यथा नगरे स्थानं। २ आसन्नो[द]कभवनं। ३ सवनां(?)प्रच्छादनं। ४ महासनं। ५ परसेव्या गृहमुत्पत्तिच्छाया मित्राणां स्थानस्फोट(?)। ६ नव विश्वमंडपं। ७ विरक्तरक्तवासभवः। ८ नेपथ्यैवकरणं। ९ प्रासार्यगृहे(?) उपकरणबाहुल्यं। १० शय्यासनरम्यत्वं। ११ माल्यादिभोगकथनं। १२ वांछितमित्रजनपार्श्वे आचमन-स्थानं। १३ अंतरे स्थानस्थानं। १४ प्रभाते व्यायामविधानं। १५ मध्ये भोजनं विधानं। १६ नित्यमेव विद्याभ्यसनं। १७ कुलोचितव्यवहरणं। १८ प्रदोषांते गीतविधानं। १९ निशायां सुरतोपचरणं। २० कदाचिद्गोष्ठीरम्य[त्वं]। २१ न(?) कदाचित्पात्रप्रेक्षणं। २२ कदाचिदुद्याने गमनं चेति।

५१) E १ आसन्नोदकाभुवनांतसुसं। २ कार्यचिंतास्थापनं। ३ पार्श्वे पानीयरंधनं। ४ विभक्तं नेपथ्यगृहं। ५ नेपथ्योपकरणं। ६ प्राचुर्यं गृहोपकरणं। ७ प्राचुर्यं गृहप्रकरण-बाहुल्यं। ८ शालबाहुल्यं। ९ आसनबाहुल्यं। १० रम्यत्वमाल्यादिभागभव्यत्वं। ११ गुप्तं स्थानं स्यात्। १२ प्रभाते नियमविधानं। १३ मध्याह्ने भोजनविधानं। १४ प्रच्छन्नभंडारस्थानं। १५ नित्यं विद्याभ्यसनं। १६ कुलोचितेन मार्गेण वर्त्तनीयं। १७ प्रदोषे गीतविनोदः। १८ निशायां सुरतोपचारः। १९ कदाचिदुद्यानगमनं। २० कदाचित् क्षेत्रनिरीक्षणं। २१ सदैव देवगुरुभक्तिः कार्या। २२ स्वजनपालनं। २३ सदैव समुचितवित्तविभागः।

५१) F १ आसन्नोदुःक(?दक)भवनं। २ गुप्तकार्यचिन्तास्थापनं। ३ पार्श्वे पानीयस्य स्थाने रन्धनकं। ४ विमुक्तने मध्यगृहं। ५ नेपथ्योपकरणप्राचुर्यं। ६ गृहोपकरणबाहुल्यं। ७ रम्यत्वं। ८ माल्यादिभोगभावितत्वं। ९ मालादिभोमभव्यत्वं। १० गुप्तस्थानं स्थानस्य। ११ प्रभाते आयामविधानं। १२ मध्याह्ने भोजनविधानं। १३ प्रच्छन्न भण्डारस्थानं। १४ नित्यं विद्याभ्यसनं। १५ कुलोचितेन मार्गेण प्रवर्त्तनीयं। १६ प्रदोषे गीतविनोदः। १७ निशान्ते सुरतोपचारः। १८ कदाचिदुद्यानगमनं। १९ कदाचित्क्षेत्र-निरीक्षणं। २० विद्वज्जनसंसर्गः। २१ कुसंगपरित्यागः। २२ धर्मश्रद्धा। २३ जीवरक्षा। २४ सदैव समुचितोपक्रिया।

५१) G १ नगरे संस्थानं। २ आसन्नोदकभवनं। ३ प्रच्छन्नमहानसं। ४ गुप्तकार्य-चिकित्सास्थानं। ५ निकटे नेपथ्यमंडप। ६ विभक्तं वासभवनं। ७ नेपथ्योपकारप्राचुर्यं। ८ गृहोपकरणबाहुल्यं। ९ शयनासनरम्यत्वं। १० वाञ्छितपरिजनः। ११ पार्श्वे प्रविशा(?वेश)नस्थानं। १२ मध्ये स्नानपीठं। १३ प्रभाते व्यायामविधानं। १४ मध्याह्ने भोजनविधानं। १५ नित्यमेव विद्याभ्यसनं। १६ कुलोचितविधिना वर्त्तनं। १७ प्रदोषे गीतादिविनोदविधानं। १८ निशायां स्वदारासुरतं। १९ कदाचिद्गोष्ठीरम्यत्वं। २० कदा-चित्पात्रप्रेक्षणं। २१ कदाचिद्वि(?दु)द्यानवाव(?वन)गमनं। २२ असम्पूर्णलक्षणावयव।† २३ निर्लक्षण।†

*

५२. [1]त्रिविधं रूपम्।

१ असंपूर्णलक्षणावयवं। २ संपूर्णलक्षणावयवं। ३ निर्लक्षणावयवं। इति।

---

1 A omits त्रिविधं रूपं।

† These ought to be in the following section.

५२) A १ असंपूर्णलक्षणावयवं । २ निर्लक्षण ।
५२) B १ संपूर्णलक्षणावयवं । २ असंपूर्णलक्षणावयवं । ३ निर्लक्षण ।
५२) C १ संपूर्णावयवं । २ निर्लक्षणावयवं । ३ असंपूर्णालक्षणावयवं ।
५२) D १ संपूर्णलक्षणावयवं चेति ।
५२) E १ संपूर्णलक्षणावयवं । २ लक्षणावयवं । ३ असंपूर्णलक्षणावयवं ।
५२) G has given no Vivarana (see foot note p. 54)

*

५३. त्रिविधं स्वरूपम् ।

१ मुग्धस्वभावं । २ चतुरस्वभावं । मुग्धचतुरस्वभावं । इति ।

५३) AB १ मुग्धस्वभाव । २ मुखर । ३ चतुर ।
५३) C १ मुग्धस्वभावं । २ मुग्धचतुरस्वभावं । ३ चतुरस्वभावं ।
५३) D १ मुग्धस्वभावं । २ सुसद्भावं । ३ चतुरस्वभावश्चेति ।
५३) E १ मुग्धस्वभावं । २ मुग्धस्वभावं । ३ मुग्धचतुरस्वभावं चेति ।
५३) F १ मुग्धस्वभावं । २ मुग्धचतुरस्वभावं । ३ चतुरस्वभावं ।
५३) G १ मुग्धस्वभाव । २ मुरख । ३ चतुर

*

५४. द्वादशविधः प्रमदोपचारः ।

१ रूपस्विनीनां रम्योपचारेण । २ भीरूणामाश्वासनेन । ३ चपलानां गांभीर्येण । ४ पंडितानां सत्येन । ५ प्रज्ञावतां(?तीनां) कलाभिः । ६ शृङ्गारिणीनां सुवेषतया । ७ विनोदशिलानां क्रीडनेन । ८ हीनसत्त्वानां कारुण्येन । ९ शठस्वभावानां शाठ्येन । १० निर्विकल्पानां सरलस्वभावेन । ११ बालानां भक्षप्रदानेन । १२ विदग्धानां कुकुमो(? कुकभो)पचारेण । इति ।

५४) A १ रूपस्विनी रम्योपचारेण । २ भीरूमाश्वानयेन । ३ चपलां गांभीर्येण । ४ पंडितानां सत्येन । ५ प्रज्ञावतां कलाभिः । ६ शृङ्गारिणां सुवेषतया । ७ विनोदशीलां क्रीडनेन । ८ हीनसत्वां कारुण्येन । ९ शठस्वभावानां शाठ्येन । १० निर्विकल्पां सुकुमारप्रयोगेन । ११ बालानां भक्षप्रदानेन । १२ धूर्तानां शाठ्येन ।

1 AB अथ द्वादशविधप्रमोदोपचारः ।; C द्वादश प्रमोदोपचारा ।; D द्वादशविधः प्रमोदोपचारः ।; E अथ द्वादशविधः प्रमोदोपचारः ।; F द्वादशविधः प्रमदानामुपचारः ।; G अथ द्वादशविधप्रमादोपचारः ।

५४) B १ रूपस्विनां रम्योपचारेण। २ भीरूणामाश्वासनेन। ३ चपलानां गांभीर्येण। ४ पंडि[ता]नां सत्येन। ५ प्रज्ञावतां कलाभिः। ६ शृङ्गारिणां सुवेषतया। ७ विनोदशीलानां क्रीडनेन। ८ हीनसत्त्वानां कारुण्येन। ९ शठस्वभावानां शाठ्येन। १० निर्विकल्पनां सुकुमारप्रयोगेन। ११ बालानां भक्ष्यप्रदानेन। १२ धूर्त्तानां शाठ्येन।

५४) C १ रूपवतीं रम्योपचारेण। २ भीरूणामविश्वासनेन। ३ चपलानां गांभीर्येण। ४ पंडितानां सखीत्वेन। ५ बालानां भक्ष्यप्रदानेन। ६ प्रज्ञावतीनां कलाभिः। ७ शृङ्गारिणीनां सुवेषेण। ८ विनोदिनीनां सुक्रीडनेन। ९ हीनसत्त्वानां कारुण्येन। १० शठस्वभावानां घातेन। ११ निर्विकल्पानां सरलस्वभावेन। १२ क्षुधितानां भोजनदानेन।

५४) D १ सुरूपिणी। २ राजोपचारेण। ३ भीसमां(?भीरूणामा)श्वासनेन। ४ चपलां गांभीर्येण। ५ पंडितां भोजन्येन। ६ धर्मार्थ्यं कारुण्येन। ७ प्रज्ञावती। ८ कलाभिः शृङ्गारिणी। ९ सुवेषतया विनोदिनी। १० क्रीडनेन। ११ विदग्धानां कुकुमोपचारेण चेति।

५४) E १ रूपवती रम्योपचारेण। २ भीरोः आश्वासनेन। ३ चपला गांभीर्येण। ४ पंडिता सत्येन। ५ बाला भक्ष्यप्रदानेन। ६ प्रज्ञावती कलाभिः। ७ शृङ्गारिणी सुवेषतया। ८ विनोदशीला क्रीडनेन। ९ दीनसत्त्वा कारुण्येन। १० शत(?ठ)स्वभावशाठ्येन। ११ निर्विकल्पा सरलस्वभावेन। १२ सुकुमारा सुकुमारोपचारेण।

५४) F १ रूपवती रम्योपचारेण। २ भीरोः आश्वासनेन। ३ चपलानां गांभीर्येण। ४ पंडितानां ना(?)सत्येन। ५ बालां भक्ष्यप्रदानेन। ६ प्रज्ञावती कलनैः। ७ शृङ्गारिणीरत्यवेषतया। ८ विनोदशीला क्रीडनेन। ९ दीनसत्त्वां क्रीडनेन। १० कारुण्येन वा। ११ शठभावा घातेन। १२ निर्विकल्पां सरलस्वभावेन। १३ सुयामां(?)आरोपचारेण।

५४) G १ रूपस्विनी रम्योपचारेण। २ भीरुमाश्वानयनेन। ३ चपलां गांभीर्येण। ४ पंडितानां सत्येन। ५ प्रज्ञावतां कलाभिः। ६ शृङ्गारिणां सुवेषतया। ७ विनोदशीलं क्रीडनेन। ८ हीनसत्वां कारुण्येन। ९ शठस्वभावानां शाठ्येन। १० निर्विकल्पां सुकुमारप्रयोगेन। ११ बालानां भक्ष्यप्रदानेन। १२ धूर्त्तानां शाठ्येन।

*

५५. पञ्चविधः परिचयः।[1]

१ प्रसिद्धिख्यापनं। २ दर्शनेनावर्जनं। ३ संभाषणमाधुर्यं। ४ वाञ्छितोपचारप्रयोजनं। ५ विकारसूचनं। इति।

५५) C १ प्रसिद्धख्यापनं। २ दर्शनेनावर्जनं। ३ संभाषणमाधुर्यं। ४ विकारशोधनं। ५ वाञ्छितोपचारप्रयोजनं।

५५) D १ सीक्षापनः। २ दर्शनावर्जनः। ३ संभाषणमाधुर्यता। ४ सविकारसुचने। ५ कथितापचारप्रयोजनं चेति।

५५) E १ प्रसिद्धख्यापनं। २ दर्शनेनावर्जनं। ३ मधुरवचः संभाषणं। ४ आतिथ्यकरणं। ५ वाञ्छितोपचारप्रयुं(?यो)जनं चेति।

५५) F १ प्रसिद्धख्यापनं। २ दर्शनेनावर्जनं। ३ मधुरवचनसंभाषणं। ४ आतिथ्यकरणं। ५ वाञ्छितोपचारपूजनं।

*

1 ABEG अथ पंच॰ ।; C पंचविधपरिचय ।.

५६. दश पुरुषाः स्त्रीणामनिष्टा भवन्ति ।[1]

१ कुरूपः । २ निर्लज्जः । ३ अभिमानी । ४ असंबद्धप्रलापी । ५ सङ्कुचितशायी । ६ निष्ठुरः । ७ कृपणः । ८ शौचहीनः । ९ मूर्खः । १० क्रोधनः । इति ।

५६) C १ कुरूपा । २ निर्लज्जा । ३ अभिमानयुक्ता । ४ अनंतभाषिण । ५ निरंकुशा । ६ निष्ठुरा । ७ कृपणा । ८ अशौचरता । ९ हीना । १० मूर्खा ।
५६) D १ कुरूपः । २ निर्लज्जः । ३ अभिमानी । ४ असंबद्धप्रलापी । ५ संकुचितशायी । ६ निष्ठुरः । ७ कृपणः । ८ शौचहीनः । ९ मूर्खश्चेति ।
५६) E १ कुरूपः । २ निर्लज्जः । ३ नित्यरोगी । ४ अभिमानी । ५ असंबद्धप्रलापी । ६ संकुचितशायी । ७ निष्ठुरः । ८ कृपणः । ९ शौचहीनः । १० क्रोधी । ११ रूपभागी । १२ कर्णदुर्बलः । १३ मूर्खश्चेति ।
५६) F १ कुरूप । २ निर्लज्ज । ३ नित्ययोगी । ४ अभिमानी । ५ असंबद्धप्रलापी । ६ संकुचितशायी । [illegible] निष्ठुर । ८ कृपण । ९ शौचहीन । १० क्रोधी । ११ विरूपभाषी । १२ कर्णदुर्बल । मूर्ख । चेति ।

*

५७. दशभिः कारणैः स्त्रियो विरज्यन्ते ।[2, 3]

१ अज्ञानता । २ अभिमानावलेपता । ३ निष्ठुरता । ४ दरिद्रता । ५ अतिप्रवासता[4] । ६ क्रूरव्यसनता । ७ भोगहीनता । ८ अतिप्रसंगता । ९ सौभाग्यहीनता । १० अनुचितता[5] । इति ।

५७) C १ अज्ञानता । २ अभिमानता । ३ प्रतापिता । ४ निष्ठुरता । ५ अतिप्रवासता । ६ अतिप्रसंगता । ७ सौभाग्यहीनता । ८ अनौचिते । ९ निर्दयत्वं । १० अप्रीतिता ।

५७) D १ अक्षमता । २ अभिमानता । ३ अवलेपता । ४ निष्ठुरता । ५ दरिद्रता । ६ सौभाग्यहीनता । ७ अतिअसंगता । ८ अतिअनौचित्यता । ९ अतिदत्ता । ११ भावुका चेति ।

५७) E १ अज्ञानता । २ अभिमानता । ३ निष्ठुरता । ४ दरिद्रिता । ५ सौभाग्यहीनता । ६ अरूपता । ७ अनौचित्यता । ८ दीनहीनता । ९ निर्द्दिनी(?) । १० वार्धुक्यता । ११ विरूपभाषिता । १२ अभावश्चेति ।

५७) F १ अज्ञानता । २ अभिमानता । ३ निष्ठुरता । ४ दरिद्रता । ५ सौभाग्यहीनता । ६ अरूपता । ७ अनौचित्यता । ८ दानहीनता । ९ निर्वीर्यता । १० फाठयानता(?) । ११ विरूपभाषिता । १२ अभावश्चेति ।

1 E द्वादशपुरुषाः स्त्रीणां अनिष्टाः । 2 C वदन्ति । 3 C दशभिस्त्रियो विरज्यंते ।; F दशभिः प्रकारैः स्त्रियो विरज्यन्ते । 4 A B G अतिप्रवसता । 5 A B G अनौचित्यता ।

५८. [1]त्रिभिः कारणैः कामिन्यः संबध्यन्ते ।

१ अर्थतः । २ कामतः । ३ सुकुमारोपचारतः । इति ।

५८) A B G १ अर्थतः । २ कामतः । ३ कुमारोपचारतः ।
५८) C १ अर्थकामतः । २ सुकुमारोपचारतः । ३ संभोगकामतः ।
५८) D १ अर्थतः कामरतः । २ सुकुमारः । ३ उपचारश्चेति ।
५८) E १ अदानतः । २ कामतः । ३ सुकुमालवचनाद्युपचारतः ।
५८) F १ अर्थदानत । २ कामत । ३ वचनाद्यप्रचारत । चेति ।

*

५९. [2]सप्तविधाः कामुकानां सुरतारम्भाः ।

१ क्रीडापात्राणि । २ भोजनादि । ३ उपचारविलेपनानि । ४ धूपनानि । ५ ताम्बूलादीनि । ६ पुष्पादिमाल्यानि । ७ हास्यादि(?नि) मर्माणि । इति ।

५९) C १ पुष्पमालादिदानं । २ वस्त्रालंकारदानं । ३ आश्वासनं । ४ सुस्वादभक्ष्यभोज्यं । ५ आलिङ्गनादिदानं । ६ अदोपकथा प्रस्ताव । ७ विनोदहास्यकरणं ।
५९) D १ क्रीडापात्राणि । २ भोजनाद्युपचारेण विलेपनानि । ३ धूपनानि । ४ तांबूलकानि । ५ पुष्पमाल्यादि । ६ हास्यादि । ७ रम्यादि । चेति
५९) E १ क्रीडापात्राणि । २ भोजनाद्युपचारविलेपनानि । ३ तांबूलदा(?लादी)नि । ४ पुष्पादिमाल्यानि । ५ वस्त्रालंकारदानानि । ६ हास्याण्णिमंरतानि(?दि मर्माणि) ।
५९) F १ क्रीडनेन । २ भाद्दनाद्युपचारेण । ३ विलेपनेन । ४ तांबूलदानेन । ५ पुष्पादिभोगेन । ६ वस्त्रालंकरणेन । ७ अर्थप्रदानेन ।
५९) G १ क्रीडापात्राणि । २ भोजनाद्युपचार । ३ विलेपनानि । ४ धूपनानि । ५ ताम्बूलादिना । ६ पुष्पादिमाल्यानि । ७ हास्यादिमर्माणि ।

*

६० [3]अष्टविधं विदग्धानां सुरतम् ।

१ आलिङ्गनं । २ चुम्बनं । ३ धावनं । ४ केशधारणं । ५ वराङ्गशोधनं । ६ सीत्कारादिमोचनं । ७ नखस्पर्शनं । ८ मृदुकुट्टनं । इति ।

1 A B G त्रिभिः कामिन्यः संबध्यंते । C त्रिभिः संबध्यंते ।; D त्रिभिः कारणैः कामिनीनां संबध्यते ।; E त्रिभिः प्रकारैः कामिन्यः संबध्यते । 2 ABG सप्तविधकामुकानां सुरतारंभः । 3 ABG अष्टप्रविधं विदग्धानां सुरतं ।, C अष्टविधं सुरतं ।, D अष्टविधं विदग्धानां सुरतावस्थानं ।

६०) AB १ आलिङ्गनं । २ चुंबनं । ३ धावनं । ४ केशाधारणं । ५रंग(?वरांग)-संवेशनं । ६ शरीरादिकूजनं । ७ नखस्पर्शनं । ८ कुट्टनं ।

६०) C १ आलिंगनं । २ चुंबनं । ३ धावनं । ४ कंचग्रधारणं । ५ वरं(?रां)गशोधनं । ६ सीत्कृतादिमोचनं । ७ नखस्पर्शनं । ८ मृदुकुट्टनं ।

६०) D १ आलिंगनं । २ चुंबनं । ३ धावनं । ४ केशोभा(?धा)रणं । ५ रागादिव्यसनं । ६ सीत्कारादिमुंचनं । ७ नखस्पर्शनं । ८ मृदुकुट्टनं । चेति ।

६०) E १ आलिंगनं । २ चुंबनं । ३ शयनं । ४ केशाधारणं । ५ वरांगशोधनं । ६ सीत्कृतादिमोचनं । ७ नखस्पर्शनं । ८ मृदुकुट्टनं ।

६०) F १ आलिङ्गनं । २ चुंबनं । ३ धावनं । ४ केशग्रहणं । ५ वराङ्गशोधनं । ६ सीत्कृतकरणं । ७ नखस्पर्शनं । ८मृदुकुट्टनं । चेति ।

६०) G १ आलिंगनं । २ चुंबनं । ३ धावनं । ४ कन्ता(?कुन्तला)धारणं । ५ रङ्ग(?वराङ्ग)संवेशनं । ६ शरीरादिकूजनं । ७ नखस्पर्शनं । ८ कुट्टनं ।

*

६१. नवविधं सुरतावसानम् ।

१ वस्त्रादिसंयमनं । २ पार्श्वे आचमनं । ३ ताम्बूलादिग्रहणं । ४ फलादिभक्षणं । ५ पानभोज्यादिविधानं । ६ क्रीडापात्रप्रवेशनं । ७ सुभाषितजल्पनं । ८ सानुरागप्रेक्षणं । ९ मनोवाञ्छितविनोदः । इति ।

६१) C १ वस्त्रादिसंयमनं । २ पार्श्वचालनं । ३ तांबूलादिग्रहणं । ४ अनुरागपोषणं । ५ वांछितविनोद ।

६१) D १ पार्श्वे आचमनं । २ तांबूलादिग्रहणं । ३ इक्षुरसादिभक्षणं । ४ पानभोज्यादिविधानं । ५ क्रीडापात्रप्रवेशनं । ६ सुभाषितजल्पनं । ७ अनुरागपोषणं । ८ संतोषवांछितं । ९ विनोदा श्चेति ।

६१) E १ वस्त्रादिसंयमनं । २ पार्श्वविवर्तनं । ३ तांबूलादिग्रहणं । ४ फलादिभक्षणं । ५ पानभोजनविधानं । ६ क्रीडापात्रप्रवेशनं । ७ सुभाषितभाषणं । ८ अनुगोषणं(?अनुराग-पोषणं) । ९ मनोवांछितविनोदाश्चेति ।

६१) F १ वस्त्रादिसंयमनं । २ पार्श्वे चाऽऽचमनं । ३ तांबूलादिभक्षणं । ४ फलादिभक्षणं । ५ पानभोजनादिविधानं । ६ क्रीडापात्रप्रवेशनं । ७ सुभाषितजननं । ८ अनुरागपोषणं । ९ मनोवाञ्छितविनोदः । चेति ।

*

६२. नव शयनगुणाः ।

१ अनम्रशायी । २ प्रसारितगात्रशायी । ३ मृदुगात्रशायी ।

1 A B G अथ नवविधं सुरतावसानं ।; D नवविधं सुरतावस्थानं ।

४ सौम्यावयवशायी। ५ अनुशयनं। ६ अभूमिशायी। ७ अशब्दशायी। ८ सन्मुखशायी। ९ वामपार्श्वशायी। इति।

६२) A B १ अनग्नशायी। २ मृदुगात्रशायी। ३ प्रसारितगात्रशायी। ४ सौम्यावयव। ५ अनुशयन। ६ नात्यर्थानम्रत(?)। ७ अशब्द। ८ सन्मुख।

६२) C १ अनग्न। २ प्रसादितगात्र। ३ सौम्यावयव। ४ सन्मुखशायी। ५ अशब्दशायी। ६ अभूमिशायी। ७ संबद्धशायी। ८ मृदुपत्रशायी। ९ नात्यर्थशायी।

६२) D १ अनग्नशायी। २ प्रसारिगात्रशायी। ३ अन्योन्यशायी। ४ सौम्यशायी। ५ असन्मुखशायी। ६ असंवद्धशायी। ७ सन्मुखशायी। चेति।

६२) E १ अनग्नशायी। २ प्रसारितगात्रशायी। ३ सौम्यावयवशायी। ४ संबंधशायी। ५ सन्मुखशायी। ६ अनुशयनाद्यर्थः। ७ अशब्दशायी। ८ वामपार्श्वशायी। ९ उक्तानि(?त्तान)शायी।

६२) F १ अनुशायी। २ संमुखशायी। ३ प्रसारितगात्रशायी। ४ सौम्यावयवशायी। ५ संबन्धशायी। ६ वामपार्श्वशायी। ७ अवि(?ध)स्तनशायी। ८ निश्चलाङ्गशायी। चेति।

६२) G १ अनग्नशायी। २ मृदुगात्रशायी। ३ प्रसारितगात्रशायी। ४ सौम्यावयव। ५ अनुशयन। ६ नात्यर्थ(?)। ७ नम्रत(?)। ८ अशब्द। ९ सन्मुख।

*

६३. दशविधः पार्थिवानां प्रमोदः।

१ ज्ञाने। २ दाने। ३ बले। ४ राज्ये। ५ विनोदे। ६ वैरिनिग्रहे। ७ शौर्ये। ८ धर्मे। ९ सुखे। १० शौचे प्रमोदो दशधा मतः॥

६३) C ज्ञाने दाने जये राये(?ज्ये) विनोदे वैरिविग्रहे। शौर्ये धर्मे च सौख्ये च प्रमोदो दशधा मत(ः)॥

६३) D ज्ञाने दाने बले राज्ये विनोदे वैरविग्रहे। सूर्ये धर्मे तपे सौख्ये प्रमोदो दशधा मतः॥

६३) E ज्ञानेन। दानेन। बलेन। सुराज्येन। विनोदेन। वैरिनिग्रहेण। शौर्येण। धर्मेण। तपसा। सौख्येण। प्रमोदो दशधा मत।

६३) F १ ज्ञाने। २ दाने। ३ बले। ४ राज्ये। ५ विनोदे। ६ वैरनिग्रहे। ७ शौर्ये। ८ धर्मे। ९ जये। १० मौप्ये(?सौख्ये)। प्रमोदो दशधा मतः।

---

1 A B अथ दशविधः।; C दशविधपार्थिवानां प्रमोद।; D दशविधः प्रमोदः। F दशविधप्रमोदविचारः। 2 B वैरनिग्रहे।

६४. चतुर्विधः प्रबोधः।[1]

१ बालसंस्कारप्रबोधः। २ शास्त्रप्रबोधः। ३ प्रज्ञाप्रबोधः। तत्त्वनिश्चयप्रबोधः। इति।

६४) B १ शास्त्रप्रबोधः। २ प्रज्ञाप्रबोधः। ३ तत्त्वनिश्चयप्रबोधः।
६४) C १ शास्त्र अबोध्य। २ प्रज्ञानप्रबोध। ३ तत्त्वप्रस्वप्रप्रबोधश्चेति।
६४) D १ बालानां संस्कारप्रबोधः। २ काव्यप्रबोधः। ३ ज्ञानप्रबोधः। ४ [2]वनिर्णयप्रबोधः।
६४) E १ बालसंयमनं। २ बालसंस्कारप्रबोधः। ३ शास्त्रप्रबोधः। ४ प्रज्ञाप्रबोधः। ५ तत्त्वनिश्चयप्रबोधः।
६४) F १ तालसंस्कारप्रबोध। २ शास्त्रप्रबोध। ३ प्रज्ञाप्रबोध। ४ वचननिश्चयप्रबोध।

*

६५. चतुर्विधा बुद्धिः।

१ स्वभावजाता। २ श्रुतोत्पादिता। ३ कर्मजाता। ४ पारिणामिकी। इति।

६५) C १ स्वभावजा। २ उत्पादिता। ३ परिणामकी। ४ कर्मजाश्चेति।
६५) D १ उत्पत्तिकी। २ वैनयिकी। ३ कार्मजा। ४ पारिणामिकी चेति।
६५) E १ स्वभावजा। २ उत्पादिका। ३ परिणासिका। ४ कर्मजा चेति।
६५) F १ स्वभावजा। २ श्रुतोत्पन्ना। ३ उत्पातिकी। ४ परिणामकी चेति।

*

६६. अष्टौ बुद्धिगुणाः।

शुश्रूषा श्रवणं चैव ग्रहणं धारणं तथा। ऊहापोहोऽर्थविज्ञानं तत्त्वज्ञानं च धीगुणाः।

६६) C १ सुश्रूषा। २ श्रवणं। ३ ग्रहणं। ४ दर्शनं। ५ धारणं। ६ अर्थविज्ञानं। ७ धर्मविज्ञानं। तत्त्वविज्ञानं।
६६) D १ स्वरूपग्रहणं। २ ग्रहणं। ३ धारणं। ४ विज्ञानं। ५ ऊहनं। ६ अपोहनं। ७ तत्त्वज्ञानं चेति।
६६) E १ शुश्रूषा। २ श्रवणं। ३ ग्रहणं। ४ धारणं। ५ ऊह। ६ अपोह। ७ विज्ञानं। ८ तत्त्वज्ञानं चेति।
६६) F १ शुश्रूषा। २ श्रवणं। ३ ग्रहणं। ४ धारणं। ५ ऊह। ६ अपोह। ७ अर्थविज्ञानं। ८ वचनज्ञानं चेति।

1 C चतुर्विध आबोध्य।; E चतुर्विधः बोधः।. 2 G तत्त्वधानं।.

६७. चतुर्विधं गान्धर्वम् ।

१ अवधानगतं(?) । २ स्वरगतं । ३ पदगतं । ४ तालगतं । इति ।

६७) C E F १ स्वरगतं । २ पदगतं । ३ तालगतं । ४ अवधानगतं ।
६७) D १ स्वरगतं । २ पदगतं । ३ अवधानं चेति ।

*

६८. त्रिविधं गीतम् ।

१ महागीतं । २ अनुगीतं । ३ उपगीतं । इति ।

६८) A B G १ महागीतं । २ अनुगीतं । ३ अपगीतं ।
६८) D १ उपांगगीतं । २ महागीतं । ३ अनुगीतं चेति ।
६८) E gives only त्रिविधं गीतं but does not mention the names.
६८) F १ महागीतं । २ उपगीतं । ३ अनुगीतं ।

*

६९. षट्त्रिंशद्गीतगुणाः[1] ।

१ सुस्वरं । २ सुतालं । ३ सुपदं । ४ शुद्धं । ५ ललितं । ६ सुबन्धं । ७ सुप्रमेयं । ८ सुरागं । ९ सुरसं । १० समं । ११ सदर्थं । १२ सुग्रहं । १३ सुश्लिष्टं । १४ क्रमस्थं । १५ सुसमयकं (? सुयमकं) । १६ सुवर्णं । १७ संपूर्णं । १८ सालंकारं । १९ सुभाषाढ्यं । २० सुगन्धस्थं (? सुगंभीरं) । २१ व्युत्पन्नं । २२ मधुरं । २३ स्फुटं । २४ सुप्रभं । २५ प्रसन्नं । २६ कंपितं । २७ समजातं । २८ रौद्रगीतं । २९ ओजःसगतं (? ओजःसंगतं) । ३० द्रुतं । ३१ सुखस्थापकं । ३२ हृतांशं । ३३ विलम्बितं । ३४ अग्राम्यं । ३५ मध्यं । ३६ सुप्रमाणं । इति ।

६९) A १ सुस्वरं । २ सुतालं । ३ सुपदं । ४ शुद्धं । ५ ललितं । ६ सुबंधं । ७ सुप्रमेयं । ८ सुरागं । ९ सुरसं । १० समं । ११ सदर्घं(?र्थं) । १२ सुग्रहं । १३ श्लिष्टं । १४ क्रमस्थं । १५ सुसमयकं(?सुयमकं) । १६ सुवर्णं । १७ सुरक्तं । १८ सुसंपूर्णं । १९ सालंकारं । २० सुभाषाद्यं । २१ सुगंधस्थं । २२ व्युत्पन्नं । २३ मधुरं ।

1 F षट्त्रिंशद् गुणाः ।

२४ स्फुटं। २५ सुप्रभं। २६ प्रसन्नं। २७ समजातं। २८ रौद्रगीतं। २९ ओजःसंगतं। ३० दर्शनस्थितं। ३१ सुखस्थापकं। ३२ हतांशं। ३३ विभ(?भा)षितं। ३४ मध्यं प्रमाणं। ३५ कवित्कंपितं।

६९) B १ सुस्वरं। २ सुतालं। ३ सुपदं। ४ शुद्धं। ५ ललितं। ६ सुबंधं। ७ सुप्रमेयं। ८ सुरागं। ९ सुरसं। १० समं। ११ सदार्थं(?सदर्थं)। १२ सुग्रहं। १३ श्लिष्टं। १४ क्रमस्थं। १५ सुमय(?यम)कं। १६ सुवर्णं। १७ सुरक्तं। १८ संपूर्णं। १९ सालंकारं। २० सुभापाढ्यं। २१ सुगंधस्थं। २२ व्युत्पन्नं। २३ मधुरं। २४ स्फुटं। २५ सुप्रभं। २६ प्रसन्नं। २७ अग्राम्यं। २८ कवित्कंपितं। २९ समजातं। ३० रौद्रगीतं। ३१ ओजःसंगतं। ३२ दर्शनस्थितं। ३३ सुखस्थापकं। ३४ हतंसं(?हतांशं)। ३५ विल(?भा)षितं। ३६ मध्यं प्रमाणं।

६९) C १ सुस्वरं। २ सुपदं। ३ शुद्धं। ४ ललितं। ५ सुसंबंधं। ६ सुजियं(?)। ७ सुरागं। ८ सुरसं। ९ समं। १० विषमं। ११ सदर्पं(?र्थं)। १२ सुग्रहं। १३ सुश्लिष्टं। १४ क्रमस्थं। १५ यमकं। १६ सुवर्णं। १७ सुरक्तं। १८ सालंकारं। १९ सुभापार्प्यं(?ढ्यं)। २० सुसंधिस्थं। २१ सु(?व्यु)त्पत्तिकं। २२ मधुरं। २३ स्फुटं। २४ प्रसन्नं। २५ अग्रण्यं(?ग्राम्यं)। २६ सुकवित्वं। २७ विचारवतां(?)। २८ सुखस्थितं। २९ विलंबितं। ३० द्रुतं। ३१ मध्यं। ३२ उत्कीयमाणं। ३३ सुयार्थं। ३४ सुकलं। ३५ सुनृत्यं।

६९) D १ सुस्वरं। २ सुतालं। ३ सुपदं। ४ शुद्धं। ५ ललितं। ६ सुमबद्धं। ७ सुरागं। ८ सुरस्यं। ९ समं। १० सदर्पं(?र्थं)। ११ सुग्रहं। १२ दृष्टं। १३ सुकाव्यं। १४ सुयमकं। १५ सुरक्तं। १६ संपूर्णं। १७ सालंकारं। १८ सुपाभस्यं(?सुभापाढ्यं) १९ सुसंधिस्थं। २० व्युत्पन्नं। २१ गंभीरं। २२ स्फुटं। २३ सुप्रभं। २४ अग्राम्यं। २५ कुंचितं। २६ क(?कं)पितं। २७ समायातं। २८ रौद्रगीतं। २९ प्रसन्नं। ३० स्थितं। ३१ सुखस्था(?सुखस्थापकं)। ३२ द्रुतं। ३३ मध्यं। ३४ विलम्बितं। ३५ गुरुत्वं। ३६ प्राञ्जलत्वं। ३७ उक्तप्रमाणं चेति।

६९) E १ सुस्वरं। २ सुतालं। ३ सुपदं। ४ शुद्धं। ५ ललितं। ६ सुसंबंधं। ७ सुप्रमेयं। ८ सुरागं। ९ सुरसं। १० सुसंगीतं। ११ सुहर्पं। १२ सुग्रहं। १३ श्लिष्टं। १४ क्रमस्थं। १५ सुवर्णं। १६ सुगमं। १७ सुरक्तं। १८ संपूर्णं। १९ सालंकारं। २० सुमापायं(?ढ्यं)। २१ सुधिप्पं(?ष्यं)। २२ मधुरं। २३ स्फुटं। २४ प्रसन्नं। २५ अग्राम्यं। २६ कुंचितं। २७ कंपितं। २८ समायातं। २९ विद्यासंगतं। ३० प्रथमस्थितं। ३१ सुखस्थं। ३२ द्रुतं। ३३ विलंबनं(?वितं)। ३४ मध्यं। ३५ उक्तं। ३६ प्रमाणं चेति।

६९) F १ स्वरगतं। २ सुस्वरं। ३ सुपदं। ४ शुद्धं। ५ ललितं। ६ सुसंबद्धं। ७ सुप्रमेयं। ८ सुरागं। ९ सुरसं। १० सुसंगी[तं]। ११ सहर्पी(?पं)। १२ सुग्रहं। १३ सुश्लिष्टं। १४ क्रमस्थं। १५ सुवर्णं। १६ सुगमं। १७ सुरक्तं। १८ संपूर्णं। १९ सालंकारं। २० सुमापायं(?ढ्यं)। २१। सुसंधिष्ठं। २२ सुयतनं(?)। २३ सुयु(?व्यु)त्पन्नं। २४ मधुरं। २५ स्फुटं। २६ प्रसन्नं। २७ संग्राम्यं। २८ विकम्पितं। २९ समूज(?जि)नं। ३० विद्यासंगतं। ३१ प्रथमस्थं। ३२ सुखस्थं। ३३ द्रुतविलंबितं। ३४ मध्यं। ३५ सुप्रमाणं। चेति।

६९) G १ सुस्वरं। २ सुतालं। ३ सुपदं ४ शुद्धं। ५ ललितं। ६ सुबंधं। ७ सुप्रमेयं। ८ सुरागं। ९ सुरसं। १० समं। ११ सदर्थं। १२ सुग्रहं। १३ श्लिष्टं। १४ क्रमस्थ। १५ सुसमयकं। १६ सुवर्णं। १७ सुरक्तं। १८ संपूर्णं। १९ सालङ्कारं। २० सुभाषाद्यं(?ढ्यं)। २१ सुगन्धस्थं। २२ व्युत्पन्नं। २३ मधुरं। २४ स्फुटं। २५ सुप्रभं। २६ प्रसन्नं। २७ [कं]पितं। २८ समजातं। २९ रौद्रगीतं। ३० ओजःसंगतं। ३१ दर्शनस्थितं। ३२ सुखस्थापकं। ३३ हतांशं। ३४ विल(?भा)पितं। ३५ मध्यं प्रमाणं।

*

७०. चतुर्विधं वाद्यम्।

१ ततं। २ विततं। ३ घनं। ४ सुषिरं। इति।

७०) C १ ततं। २ विततं। ३ घनं। ४ सुखिरं(?षिरं)।
७०) D १ ततं। २ विततं। ३ घनं। ४ शिखरं (सुषिरं) चेति।
७०) F १ स्फुटं। २ विततं। ३ घनं। ४ सुषिरं।

*

७१. [1]द्विप्रकारं नृत्यम्।

१ ताण्डवं। २ लास्यं। इति।

७१) D E १ लास्यं तांडवं च।
७१) F १ लास्यं तांडवं चेति।

*

७२. [2]षोडशविधं काव्यम्।

१ समयः। २ प्रतिभा। ३ अभ्यासः। ४ विद्या। ५ जातिः। ६ गीतिः। ७ रीतिः। ८ वृत्तिः। ९ वाच्यं। १० वाचकं। ११ छन्दः। १२ अलङ्कारः। १३ गुणः। १४ रसः। १५ भावः। १६ अभिनयः। इति।

७२) A B १ समयप्रतिभा। २ अभ्यास। ३ विद्या। ४ जाति। ५ गीति। ६ रीति। ७ वृत्ति। ८ वात्सल्य। ९ वाचक। १० छंद। ११ अलंकार। १२ गुण। १३ दोष। १४ रस। १५ भाव। १६ अभिनयं।
७२) C १ समवर्ति। २ अभ्यास। ३ विद्या। ४ जाति। ५ गीति। ६ वृत्ति। ७ वाच्यं। ८ वाचकं। ९ छंद। १० अलंकार। ११ गुण। १२ दोष। १३ रस। १४ भाव। १५ हाव। १६ अभिमानश्चेति।

1 E द्विविधं नृत्यं। 2 E षोडशविधं भाषालक्षणं।

७२) D. १ अभ्यासः । २ विद्या । ३ रीति । ४ गीति । ५ वृत्तिः । ६ काव्यं । ७ अलंकारः । ८ वाचना । ९ प्रबोधः । १० गुणः । ११ दोषः । १२ रसः । १३ भावः । १४ अभिधानं । १५ जातिः । चेति ।

७२) E १ समय । २ प्रतिभा । ३ अभ्यास । ४ जाति । ५ गीत(?ति) । ६ रीति । ७ वृत्तवाच्य । ८ वाचक । ९ छंद् । १० अलंकार । ११ गुण । १२ दोष । १३ रस । १४ भाव । १५ अभिनय । १६ विद्या ।

७२) F १ समय । २ प्रतिभा । ३ अभ्यास । ४ विद्या । ५ जाति । ६ गीति । ७ रीति । ८ वृत्ति । ९ वाच्य । १० वाचक । ११ छंदस् । १२ अलंकार । १३ गुण । १४ दोष । १५ रस । १६ अभिनयश्चेति ।

७२) G १ समय । २ प्रतिभा । ३ अभ्यास । ४ विद्या । ५ जाति । ६ गीति । ७ रीति । ८ वृत्ति । ९ वात्सल्य । १० वाचक । ११ छन्द । १२ अलंकार । १३ गुणदोष । १४ रस । १५ भाव । १६ अभिनय ।

७३. †दशविधं वक्तृत्वम् ।

१ परिभावितं । २ सत्यं । ३ मधुरं । ४ सार्थकं । ५ परिस्फुटं । ६ परिमितं । ७ मनोहरं । ८ विचित्रं । ९ प्रसन्नं । १० भावानुगतं । इति ।

† C E F give no vivarana.

७३) D १ मधुरं । २ सार्ध(?र्थ)कं । ३ परिस्फुटं । ४ सुमनोहरं । ५ परिमिन्नं(?तं) । ६ चित्रं । ७ प्रसन्नं । ८ भा[वा]नुगतं ।

७४. षड्विधं भाषालक्षणम् ।

१ संस्कृतं । २ प्राकृतं । ३ अपभ्रंशं । ४ पैशाचं । ५ मागधं । ६ सौरसेनं । इति ।

७४) A B G १ संस्कृतं । २ प्राकृतं । ३ अपभ्रंशं । ४ पैशाचिकं । ५ मागधं । ६ सौरसेनं ।

७४) C १ संस्कृतं । २ प्राकृतं । ३ अपभ्रंशं । ४ पैशाचिकं । ५ मागधं । ६ [सौर]सेनं ।

७४) D १ संस्कृतं । २ प्राकृतं । ३ अपभ्रंशं । ४ पैशाचकं । ५ मागधं । ६ सौरसेनं ।

७४) E १ संस्कृत । २ प्राकृत । ३ अपभ्रंश । ४ पैशाच । ५ मागध । ६ सूरसेन ।

1 A B सार्थकं ।

७४) F १ संस्कृतं। २ प्राकृतं। ३ अपभ्रंशं। ४ पैशाचिकं। ५ सूरसेनं। ६ मागधं चेति।

*

७५. पंञ्चविधं पाण्डित्यम्।

१ वक्तृत्वं। २ कवित्वं। ३ वादित्वं। ४ आगमिकत्वं। ५ सारस्वतप्रमाणं। इति।

७५) C १ वक्तव्यं। २ वशित्वं। ३ आगम। ४ सारस्वत। ५ प्रमाणं। चेति।
७५) D १ वक्तृत्वं। २ आगमित्वं। ३ शास्त्रसंस्कार। ४ प्रौढित। ५ सारस्वतप्रमाणं।
७५) E १ वक्तत्वं। २ वादिकत्वं। ३ कवित्वं। ४ आगमत्वं। ५ गमत्वं।
७५) F १ वक्तृत्वं। २ वादत्कं(?दित्वं)। ३ कवित्वं। ४ आगमत्वं। ५ गमत्वं चेति।

*

७६. चतुर्विंशतिविधं वादलक्षणम्।

१ उत्पत्तिः। २ समाप्तिः। ३ सत्यवादः। ४ प्रतिवादः। ५ पक्षः। ६ प्रतिपक्षः। ७ प्रमाणं। ८ प्रमेयं। ९ प्रभेदः। १० प्रश्नः। ११ प्रत्युत्तरः। १२ दूषणं। १३ अर्थान्तरं। १४ उपन्यासः। १५ अनुवादः। १६ आदेशः। १७ निर्वाहः। १८ निर्णयः। १९ विग्रहस्थानं। २० अर्थान्तरसमता। २१ सुस्वरत्वं। २२ उच्चारणं। २३ जयः। २४ पराजयः। इति।

७६) AB १ उत्पत्ति। २ समापति। ३ सत्यवादि। ४ प्रतिवादि। ५ पक्षप्रमाण। ६ प्रमेय। ७ प्रमोद्। ८ प्रश्न। ९ प्रत्युत्तर। १० दूषण। ११ भूषण। १२ अर्थांतर। १३ उपन्यास। १४ अनुवाद। १५ आदेश। १६ निर्वाह। १७ निर्णय। १८ निश्चय। १९ स्थान। २० समता। २१ निग्रह। २२ जय। २३ अजय।
७६) C १ उत्पत्ति। २ समापति। ३ सत्यवाद। ४ पक्ष। ५ प्रतिपक्ष। ६ प्रमाण। ७ प्रमेय। ८ प्रभेद्। ९ प्रसन्न। १० प्रत्युत्तर। ११ दूषण। १२ उपन्यास। १३ आदेश। १४ निर्णय। १५ निश्चय। १६ नियम। १७ अर्थ। १८ समता। १९ वर्णन। २० माधुर्य। २१ सुस्वरत्व। २२ उच्चारण। २३ जय। २४ पराजय।
७६) D १ उत्पत्तिः। २ समापति। ३ सत्यवादी। ४ पक्षि। ५ प्रतिपक्षि। ६ प्रमाण। ७ प्रमेय। ८ प्रसन्न। ९ प्रभेद्। १० उत्तरप्रत्युत्तर। ११ दूषण।

1 E पंचपांडित्यं। 2 C चतुर्विंशतिविधं नादलक्षणं।

१२ भूषण। १३ अभ्यंतर। १४ अनुवाद। १५ अभेद। १६ निर्वाह। १७ निर्णय। १८ विग्रहस्थान। १९ समता। २० जय। २१ अजयश्चेति।
७६) E १ उत्पत्तिः। २ सभापतिः। ३ सत्यवादी। ४ सभावाद। ५ पक्ष। ६ प्रतिपक्षमाण। ७ प्रमेय। ८ शास्त्रप्रमेद। ९ प्रसन्न। १० प्रत्युत्तर। ११ दूषण। १२ भूषण। १३ उपन्यास। १४ अनुवाद। १५ दशसमिता। १६ निर्णयस्थान। १७ अर्थांतर। १८ समता। १९ जय। २० पराजयश्चेति।
७६) F १ उत्पत्ति। २ समाप्ति। ३ सभावादपक्ष। ४ प्रमाण। ५ प्रमेय। ६ प्रतिपक्ष। ७ प्रमेद। ८ प्रसन्न। ९ प्रत्युत्तर। १० दूषण। ११ भूषण। १२ उपन्यास। १३ अनुवाद। १४ आदेश। १५ निर्णय। १६ निश्चय। १७ प्रतिपक्ष। १८ निश्चयस्थान। १९ अर्थान्तरसमता। २० जय। २१ पराजयश्चेति।
७६) G १ उत्पत्ति। २ सभापति। ३ सत्यवादि। ४ प्रतिवादि। ५ पक्ष। ६ प्रमाण। ७ प्रमेय। ८ प्रमोद। ९ प्रश्न। १० प्रत्युत्तर। ११ दूषण। १२ भूषण। १३ अर्थान्तर। १४ उपन्यास। १५ अनुवाद। १६ आदेश। १७ निर्वाह। १८ निर्णय। १९ निश्चय। २० स्थान। २१ समता। २२ निग्रह। २३ जय। २४ अजय।

*

७७. षड्विधं दर्शनम्।

१ माहेश्वरं। २ ब्राह्मं। ३ साङ्ख्यं। ४ बौद्धं। ५ जैनं। ६ चार्वाकं। इति।

७७) D १ माहेश्वरं। २ ब्राह्मं। ३ सांख्यं। ४ जैनं। ५ बौद्धं। ६ चार्वाकं चेति।
७७) E १ माहेश्वरं। २ ब्राह्मं। ३ सांख्यं। ४ जैन्यं। ५ बौद्धं। ६ चार्वाकं।
७७) F १ माहेशं। २ ब्राह्मं। ३ सांख्यं। ४ बौद्धं। ५ जैनं। ६ चार्वाकं चेति।
७७) G १ माहेश्वरं। २ ब्राह्मं। ३ सांख्यं। ४ बौद्धं। ५ जैनं। ६ चार्वाकं।

*

७८. अष्टविधं माहेश्वरम्।

१ नैयायिकं। २ वैशेषिकं। ३ शैवं। ४ पाशुपतं। ५ महाव्रतं। ६ कालमुखं। ७ शांभवं। ८ मुक्तिपर्यंतं। इति।

७८) ABG १ नैयायिक। २ वैशेषिक। ३ शिवधर्म। ४ शैव। ५ कलामुख। ६ पाशुपत। ७ महाव्रत। ८ मुक्तिपर्यंत।
७८) C १ पाशुपत। २ कालमुख। ३ महाव्रत। ४ शांभवपर्यंक। ५ शिवधर्म। ६ शैव।
७८) D १ न्याय। २ विशेषक। ३ शिवधर्म। ४ शौच। ५ पाशुपत। ६ कालमुख। ७ महाव्रतिकः।
७८) E १ न्याय। २ वैशेषिक। ३ शैव। ४ पाशुपत। ५ कालमुख। ६ महाव्रतिक। ७ शिवधर्म। ८ पर्यंतश्चेति।

1 A B E F G षट् दर्शनानि।; C षट्विधं दर्शनलक्षणं। 2 C इष्टविधं माहेश्वरं।

७८) F gives no Vivarana

*

७९. दशविधं ब्राह्मम्।

१ प्रमाणं। २ संस्कारः। ३ कर्मवर्तनं। ४ होमः। ५ जापः। ६ श्रुताध्ययनं। ७ गार्हस्थ्यं। ८ वानप्रस्थं। ९ यतिः। १० ब्रह्मचर्यं। इति।

७९) A १ लक्षण। २ प्रमाण। ३ संस्कार। ४ कर्म। ५ ब्रह्मचारि। ६ गृहस्थ। ७ वानप्रस्थ। ८ यति। ९ ब्रह्मपर्यंत। १० वर्तन।

७९) B १ लक्षण। २ प्रमाण। ३ संस्कार। ४ कर्म। ५ वर्तन। ६ ब्रह्मचारी। ७ गृहस्थ। ८ वानप्रस्थ। ९ यति। १० ब्रह्मपर्यंत।

७९) C १ तत्त्व। २ प्रमाण। ३ संस्कार। ४ कर्म। ५ वर्तन। ६ ब्रह्मचारी। ७ गृहस्थ। ८ वानप्रस्थ। ९ यति। १० ब्रह्मपर्यंतश्चेति।

७९) D १ प्रमाण। २ संस्कार। ३ कर्मवर्तन। ४ होम। ५ जाप। ६ श्रुताध्ययन। ७ वानप्रस्थ। ८ गृहस्थ। ९ यति। १० ब्रह्मपर्यं[त] चेति।

७९) E १ प्रमाण। २ संस्कार। ३ कर्म। ४ वर्तन। ५ ब्रह्मचारी। ६ गृहस्थ। ७ वानप्रस्थ। ८ यती।

७९) F १ लक्षण। २ प्रमाण। ३ संस्कार। ४ कर्म। ५ वर्तन। ६ ब्रह्मचारी। ७ गृहस्थ। ८ वानप्रस्थ। ९ यति। १० ब्रह्मचर्य। चेति।

७९) G १ प्रमाण। २ संस्कार। ३ कर्म। ४ वर्तन। ५ ब्रह्मचारी। ६ गृहस्थ। ७ वानप्रस्थ। ८ यति। ९ ब्रह्म। १० पर्यंत।

*

८०. चतुर्विधं साङ्ख्यम्।

१ तत्त्वं। २ प्रमाणं। ३ प्रकारः। ४ सर्वात्मं। इति।

८०) AG १ तत्त्व। २ प्रमाण। ३ प्रकार। ४ सर्वात्मपर्यंत।

८०) B १ तत्त्व। २ प्रमाण। ३ प्रकार। ४ प्रभेद। ५ प्रमोदपर्यंत। ६ सर्वात्मपर्यंत।

८०) C १ तत्त्वांग। २ सर्वात्मता। ३ प्रमाणं। ४ प्रकार।

८०) D १ तत्त्वप्रमाणं। २ सर्वात्मा। ३ प्रकार। ४ कार्य। चेति।

८०) E १ तत्त्व। २ प्रमाण। ३ सर्वात्मा। ४ प्रकारपर्यंतश्चेति।

८०) F १ तत्त्व। २ प्रमाण। ३ संस्कार। ४ सर्वात्मं। चेति।

*

८१. सप्तविधं जैनम्।

१ सर्वज्ञः। २ धर्मः। ३ तत्त्वार्थः। ४ प्रमाणं। ५ प्रतिमा। ६ प्रभेदः। ७ सिद्धिः। इति।

1 DE ब्रह्मचर्य।; G ब्रह्मचर्य लक्षण।

८१) A B D F G १ सर्वज्ञ । २ धर्म । ३ तत्त्वार्थ । ४ प्रमाण । ५ प्रतिमा । ६ प्रभेद । ७ सिद्धिपर्यंत ।

८१) C १ सर्वज्ञ । २ धर्म । ३ तत्त्वं । ४ प्रमाणं । ५ अर्थ । ६ प्रतिमा । ७ प्रतिभेद । ८ सिद्धिश्चेति ।

८१) E १ सर्वज्ञ । २ तत्त्वार्थ । ३ प्रमाण । ४ प्रतिमा । ५ प्रभेदसिद्धि । ६ पर्यंत । ७ धर्मश्चेति ।

*

८२. दशविधं बौद्धम् ।

१ सौगतं । २ पारमिता । ३ विहारः । ४ प्रमाणं । ५ सौत्रान्तिकं । ६ वैभाषिकं । ७ योगाचारं । ८ माध्यमिकं । ९ मोक्षः । १० सर्वदशारिगतं । इति ।

८२) A १ स्वसंवद्ध । २ पर्यंत । ३ पारिगत । ४ विहार । ५ प्रमाण । ६ सूत्रांतिक । ७ भैभाविक । ८ योगाचार । ९ माध्यमिक । १० मोक्षपर्यंत ।

८२) B G १ स्वसंवद्ध । २ पर्यंद । ३ पारिगत । ४ विहारः । ५ प्रमाण । ६ सूत्रांतिक । ७ भैभाविक । ८ योगाचार । ९ माध्यमिक । १० मोक्षपर्यन्त ।

८२) C १ सौगतं । २ परिषद । ३ परिमितं । ४ विहार । ५ प्रमाणं । ६ शेवातिकं । ७ धैभापिकं । ८ योगाचारं । ९ माध्यमिकं । १० मोक्षश्चेति ।

८२) D १ सुगता । २ परिमिता । ३ पारमिता । ४ विहार । ५ प्रमाण । ६ सौत्रांतिक । ७ भैराशक(?) । ८ योगोपचार । ९ मोक्षपर्यंत ।

८२) E १ सुगत । २ परिगत । ३ पारमित । ४ विहार । ५ प्रमाण । ६ सौत्रान्तिक । ७ योगांत । ८ माध्यमिक । ९ मोक्ष । १० माध्यमपर्यंतश्चेति ।

८२) E १ स्वागतं । २ सर्वदशारिगतविहार । ३ प्रमाण । ४ प्रभेद । ५ सौत्रान्तिक । ६ विभाषिका । ■ योगाचार । ८ माध्यमिका । ९ परमित । १० मोक्षपर्यन्तं ।

*

८३. †चतुर्विधं चार्वाकम् ।

१ तत्त्वं । २ प्रमाणं । ३ प्रभेदः । ४ प्रमोदः । इति ।

८३) A B G १ तत्त्वार्थ । २ प्रमाण । ३ प्रमेद । ४ प्रमोदपर्यन्त ।

८३) C १ तत्त्वं । २ प्रमाणं । ३ भेद । ४ पर्यंक ।

८३) E १ तत्त्वप्रमाणं । २ प्रभेद । ३ प्रमोद । ४ पर्यंतश्चेति ।

८३) F १ तत्त्वार्थ । २ प्रमाण । ३ प्रमेद । ४ प्रमोदपर्यन्तं । चेति ।

*

1 A B G अथ दशविधं । † D extends thus far.

८४. चतुर्विंशतिविधं विचारकत्वम् ।

१ विद्या । २ विज्ञानं । ३ विनोदः । ४ कला । ५ कवित्वं । ६ वक्तृत्वं । ७ गीतं । ८ वाद्यं । ९ नृत्यं । १० देशः । ११ कालः । १२ पात्रं । १३ प्रमेयं । १४ वादः । १५ जयः । १६ रसः । १७ भावः । १८ अभिनयः । १९ धर्मः । २० अर्थः । २१ कामः । २२ मोक्षः । २३ लोकवादः । २४ विचारः । इति ।

८४) A B G १ विद्या । २ विनोद । ३ विज्ञान । ४ कला । ५ कवित्व । ६ वक्तृत्व । ७ गीत । ८ वाद्य । ९ नृत्य । १० देश । ११ काल । १२ पात्र । १३ प्रमेय । १४ पर्याय । १५ जय । १६ रस । १७ भाव । १८ अभिनय । १९ धर्म । २० अर्थ । २१ काम । २२ मोक्ष । २३ लोकवाद । २४ विचारपर्यंत ।

८४) C १ विद्या । २ विज्ञान । ३ विनोद । ४ कला । ५ कवित्व । ६ वक्तृत्व । ७ गीत । ८ नृत्य । ९ देश । १० काल । ११ पात्र । १२ प्रमेय । १३ पर्याय । १४ संवाद । १५ अभिनय । १६ धर्म । १७ अर्थ । १८ काम । १९ मोक्ष । २० लोकपर्यंतश्चेति ।

८४) E १ विद्या । २ विज्ञान । ३ विनोद । ४ कला । ५ कवित्व । ६ वक्तृत्व । ७ गीत । ८ नृत्य । ९ वाद्य । १० देश । ११ पात्र । १२ प्रमेय । १३ रस । १४ वाद । . १५ अभिनय । १६ धर्म । १७ अर्थ । १८ काम । १९ मोक्ष । २० लोकवादपर्यंतश्चेति ।

८४) F १ विद्या । २ विज्ञान । ३ विनोद । ४ कला । ५ कवित्व । ६ वक्तृत्व । ७ गीत । ८ नृत्य । ९ वाद्य । १० देश । ११ काल । १२ पात्र । १३ प्रमेय । १४ पर्याय । १५ जय । १६ रसवाद । १७ अभिनय । १८ धर्म । १९ अर्थ । २० काम । २१ मोक्ष । २२ लोक । २३ वाद । २४ विचारपर्यंतश्चेति ।

*

८५. दशविधं गुरुत्वम् ।

१ वंशे २ ज्ञाने ३ पदे ४ सत्त्वे ५ शौर्ये ६ दाने ७ बले ८ जये । ९ संताने १० स्वगुणे चेति गुरुत्वं दशधा मतम् ॥

८५) E १ वि(वं)शे ज्ञाने पदे शौर्ये सत्वे दाने बले जये । संताने स्वगुणे चेति ।

८५) F १ वंशे । २ दाने । ३ पदे । ४ शौर्ये । ५ दैवे । ६ दाने । ७ बले । ८ जये । ८ विजये । ९ विज्ञाने । १० स्वगुणे गुरुत्वं दशधा मतम् ।

*

1 A B G अथ चतुर्विंशति° । 2 C चार्वाकं ।; F वादलक्षणं । 3 C चारुत्वं । 4 A G सगुणे ।; B सुगुणे ।

८६. पञ्चविधं चरितम् ।

१ ज्ञानचरितं । २ मानचरितं । ३ दानचरितं । ४ वीरविलासचरितं । ५ धर्मारंभचरितं । इति ।

८६) C १ विलासचरित्रं । २ धर्मचरित्रं । ३ वीरचरित्रं । ४ गुणः प्रक्षेपणं ।
८६) E १ दानं । २ मानं । ३ ज्ञानं । ४ विचार । ५ विलास ।
८६) F १ वीरचरितं । २ विलासचरितं । ३ ज्ञानचरित्रं । ४ कलाचरित्रं । ५ गुणप्रक्षामचरितं चेति ।

*

८७. पञ्चविधं पार्थिवानां पालनम् ।

१ राज्यपालनं । २ प्रजापालनं । ३ भूमिपालनं । ४ धर्मपालनं । ५ शरीरपालनं । इति ।

८७) C १ कर्मपालनं । २ धर्मपालनं । ३ प्रजापालनं । ४ भूमिपालनं । ५ शरीरपालनं ।
८७) E १ धर्मपालनं । २ राज्यपालनं । ३ भूमिपालनं । ४ शरीरपालनं । ५ प्रजापालनं ।
८७) F १ साधुपालनं । २ राज्यपालनं । ३ प्रजापालनं । ४ भूमिपालनं । ५ सत्यपालनं । चेति ।

*

८८. सप्तविधा प्रीतिः ।

१ ज्ञाने २ धर्मे ३ बले ४ कामे ५ विज्ञाने ६ पात्रसंग्रहे । ७ महार्थे भूभुजां नित्यं प्रीतिः सप्तविधा मता ॥

८८) C ज्ञाने धर्मे बले कामे विज्ञाने पात्रसंग्रहे । सर्वार्थभूत(?भु)जां चैव प्रीतिः सप्तविधा मता ॥
८८) E ज्ञाने धर्मे बले कामे विज्ञाने पात्रसंग्रहे । सर्वार्थभूभुजां नित्यं प्रीतिः सप्तविधा मता ॥
८८) F ज्ञाने धर्मे क(?ब)ले कामे विज्ञाने पात्रसंग्रहे । सर्वार्थे भूभुजानां नित्यप्रीतिः ।

*

८९. चतुर्विंशतिविधं शौर्यम् ।

१ शब्दशौर्यं । २ प्रतापशौर्यं । ३ दानशौर्यं । ४ स्थानशौर्यं । ५ उदयशौर्यं । ६ तेजशौर्यं । ७ संग्रामशौर्यं । ८ प्रतिपत्तिशौर्यं । ९ जय-

1 C E चरित्रं । 2 F पार्थिवानां प्रजापालनं । 3 F drops प्रीतिः ।

शौर्य। १० मानशौर्य। ११ ज्ञानशौर्य। १२ साहसशौर्य। १३ शरणागतशौर्य। १४ प्रमोदशौर्य। १५ उद्यमशौर्य। १६ अर्थशौर्य। १७ आचारशौर्य। १८ वलशौर्य। १९ कीर्तिशौर्य। २०, धर्मशौर्य। २१ रक्षणशौर्य। २२ गुणशौर्य। २३ परिबोधशौर्य। २४ प्रबोधशौर्य। इति।

---

८९) A B G १ शब्दशौर्य। २ प्रतापशौर्य। ३ दान। ४ स्थान। ५ उदय। ६ तेज। ७ संग्राम। ८ प्रतिपन्न। ९ जय। १० मान। ११ ज्ञान। १२ साहस। १३ शरणागत। १४ परिबोध। १५ प्रमोद। १६ उद्यम। १७ अर्थ। १८ आचार। १९ वल। २० कीर्ति। २१ लक्षण। २२ गुण। २३ ज्ञान। २४ मान।

८९) C १ नाम। २ शब्द। ३ प्रताप। ४ दान। ५ स्थान। ६ उत्तम। ७ तेज। ८ संग्राम। ९ प्रतिपत्ति। १० जयमान। ११ ज्ञान। १२ साहस। १३ शरणागत। १४ रक्षण। १५ प्रबोध। १६ प्रमोद। १७ आज्ञा। १८ उद्यम। १९ यथाचार। २० वल। २१ कीर्ति। २२ शौर्य। २३ धर्म। २४ रक्षण चेति।

८९) E १ ज्ञान। २ मान। ३ शब्द। ४ प्रताप। ५ दान। ६ उदय। ७ तेज। ८ संग्राम। ९ जय। १० साहस। ११ प्रतिपन्न। १२ शरणागत। १३ प्रबोध। १४ प्रमोद। १५ आज्ञा। १६ उद्यम। १७ अर्थ। १८ आचार। १९ वल। २० कीर्ति। २१, लक्षण। २२ शौर्य चेति।

८९) F १ तनु। २ शब्द। ३ प्रताप। ४ दान। ५ स्थान। ६ उदय। ७ तेज। ८ संग्राम। ९ प्रतिपन्न। १० जय। ११ मान। १२ ज्ञान। १३ साहस। १४ शरणागत। १५ प्रबोध। १६ प्रमोद। १७ आज्ञा। १८ उद्यम। १९ अर्थ। २० आचार। २१ वल। २२ कीर्ति। २३ लक्षग। २४ गुणशौर्य चेति।

९० दशविधं वलम्।

वाक्कायबुद्धिमन्त्रैश्च स्थानसैन्यसुहृज्जनैः। शकुनैर्दैवतैश्चेति राज्ञां दशविधं वलम्॥

---

९०) C १ वाक्वलं। २ कायवलं। ३ बुद्धिवलं। ४ मंत्रवलं। ५ स्थानवलं। ६ सैन्यवल। ७ मुहूर्त्तवलं। ८ शकुनवलं। ९ राजवलं।

९०) E १ वाक। २ काय। ३ बुद्धि। ४ मंत्र। ५ मन। ६ सुहृद। ७ शकुन। ८ सैन्य। ९ धन। १० श्रुति। ११ देवता चेति।

९०) F वक्तायुः बुद्धिमन्त्रैश्च स्थानं सैन्यं सुहृज्जनैः।
शकुनैर्दैवतैश्चेति राज्ञां दशविधं वलम्॥

---

1 E चतुर्दशविधं वलं।; F राज्ञां दशविधं वलं। 2 A B G °र्दैवतैश्चे— C I

९१. दशविधः सङ्ग्रहः ।[1]

ज्ञाने पात्रे गुणे शौर्ये पत्नीयोगे वले जये। धर्मे मित्रे श्रुते यज्ञे दशधा गुणसङ्ग्रहः ॥

९१) A ज्ञाने पात्रे गुणे शौरे पत्नीयोगे वले धर्मे जये गुणेषु श्रुतसंग्रहः ॥
९१) B ज्ञाने पात्रे गुणे सौरे पत्नीयोगे वाल धर्मे जये गुणेषु श्रुतसंग्रहः ॥
९१) C ज्ञाने पात्रे च विन्ने च पक्ष्यायोगे वले जये लक्षित।
९१) E १ ज्ञानपात्र। २ मित्रपात्र। ३ शौर्यपात्र। ४ नियोग। ५ वल। ६ प्रवीण। ७ यज्ञ। ८ धर्म। गुणसंग्रहः।
९१) F ज्ञाने पात्रे च मित्रे च पत्नीयोगे वले जये। धर्मे गुणे श्रुते चैव संग्रहः सप्तधा मतः ॥
९१) G ज्ञाने पात्रे गुणे शौरे पत्नीयोगे वले धर्मे जये गुणेषु श्रुतसंग्रहः ॥

*

९२. दशविधो जयः ।

ज्ञानासनप्रतापैश्च सङ्ग्रामैश्च सुहृज्जनैः। निद्राहारोदयैश्चेति राज्ञां दशविधो जयः ॥

९२) A G ज्ञानासनं प्रतापैर्वा संग्रामैश्च सुहृज्जनैः।
निद्राहारोदयाश्चेति राज्ञां दशविधो जयः ॥
९२) B ज्ञानासनं प्रतापैर्वा संग्रामै स्वसुहृज्जनैः।
निद्राहारै दयाश्चेति राज्ञा दशविधो जयः ॥
९२) C १ ज्ञान। २ सैन्य। ३ प्रताप। ४ काम। ५ संग्राम। ६ ऐश्वर्य। ७ सुव्रत। ८ मित्र। ९ सत्व।
९२) E १ मित्र। २ पात्र। ३ नियोग। ४ वासना। ५ सुहृद। ६ प्रताप। ७ ऐश्वर्य। ८ संग्राम। ९ वाक। १० परिश्रमी। ११ निद्रा। १२ आहार। १३ इंद्रिय।
९२) F ज्ञानाशनप्रतापैऽर्थाक् संग्रामैहासुहृज्जनैः।
निद्राहारेन्द्रिये चेति राज्ञां दशविधो जयः ॥

*

९३. पञ्चविधः परिच्छेदः ।

१ अलक्षितं। २ लक्षितं। ३ मानसिकं। ४ वाचिकं। ५ कार्मिकं। चेति।

९३) A B C D G give no Vivaraṇa
९३) E १ अलक्षित। २ लक्षित। ३ मानसिक। ४ वाचिक। ५ कर्मण।
९३) F १ अलिषित। २ लिखित। ३ मानसिक। ४ याचिक। ५ कर्मणा चेति।

*

1 F सप्तविधः संग्रहः।

९४. पञ्चविधं प्रभुत्वम्।

१ कुलप्रभुत्वं। २ ज्ञानप्रभुत्वं। ३ दानप्रभुत्वं। ४ स्थानप्रभुत्वं। ५ अभयप्रभुत्वं। इति।

९४) A G १ कुलप्रभुत्वं। २ ज्ञानप्रभुत्वं। ३ दानप्रभुत्वं। ४ स्थानप्रभुत्वं। ५ उभयप्रभुत्वं।

९४) B १ कुलप्रभुत्वं। २ दानप्रभुत्वं। ३ स्थानप्रभुत्वं। ४ उभयप्रभुत्वं।

९४) C १ कुल। २ शौर्य। ३ दान। ४ स्थापन। ५ गुण।

९४) E १ ज्ञानप्रभुत्व। २ अक्षय। ३ शौर्य। ४ स्थापना। ५ प्रदान। ६ अभय।

९४) F १ ज्ञानप्रभुत्व। २ आय(?)प्रभुत्व। ३ शौर्यप्रभुत्व। ४ स्थानप्रभुत्व। ५ दानप्रभुत्व चेति।

*

९५. सप्तविधमुत्तमत्वम्।

१ वयः। २ कुलं। ३ रूपं। ४ शीलं। ५ पदं। ६ ज्ञानं। ७ प्रयोगः। इति।

९५) A B G १ वयः। २ कुल। ३ रूप। ४ शील। ५ पद। ६ ज्ञान। ७ प्रयोगपर्यंतं चेति

९५) C gives no Vivaraṇa

९५) E १ वयः। २ कुलं। ३ शीलं। ४ रूपं। ५ पदं। ६ ज्ञानं। ७ प्रयोग।

९५) F १ वयस्। २ कुल। ३ शील। ४ रूप। ५ पद। ६ ज्ञान। ७ योग। ८ प्रयोगश्चेति।

*

९६. नवविधा शक्तिः।

१ धर्मशक्तिः। २ दानशक्तिः। ३ मन्त्रशक्तिः। ४ ज्ञानशक्तिः। ५ अर्थशक्तिः। ६ कामशक्तिः। ७ युद्धशक्तिः। ८ व्यायामशक्तिः। ९ भोजनशक्तिः। इति।

९६) C १ व्यायामशक्ति। २ ज्ञानशक्ति। ३ दानशक्ति। ४ धर्मशक्ति। ५ अर्थशक्ति। ६ युद्धशक्ति। ७ भोजनशक्ति। ८ विद्याशक्ति।

९६) E १ धर्मशक्तिः। २ मंत्रशक्तिः। ३ कामशक्तिः। ४ भोजनशक्तिः। ५ युद्ध। ६ व्यायाम। ७ देश। ८ उपार्जन। ९ वाद।

९६) F १ दानशक्ति। २ धर्मशक्ति। ३ मंत्रशक्ति। ४ ज्ञानशक्ति। ५ कामशक्ति। ६ अर्थशक्ति। ७ युद्धशक्ति। ८ भोजनशक्ति। ९ व्यायामशक्तिश्चेति।

*

९७. सप्तविधा भुक्तिः ।

१ शब्दः । २ स्पर्शः । ३ रूपं । ४ रसः । ५ गन्धः । ६ अभिमानः । ७ देशः । इति ।

९७) C gives no Vivarana
९७) E १ प्रतिमान । २ द्रव्य । ३ शब्द । ४ स्पर्श । ५ रूप । ६ रस । ७ गंध । ८ देशभुक्ति ।
९७) F १ अभिमान । २ शब्द । ३ रस । ४ रूप । ५ गंध । ६ देश । ७ स्पर्शभुक्तिश्चेति ।

*

९८. अष्टविधमभिमानलक्षणम् ।

ज्ञाने दाने बले धर्मे धर्मार्थे शत्रुमारणे । समारंभे च युद्धे च अभिमानं प्रचक्षते ॥

९८) A ज्ञाने दाने धर्मे अर्थे कामे बले शत्रुघाते । समारंभोद्धितं च ।
९८) B ज्ञाने धर्मे अर्थे कामे बले शत्रुघाते समारंभे स्थितं च ।
९८) E १ ज्ञान । २ दान । ३ बल । ४ धर्म । ५ अर्थ । ६ काम । ७ शत्रु । ८ घात । ९ समारंभ । १० उद्धतं चेति ।
९८) F १ ज्ञाने । २ दाने । ३ बले । ४ कर्मे । ५ कामे । ६ अर्थे । ७ शत्रुमारणे । ८ समारंभे चेति ।
९८) G १ ज्ञाने । २ दाने । ३ धर्मे । ४ अर्थे । ५ कामे । ६ बले । ७ शत्रुघाते । ८ समारम्भो स्थितं च ।

*

९९. चतुर्विधं वात्सल्यम् ।

देवानां सद्गुरूणां च मन्त्राणां वल्लभे जने । स्नेहेन मानसं यच्च तद्वात्सल्यं चतुर्विधम् ॥

९९) A B G देवानां सद्गुरूणां च मंत्राणां वल्लभे जने । स्नेहेन मानसं यच्च तद्वात्सल्यं चतुर्विधम् ॥
९९) C देवानां सद्गुरूणां च धियां वलयभोजने । स्नेहेन मानसं यच्च तद्वासे ।
९९) E देवानां गुरूणां च मित्राणां वर्णभोजने । स्नेहेन मनसा यच्च तद्वात्सल्यं चतुर्विधम् ॥
९९) F देवानां सद्गुरूणां मित्राणां वल्लभे जने । स्नेहेन संत[तौ] वात्सल्यं चतुर्विधम् ॥

*

1 E मुक्तिः ।; F भक्तिः ।

१००. पञ्चविधो महोत्सवः ।

१ ज्ञानमहोत्सवः । २ धर्ममहोत्सवः । ३ अर्थमहोत्सवः । ४ काममहोत्सवः । ५ मोक्षमहोत्सवः । इति ।

१००) A G १ ज्ञानमहोत्सवः । २ धर्ममहोत्सवः । ३ काममहोत्सवः ।
१००) B १ ज्ञानमहोत्सव । २ अर्थमहोत्सव । ३ काममहोत्सव ।
१००) C १ काममहोत्सव । २ द्रव्यमहोत्सव । ३ मोक्षमहोत्सव ।
१००) E १ ज्ञान । २ धर्म । ३ अर्थ । ४ काम । ५ मोक्षमहोत्सवश्चेति ।
१००) F १ धर्ममहोत्सव । २ द्रव्यमहोत्सव । ३ काममहोत्सव । ४ ज्ञानमहोत्सव । ५ मोक्षमहोत्सव ।

१०१. अष्टौ लब्धियोगः ।

१ अणिमा । २ महिमा । ३ लघिमा । ४ गरिमा । ५ ईषत्वं । ६ वशित्वं । ७ प्राप्तिः । ८ प्राकाम्यं । चेति ।

१०१) ABG give no Vivarana.
१०१) C १ अणिमा । २ महिमा । ३ लघिमा । ४ गरिमा । ५ प्राप्ति । ६ प्रकाम्यं । ७ ईशत्वं । ८ वशित्वं ।
१०१) E १ अणिमा । २ महिमा । ३ गरिमा । ४ लघिमा । ५ ईशत्व । ६ वशित्व । ७ प्राप्ति । ८ प्रकाम्यमेव ।
१०१) F १ अणिमा । २ महिमा । ३ गरिमा । ४ लघिमा । ५ ईशत्व । ६ विसत्व (?) । ७ वशित्व । ८ प्राकाम्य चेति ।

*

1 C drops the Sūtra but gives the Vivarana.

*

* *

Appendix A.

Ms. E.

Additional Sūtras:—

षट्त्रिंशत् वादित्राणि ।

१ भेरी २ मृदंग ३ पटह ४ मरुज ५ कसाल ६ ताल ७ लघुताल ८ शंख ९ तूर्य १० भुंगल ११ घर्घरी १२ दल्लरी १३ वंश १४ वीणा १५ पणव १६ दंड १७ डमरु १८ काहल १९ गर्गरी २० दुहिलि २१ भरह २२ कुंडलिका २३ ककच २४ रावण २५ कर २६ कित्तरिक २७ त्रिवल २८ भ्रामणी २९ हुंडक ३० तंलं ३१ करड ३२ नागक ३३ ददकुंड ३४ नयसरली ३५ वीणात्रयं ३६ लघुमली मुख वाजिश अपदन विनोदी ॥ १०० ॥

*

पंचविंशति गुणोमात्यः ।

जनपदोभिजातः स्ववह । कृत स्वल्प । चक्षुपन् । प्राज्ञ धारयिष्णु । दक्ष । वाग्मी । प्रगल्भ । प्रतिपत्तिमान् । सोत्साह । प्रभायुक्ता । क्लेशसह । शुचि । मित्रदृढभक्ति । शीलवान् । बली । आरोग्यवान् । शक्तियुक्त । स्तंभ । चापलहर संयोगो वैरिणः । अकर्त्ता ॥ १०१ ॥

*

राज्ञां अष्टादशतीर्थानि ।

मंत्री । पुरोहित । सेनापति । युवराज । दौवारिक । अंतर्यशिक । प्रशास । महात् । संनिधात् । प्रदेष्टृ । नायक । पौरव्यवहारिक । परिवादाध्यक्ष । दंड । दुर्गतिपाल । आटविका ॥ २ ॥

*

अष्टौ स्वर्गगुणाः ।

विषघात । रसायण । मंगलार्थ । विनीत । प्रदक्षणावर्त्त । गुरु अदग्ध ॥ ३ ॥

अष्ट गुणं पयः ।

सुगंधि सुव्यक्तरसं । तृष्णाघ्नं । शीतलं । लघु । हृद्यं । स्वच्छं ॥ ४ ॥

*

Explanation in Old Gujarati :-

श्रीगुरुभ्यो नमः । अथातो रत्नकोशं व्याख्यास्यामः । वस्तुविज्ञानं । सर्वशास्त्रमयं रम्यं । सर्वज्ञानप्रकाशकं । स्वल्पग्रंथं सुबोधार्थं । रत्नकोशं समभ्यसेत् । १ । तत्र शतेन सुधाणां । कर्तव्यः संग्रहो यथा ॥ २ ॥ अथ इति मंगलार्थे । ग्रंथनुकर्ता श्रीवेदव्यास कहि छिं । ये मि चौदविद्या सर्व प्रगट कीधी । हवि रत्नकोश पह विनामिं ग्रंथ कहिछि । ते ग्रंथ केहवुछि । सर्ववस्तुनु ज्ञान येह थिकी जणाइ । वलीकेहवुछि ते ग्रंथ । सर्व शास्त्र मयछि । मनोरम छि । रत्ननु भंडार छि । सर्वज्ञाननुं प्रकाश थाइ । स्वल्पयोडुं ग्रंथ अनिरोधये प्रतिबोधते घणु । पहवुंये रत्नकोश ते निरूपी इछि । ते ग्रंथमांहिंसु एक १०० सूत्र करी संग्रह करी इछिं । ते सूत्रकी हां । ते कही इछि । तत्रादौ त्रिभुवनानि । ते सूत्रमांहिं प्रथम भण्य भुवन कही इछि ॥ त्रिविधं लोकसंस्थानं......।

*

Appendix B.

Similar topics from some other works:-

राजवंशाः ।

Kumārapāla Prabandha gives the following list of the राजवंशs. They are as follows—तत्र वंशाः षट्त्रिंशत्, यथा इक्ष्वाकुवंश १, सूर्यवंश २, सोम ३, यादव ४, परमार ५, चाहमान ६, चौलुक्य ७, छिन्दक ८, सिलार ९, सैन्धव १०, चापोत्कट ११, प्रतीहार १२, चन्दुक १३, राट १४, कूर्पट १५ शक १६, करट १७, पाल १८, करंक १९, वाउल २०, चन्देल २१, उहिल्ल पुत्र २२, पौलिक २३, मौरिक २४, मंकुयाणक २५, धान्यपालक २६, राजपालक २७, अम(न)ङ्ग २८, निकुम्भ २९, दधिलक्ष ३०, तुरुदलियक ३१, हूण ३२, हरियड ३३, नट ३४, माष ३५, पोयर ३६,-नामानः ।

[-जिनमण्डनकृतकुमारपालप्रबन्धः, पृ. १]

*

आयुधानि ।

चक्र । धनु । वज्र । खड्ग । क्षुरिका । तोमर । कुन्त । त्रिशूल । शक्ति । परशु । मक्षिका । भल्लि । भिण्डिपाल । मुष्टि । लुण्ठि । शङ्कु । पाश । पट्टिश । यष्टि । कणय । कम्पन । हल । मुशल । गुलिका । कर्त्तरी । करपत्र । तरवार । कुद्दाल । कुस्फोट । कोफणि । डाह । डब्बूस । मुद्गर । गदा । घन । करवालिका ।

[श्रीद्व्याश्रयमहाकाव्य (पृ. २२) अनु. म. न. द्विवेदी]

(see p. 17 of the text.)

*

कलाः ।

गीतम्, वाद्यम्, नृत्यम्, आलेख्यम्, विशेषकच्छेद्यम्, तण्डुलकुसुमबलिविकाराः, पुष्पास्तरणम्, दशनवसनाङ्गरागः, मणिभूमिकाकर्म, शयनरचनम्, उदकवाद्यम्, उदकाघातः, चित्राश्च योगाः, माल्यग्रथनविकल्पाः, शेखरकापीडयोजनम्, नेपथ्यप्रयोगाः, कर्णपत्रभङ्गाः, गन्धयुक्तिः, भूषणयोजनम्, ऐन्द्रजालाः, कौचुमाराश्च योगाः, हस्तलाघवम्, विचित्रशाकयूषभक्ष्यविकारक्रिया, पानकरसरागासवयोजनं, सूचीवानकर्माणि, सूत्रक्रीडा, वीणाडमरुकवाद्यानि, प्रहेलिका, प्रतिमाला, दुर्वाचकयोगाः, पुस्तकवाचनम्, नाटकाख्यायिकादर्शनम्, काव्यसमस्यापूरणम्, पट्टिकावेत्रवानविकल्पाः, तक्षकर्माणि, तक्षणम्, वास्तुविद्या, रूप्यरत्नपरीक्षा, धातुवादः मणिरागाकरज्ञानम्, वृक्षायुर्वेदयोगाः, मेषकुक्कुटलावकयुद्धविधिः, शुकसारिकाप्रलापनम्, उत्सादने संवाहने केशमर्दने कौशलम्, अक्षरमुष्टिकाकथनम्, म्लेच्छितविकल्पाः, देशभाषाविज्ञानम्, पुष्पशकटिका, निमित्तज्ञानम्, यन्त्रमातृका, धारणमातृका संपाठ्यम्, मानसी काव्यक्रिया, अभिधानकोषः, छन्दोज्ञानम्, क्रियाकल्पः, छलितकयोगाः, वस्त्रगोपनानि, द्यूतविशेषाः, आकर्षक्रीडा, बालक्रीडनकानि, वैनयिकीनां, वैजयिकीनां, व्यायामिकीनां च विद्यानां ज्ञानम् (इति चतुःषष्टिरङ्गविद्याः कामसूत्रस्यावयविन्यः) ॥

कामसूत्रे १ साधारणेऽधिकरणे, ३ विद्यासमुद्देशप्रकरणम् । पृ. ३२-३३ (C. S. S.)

(see p. 21)

जयमंगला on सूत्र १५ अ. ३ अधिकरण १.

शास्त्रान्तरे चतुःषष्टिर्मूलकला उक्ताः। तत्र कर्माश्रया चतुर्विंशतिः। तद्यथा-गीतं, नृत्यं, वाद्यं, कौशललिपिज्ञानं, वचनं, चोद्यं, चित्रविधिः, पुस्तकर्म, पत्रच्छेद्यम्, माल्यविधिः, गन्धयुक्त्यास्वाद्यविधानं, रत्नपरीक्षा, सीवनं, रङ्गपरिज्ञानम्, उपकरणक्रिया, मानविधिः, आजीवज्ञानम्, तिर्यग्योनिचिकित्सितम्, मायाकृतपाषण्डसमयज्ञानं, क्रीडाकौशलं, लोकज्ञानं, वैचक्षण्यं, संवाहनं, शरीरसंस्कारः विशेषकौशलं चेति।

द्यूताश्रया विंशतिः। तत्र निर्जीवाः पञ्चदश। तद्यथा-

आयुःप्राप्ति, अक्षविधानं, रूपसंख्या, क्रियामार्गणम्, बीजग्रहणम्, नयज्ञानं, करणादानं चित्राचित्रविधिः, गूढराशिः, तुल्याभिहारः, क्षिप्रग्रहणम्, अनुप्राप्तिलेखस्मृतिः, अग्निक्रमः, छलव्यामोहनम्, ग्रहदानं चेति।

सजीवाः पञ्च। तद्यथा-

उपस्थानविधिः, युद्धं, रुतं, गतं, नृत्तं चेति।

शयनोपचारिकाः षोडश। तद्यथा-

पुरुषस्य भावग्रहणं स्वरागप्रकाशनम्, प्रत्यङ्गदानं, नखदन्तयोर्विचारौ, नीवीस्रंसनं, गुह्यस्य संस्पर्शनानुलोम्यम्, परमार्थकौशलं, हर्षणं, समानार्थता कृतार्थता, असंप्रोत्साहनम्, मृदुक्रोधप्रवर्तनं, सम्यक् क्रोधनिवर्तनं, क्रुद्धप्रसादनं, सुप्तपरित्यागः, चरमस्वापविधिः, गुह्यगूहनमिति।

चतस्र उत्तरकलाः- साश्रुपातं रमणाय शापदानम्, स्वशपथक्रिया, प्रस्थितानुगमनम्, पुनः पुनर्निरीक्षणं च। इति चतुःषष्टिर्मूलकलाः।

जयमंगला टीका

कामसूत्रे १ साधारणेऽधिकरणे ३ अध्याये, विद्यासमुद्देशप्रकरणम्। पृ. ३१ (C.S.S.)

*

भावाः।

रतिः। हासः। शोकः। क्रोधः। उत्साहः। भयम्। जुगुप्सा। विस्मयः। निर्वेदः। ग्लानिः। शङ्का। असूया। मदः। श्रमः। आलस्यम्। दैन्यम्। चिन्ता। मोहः। स्मृतिः। धृतिः। व्रीडा। चपलता। हर्षः। आवेगः। जडता। गर्वः। विषादः। औत्सुक्यम्। निद्रा। अपस्मारः। सुप्तम्। विबोधः। अमर्षः। अवहित्थम्। उग्रता। मतिः। व्याधिः। उन्मादः। मरणम्। त्रासः। वितर्कः। स्वेदः। स्तम्भः। कम्पः। अस्रम्। वैवर्ण्यम्। रोमाञ्चः। स्वरसादः। प्रलयः।

(ना. शा. अ. ७. काशी. सं. सिरीज़)

रति। हास। शोक। क्रोध। विस्मय। उत्साह। भय। जुगुप्सा। निर्वेद। ग्लानि। शङ्का। असूया। मद। श्रम। आलस्य। दैन्य। चिन्ता। मोह। स्मृति। धृति। व्रीडा।

व्रीडा । चपलता । हर्ष । आवेग । जडता । गर्व । विषाद । औत्सुक्य । निद्रा । अपस्मार । सुप्त । (बोध)विबोध । अमर्ष । अवहित्थ । उग्रता । मति । व्याधि । उन्माद । मरण । त्रास । संदेह । रोमाञ्च । स्वरभेद । अश्रु । वैवर्ण्य ।

(see p. 38)

(विष्णुधर्मोत्तर, तृतीयखण्ड अ. ३०)

*

अभिनयाः ।

आङ्गिको वाचिकश्चैव आहार्यः सात्त्विकस्तथा ।
ज्ञेयस्त्वभिनयो विप्राश्चतुर्धा परिकल्पितः ॥

(नाट्यशास्त्र-अ. ८. श्लो. ९)

(see p. 39)

*

*　　*

अकारादिशब्दानुक्रमणिका ।



राजस्थान राज्य द्वारा प्रतिष्ठित

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

सम्मान्य संचालक मुनि जिनविजयजी द्वारा संपादित

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान सरकार द्वारा पुरातत्त्वाचार्य मुनि श्री जिनविजयजी के संचालन में पहले जयपुर अवस्थित राजस्थान पुरातत्त्व मन्दिर को "राजस्थान ओरिएन्टल रीसर्च इंस्टीट्यूट" अर्थात् 'राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान' के नूतन नाम से, एक पूर्ण शोध-संस्थान के रूप में जनवरी, सन् १९५६ ई० से पुनः संगठित किया गया है और अब इसका भव्य भवन जोधपुर में बनाया जाकर इसकी प्रतिष्ठा वहां की गई है। राजस्थान बहुत प्राचीन कालसे ही भारतीय संस्कृति का एक प्रधान केन्द्र रहा है, जिसके परिणाम-स्वरूप यहां संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, राजस्थानी गुजराती और हिन्दी आदि भाषाओं में अपार साहित्य की रचना हुई है। खेद है कि हमारी उपेक्षा के कारण बहुत सा साहित्य नष्ट हो गया है। विदेशों में भी हमारा बहुत साहित्य जाता रहा है और वहां के विद्वानों ने उसका विशेष अध्ययन और प्रकाशन भी किया है। कलकत्ता, पूना, बम्बई, बड़ौदा, पाटण, अहमदाबाद, काशी आदि के ग्रन्थ भण्डारों में भी राजस्थान का साहित्य प्रचुर मात्रा में सुरक्षित है और एशियाटिक सोसाइटी, कलकत्ता; भण्डारकर ओरिएन्टल रीसर्च इंस्टीट्यूट, पूना; भारतीय विद्या भवन, बम्बई; गायकवाड़ ओरिएन्टल इन्स्टीट्यूट, बड़ौदा; गुजरात विद्या सभा, अहमदाबाद; नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, आदि सुप्रसिद्ध शोध-संस्थाओं द्वारा राजस्थान के साहित्य को आंशिक रूप में प्रकाशित भी किया गया है।

राजस्थान में आज भी अपरिमित मात्रा में साहित्य-सामग्री, लिखित और मौखिक दोनों रूपों में, प्राप्त होती है। इसके संग्रह, संरक्षण, सम्पादन और प्रकाशन का प्रबन्ध करना हमारा प्रधान कर्तव्य है। राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान में अब तक कोई १४–१५ हजार से ऊपर प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थों का संग्रह किया जा चुका है। बीकानेर, जोधपुर, उदयपुर, कोटा, अलवर, जयपुर आदि के व्यक्तिगत ग्रन्थ-भण्डारों में भी हजारों हस्तलिखित ग्रन्थ प्राप्त होते हैं। इन ग्रन्थों में से अधिकांश अप्रकाशित हैं। विद्वत् जगत में राजस्थान के महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों के प्रकाशन की बड़ी उत्सुकता से प्रतीक्षा की जा रही है।

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान द्वारा "राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला" का प्रकाशन, राजस्थान में सग्रहीत, सुरक्षित एवं प्राप्त संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, राजस्थानी, हिन्दी आदि भाषा निबद्ध ग्रन्थ-रत्नों को, साहित्य-संसार के सामने सुसम्पादित रूप में, प्रस्तुत करने के उद्देश्य से किया जाता है। प्रस्तुत ग्रन्थमाला के अन्तर्गत अब तक ४०–४५ ग्रन्थ प्रकाशित किये जा चुके हैं और अनेक ग्रन्थ विभिन्न प्रेसों में छप रहे हैं जिनका प्रकाशन यथा समय होता रहता है।

इस ग्रन्थमाला में इतःपूर्व प्रकाशित कुछ संस्कृत ग्रन्थ

१. **प्रमाण मंजरी**—तार्किक चूडामणि सर्वदेवाचार्य विरचित वैशेषिक दर्शन ग्रन्थ, अनेक व्याख्याओं से समलंकृत; संपादक-श्री पट्टाभिराम शास्त्री, भू. पू. प्रिंसिपल महाराजा संस्कृत कालेज, जयपुर।

२. **यन्त्रराजरचना**—महाराजा सवाई जयसिंहकारिता। वेधशालाओं में प्रयुक्त यन्त्रनिर्माण विषयक प्रामाणिक ग्रन्थ। संपादक-स्व० पंडित श्री केदारनाथजी, भू. पू. अध्यक्ष वेधशाला, जयपुर।

३. **महर्षिकुलवैभवम्**—विद्यावाचस्पति स्वर्गीय मधुसूदन ओझा, जयपुर द्वारा रचित। ऋषितत्त्व-निरूपणात्मक ब्रह्मविज्ञान विषयक अनुपम ग्रन्थ। संपादक-महामहोपाध्याय पं. श्रीगिरिधर शर्मा चतुर्वेदी, जयपुर।

४. **तर्कसंग्रह**—पण्डित अन्नंभट्ट विरचित न्यायशास्त्र का प्रसिद्ध ग्रंथ; पं. क्षमाकल्याण रचित फक्किका से समन्वित। संपादक-डॉ. जितेन्द्र जैटली एम्. ए., पी-एच्. डी. प्राध्यापक, रामानन्द आर्ट्स् कॉलेज, अहमदाबाद।

५. **कारकसंबंधोद्योत**—पं. रभसनन्दी रचित। संस्कृत व्याकरण का कारकविषयक अपूर्व सुबोध ग्रंथ। संपादक-डॉ. हरिप्रसाद शास्त्री एम्. ए. पी-एच्. डी. उपाध्यक्ष भो. जे. अध्ययन संशोधन विद्याभवन, गुजरात विद्यासभा, अहमदाबाद।

६. **वृत्तिदीपिका**—पं. मौनिकृष्ण भट्ट विरचित। व्याकरण, न्याय व साहित्य विषयक वृत्तिविचारका विशिष्ट ग्रन्थ। संपादक पं. श्री पुरुषोत्तम शर्मा चतुर्वेदी, साहित्याचार्य।

७. **शब्दरत्नप्रदीप**—अज्ञात कर्तृक। संस्कृत भाषा का संक्षिप्त शब्दकोष। संपादक डॉ॰ श्री हरिप्रसाद शास्त्री एम्. ए. पी-एच्. डी. (बम्बई)। उपाध्यक्ष-भो. जे. अध्ययन-संशोधन विद्याभवन, गुजरात विद्या सभा, अहमदाबाद।

८. **कृष्णगीति**—कवि सोमनाथ विरचित। गीतगोविंद के ढंग का एक सुन्दर संस्कृत गीतिकाव्य। संपादक डॉ. प्रियबाला शाह एम्. ए. पी-एच्. डी. (बम्बई) डी. लिट् (पेरिस); प्राध्यापिका रामानन्द आर्ट्स् कॉलेज, अहमदाबाद।

९. **नृत्तसंग्रह**—अज्ञातकर्तृक। नृत्यनाट्य विषयक कलाभ्यासियों के लिए अपूर्व रोचक ग्रंथ। संपादक-डॉ. प्रियबाला शाह एम्. ए., पी-एच्. डी. (बम्बई) डी. लिट् (पेरिस)।

१०. **चक्रपाणिविजयमहाकाव्यम्**—भट्ट लक्ष्मीधर विरचित। उषा और अनिरुद्ध विषयक प्रेमकथा सम्बन्धी अति मनोहर महाकाव्य। संपादक-पं. केशवराम काशीराम शास्त्री, क्यूरेटर एवं गुजराती भाषा और साहित्य के प्राध्यापक, भो. जे. अध्ययन-संशोधन विद्या भवन, गुजरात विद्यासभा, अहमदाबाद।

११. **राजविनोदमहाकाव्यम्**—महाकवि उदयराज विरचित। मध्यकालीन भारतीय इतिहास सम्बन्धी एक महत्त्वपूर्ण काव्य। अहमदाबाद के सुल्तान महमूद बेगडा के जीवनचरित्र का वर्णन। संपादक श्री गोपालनारायण बहुरा, एम्. ए., अवर शोध सहायक, राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मंदिर, जयपुर।

१२. **शृंगारहारावली**—श्रीहर्ष कवि विरचित शृंगाररस का अपूर्व गीतिकाव्य। संपादक-डॉ. प्रियबाला शाह एम्. ए, पी-एच्. डी. (बम्बई), डी. लिट् (पेरिस)।

१३. **नृत्यरत्नकोश (प्रथम भाग)**—मेवाड़ के सुप्रसिद्ध महाराणा कुम्भकर्णदेव (कुंभा) प्रणीत नृत्त-विषयक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ। सम्पादक-प्रो. रसिकलाल छोटालाल परीख, अध्यक्ष-भो. जे. स्वाध्याय-संशोधन विद्या मन्दिर, गुजरात विद्यासभा, अहमदाबाद तथा डॉ॰ प्रियबाला शाह, एम्. ए., पी-एच्. डी., डी. लिट्, प्राध्यापिका-रामानन्द आर्ट्स कॉलेज, अहमदाबाद।

१४. **उक्तिरत्नाकर**—साधुसुन्दर-गणी-विरचित। उक्तिव्यक्तिविषयक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ। संस्कृत और देशीय भाषा शब्दों के तुलनात्मक अध्ययन में अनुपयोगी। अज्ञात कर्तृक दशीचक और औक्तिकपदसंग्रह समन्वित। सम्पादक-पुरातत्त्वाचार्य श्री जिनविजय मुनि, सम्मान्य संचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर।

१५. **दुर्गापुष्पाञ्जलि**—स्व॰ महामहोपाध्याय पं॰ दुर्गाप्रसादद्विवेदीकृत। भक्ति-विषयक सुन्दर मुक्तक काव्य। सम्पादक-पं॰ गङ्गाधर द्विवेदी, साहित्याचार्य, व्याख्याता-महाराजा-संस्कृत-कॉलेज, जयपुर।

१६. **कर्णकुतूहल**—महाकवि भोलानाथ विरचित। सरस सुन्दर नाटक। सम्पादक-पं॰ श्री गोपाल-नारायण बहुरा, एम्. ए., अवर शोध सहायक, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर। इसी ग्रंथकार की श्रीमद्भागवत में वर्णित भगवान् श्रीकृष्ण की लीलाओं के आधार पर निर्मित पद्यमयी रचना 'श्रीकृष्ण-लीलामृत' सहित।

१७. **ईश्वरविलास महाकाव्य**—कविकलानिधि देवर्षि श्रीकृष्ण भट्ट विरचित। जयपुर के महाराजा ईश्वरसिंह की आज्ञा से निर्मित ऐतिहासिक महाकाव्य। सम्पादकनिर्मित 'विलासिनी' संस्कृत टीका सहित। सम्पादक-कविशिरोमणि देवर्षि भट्ट श्री मथुरानाथ शास्त्री, साहित्याचार्य, जयपुर।

१८. रसदीर्घिका—कवि विद्याराम प्रणीत। रस अलंकार आदि विवेचनपरक सुबोध रचना। सम्पादक-गोपाल नारायण बहुरा, प्रवर शोध सहायक, राजस्थान प्रा. वि. प्रतिष्ठान, जोधपुर।

२. राजस्थानी साहित्य

१९. कान्हड़दे प्रबन्ध—महाकवि पद्मनाभ रचित। स्वधर्म और स्वदेश रक्षा निमित्त जालोर के चौहाण-कुलशिरोमणि महावीर कान्हदेव (कान्हड़दे) के बलिदान की गौरव-गाथा। राजस्थान के प्राचीन इतिहास सम्बन्धी साहित्य की महत्वपूर्ण प्रबन्ध रचना। सम्पादक-प्रो. के. बी. व्यास, एम्. ए., प्राध्यापक-एल्फिन्स्टन कॉलेज, बम्बई।

२०. क्यामखाँ रासा—फतहपुर (शेखावाटी) के नवाब अलफखाँ (कविवर जान) रचित ऐतिहासिक काव्य। सम्पादक-डॉ. दशरथ शर्मा और श्री अगरचन्द नाहटा।

२१. लावारासा अपर नाम कूर्मवंशयशप्रकास—चारण कविया गोपालदास विरचित ऐतिहासिक राजस्थानी काव्य। सम्पादक-राजस्थानी के सुपरिचित विद्वान् श्री महतावचन्द खारैड़।

२२. बाँकीदास री ख्यात—जोधपुर के कविवर बाँकीदास रचित राजस्थानी साहित्य की सुप्रसिद्ध रचना। सम्पादक-श्री नरोत्तमदास स्वामी, एम्. ए., वाइस प्रिंसिपल एवं प्राध्यापक-महाराणा भूपाल कॉलेज, उदयपुर।

२३. राजस्थानी साहित्यसंग्रह—'खींची गंगेव नींबावतरो दो-पहरो' 'रामदास वैरावतरी आखडी री वात' तथा 'राजान राउतरो वात-वणाव' नामक तीन राजस्थानी वार्ताओं का संग्रह। सम्पादक-श्री नरोत्तमदास स्वामी, एम्. ए., प्राध्यापक, महाराणा भूपाल कॉलेज, उदयपुर।

२४. कवीन्द्रकल्पलता—मुगल सम्राट् शाहजहाँ के समकालीक काशी के सुप्रसिद्ध विद्वान् कवीन्द्राचार्य सरस्वती विरचित मनोहर काव्य ग्रन्थ। सम्पादिका-श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारी चूँडावत, जयपुर।

२५. जुगलविलास—कुचलगढ़ (राजस्थान) के भक्त महाराजा पृथ्वीसिंह अपरनाम कवि पीथल विनिर्मित ब्रजभाषा में भगवान् कृष्ण और राधा की ललित-लीला-वर्णन-परक सुन्दर रचना। सम्पादिका-श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारी चूँडावत, जयपुर।

प्रेसों में छप रहे संस्कृत ग्रंथ

१. शकुनप्रदीप—लावण्य शर्मा रचित शकुनशास्त्र का अत्युपयोगी महत्वपूर्ण ग्रंथ।
२. लघुस्तव—लघ्वाचार्य प्रणीत, सोमतिलक सूरि कृत टीका सहित।
३. करुणामृतप्रपा—ठक्कुर सोमेश्वर- विनिर्मित, संस्कृत सुभाषितों का सुन्दर संग्रह।
४. बालशिक्षाव्याकरण—ठकुर संग्रामसिंह विरचित, संस्कृत व्याकरण का बालोपयोगी सुबोध ग्रन्थ।
५. पदार्थरत्नमंजूषा—पं. कृष्ण मिश्र रचित, न्याय शास्त्र का महत्वपूर्ण प्राचीन ग्रन्थ।
६. काव्यप्रकाशसंकेत—अलङ्कार शास्त्र का सुप्रसिद्ध मूर्धन्य ग्रन्थ, सोमेश्वर भट्ट कृत-'संकेत' सहित।
७. वसन्तविलास फागु—अज्ञान कर्तृक-फागु काव्य रूप में सरस सुन्दर रचना।
८. नन्दोपाख्यान—अज्ञात कर्तृक-उपाख्यान रूप में सरल संस्कृत रचना।
९. चान्द्रव्याकरण—आचार्य चन्द्रगोमि विरचित-संस्कृतका प्राचीन व्याकरण ग्रन्थ।
१०. वृत्तजाति समुच्चय—कवि विरहाङ्क विनिर्मित छन्दःशास्त्र का महत्वपूर्ण ग्रन्थ।
११. कवि दर्पण—अज्ञातकर्तृक-छन्दोरचना विवेचनपरक प्राचीन ग्रंथ।
१२. स्वयम्भूच्छन्द—कवि स्वयम्भू विनिर्मित अपभ्रंश छन्दःशास्त्र का प्राचीन ग्रंथ।
१३. प्राकृतानन्द—रघुनाथ कवि रचित, प्राकृत भाषा का अत्युपयोगी व्याकरण ग्रंथ।
१४. कविकौस्तुभ—पं॰ रघुनाथ विरचित, काव्य शास्त्र विवेचनपरक ग्रंथ।
१५. दशकण्ठवधम्—महामहोपाध्याय स्व॰ पं. दुर्गाप्रसाद द्विवेदी रचित रामचरित्र विषयक चम्पू काव्य।
१६. पद्यमुक्तावली—कविकलानिधि श्रीकृष्णभट्ट विरचित स्फुटित मुक्तक काव्य।